



निर्मान IAS

स्थानीय आदर्शता

QIP - ADVANCE CONCEPT

Unit-1

By:

Sunil 'Abhivyakti' Sir

ENQUIRY OFFICE

631 Ground Floor, Main Road, Mukherjee Nagar, Delhi-09

HEAD OFFICE/CLASS ROOM

996 1st Floor, Mukherjee Nagar (Near Gandhi Vihar Bandh) Delhi-09

PH.: 011-47058219, 9540676789, 9717767797

Website : www.nirmanias.com | E-mail : nirmanias07@gmail.com

You can also visit our digital platform-



यूनिट-1**नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंधः**

- मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व,
- इसके निर्धारक और परिणाम;
- नीतिशास्त्र के आयाम;
- निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र।

मानवीय मूल्य

- महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा;
- मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका।

(1)

Q. मूल्यों व नेतिकृता से आप क्या समझते हैं? व्यावसायिक सक्षमता के साथ नेतिकृत भी होना जिस प्रकार महत्वपूर्ण है?

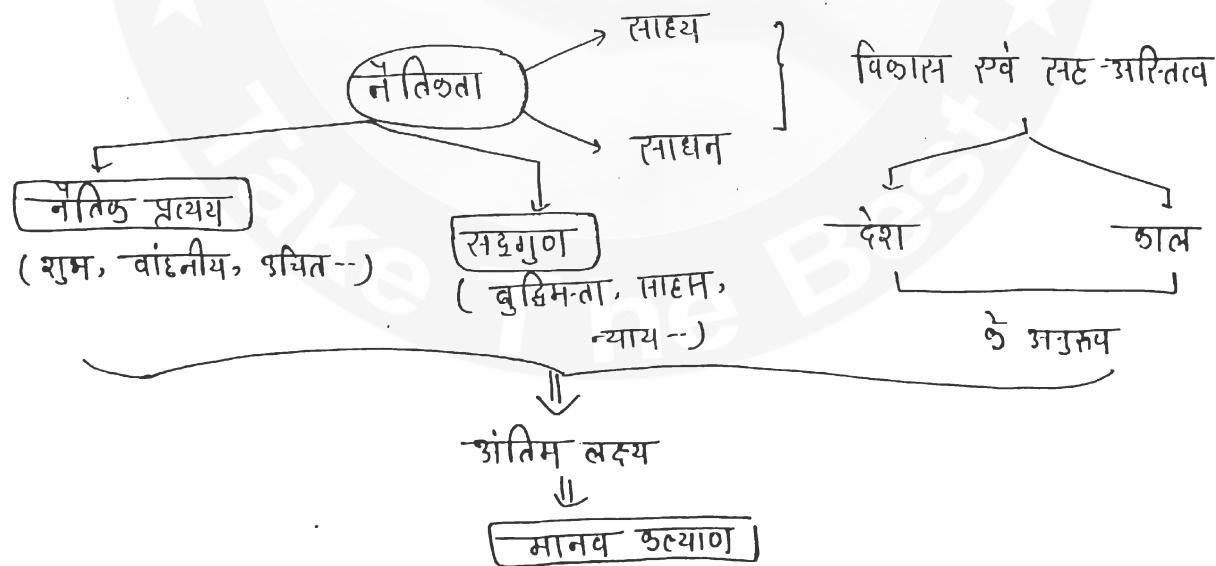
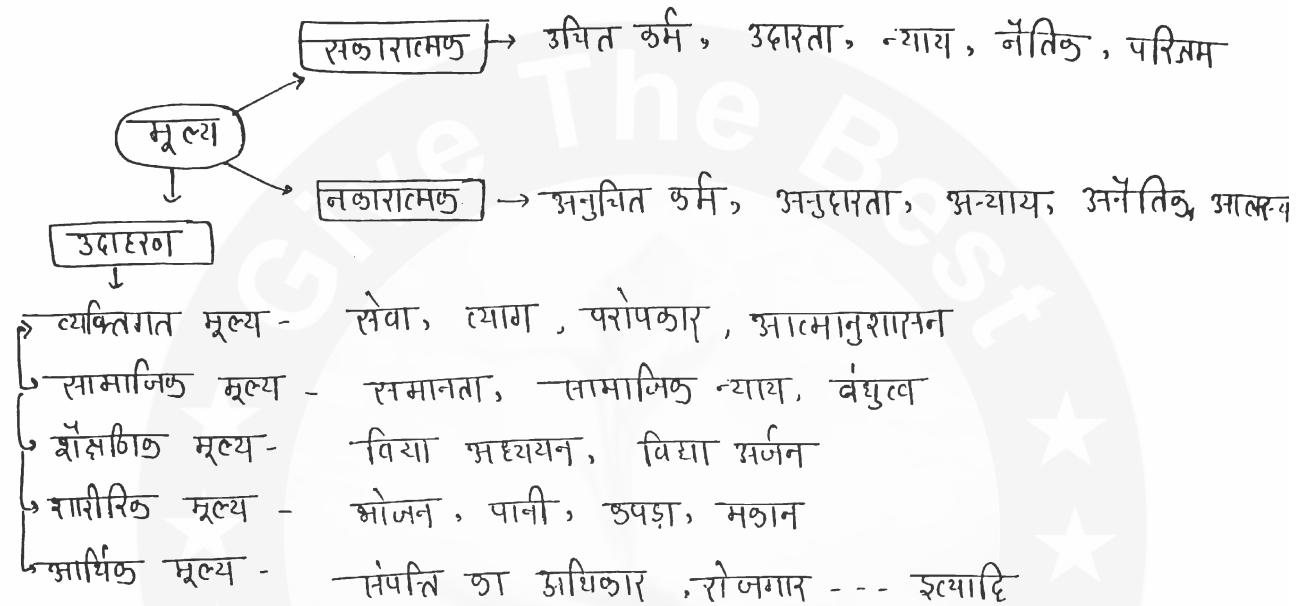
पृथक् खण्ड:- मूल्य और स्पष्टीकरण एवं मानवीय मूल्यों के कुछ उदाहरण 'diagram' नेतिकृत और 'diagram' (नीतिशास्त्र के मूल्य, सिद्धान्त एवं आदर्श वाला)

द्वितीय खण्ड:- व्यावसायिक सक्षमता से तात्पर्य (अपने कार्य क्षेत्र में तिशेषज्ञ) विभिन्न व्यावसायिक और diagrammatic पूर्णतीकृत व्यावसायिक सक्षमता के साथ नेतिकृत और संबंध ऐसे कुछ उदाहरणों द्वारा व्यावसायिक सक्षमता के नेतिकृत पूर्णताओं को उमारना। व्यावसायिक सक्षमता एवं तटस्थला नेतिकृत से व्यावहारिकता में बदल सकती है।

निष्कर्ष:- संगठन के मूल्यों और संक्षण, संविधान के आदर्श अधिकार एवं दायित्व में समन्वय

Ans. ②

मानवीय मूल्य मनुष्य के वे गुण हैं जो उसके विचार विश्वास आधारण तथा त्यवहार के निर्देशित रूप से नियंत्रित करते हैं तथा उसके आत्मविश्वास रूप से आत्मोन्नति में सहायता होते हैं।

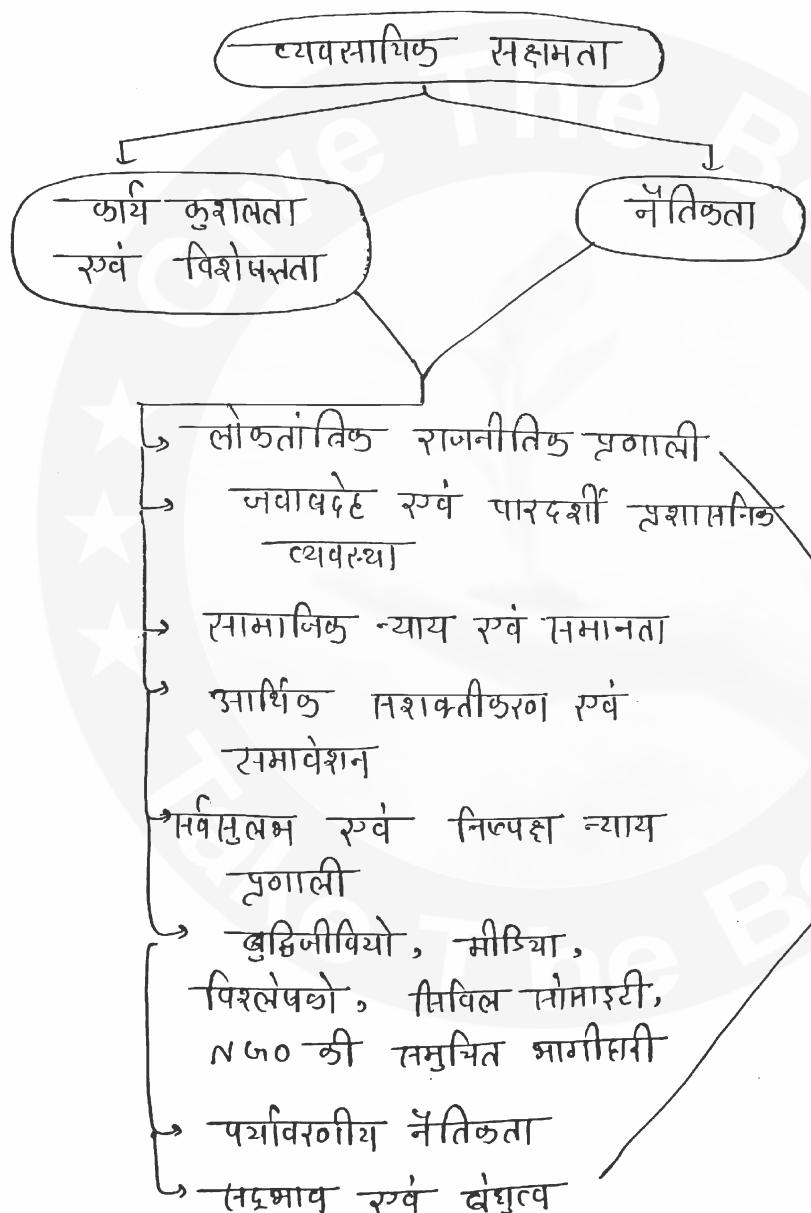


(3)

व्यावसायिक सहायता से ज्ञानाय है, उपने कार्य होने में विषय - विशेषज्ञ होना छिन्न नेतिज होना भी महत्वपूर्ण है, जैसे -

- 1) राजनेतिज नेतिजता के अभाव में नेतिज शुभ मूल्य और नदगुणों से रहित शासन प्रणाली का विकास हुआ है, जैसे; राजनीतिक दबो रखे व्यवसायियों का गठनोंका, राजनीति का अपराधीकरण, आई-मतीजावाद, जूष्टाचार, गठबंधन के कारण दलगत त्वार्थवाली राजनीति इत्यादि। साथ ही संसदीय मर्यादा का उल्लंघन।
- 2) भारतीय प्रशासनिक नौकरशाली प्रत्यंत प्रशिक्षित रखे कुशल हैं छिन्न नेतिज उत्ताप्त की कमी के कारण कार्यसंकृति में सद्व्याप्ति जवाबदेहिता रखे पारदर्शिता का ज्ञान लई विद्युओं में देखा जा रहा है जैसे पृथानमंत्री फालत दीमा योजना ज लाभ के कारण 35% ते भी कम जिमानो को प्राप्त हो रहा है (आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18)।
- 3) सामाजिक सेक्टर में व्याप्त समस्याएँ नेतिजता के अभाव को पूछट लगती है, जैसे शिक्षित-प्रशिक्षित जनशापको की उपरिक्षिति के बावजूद सामाजिक शिक्षा का निम्न स्तर (असर रिपोर्ट), डॉक्टरों द्वारा मरीजों से जनिक त्वचित का ध्यान रखना (बिलासपुर नमवंदी जाड जादि), जातिगत तनाव (मोष लिंगिंग) इत्यादि।
- 4) लगातार बढ़ता बैंको का NPA (गैर निष्पादित परिमंपत्तियाँ) सेक्टर बैंक कमियारियो रखे व्यवसायियों के ग्राहक ऑडिटिंग रखे बैंकम सीट पूर्णत लगने का परिणाम है जो उनकी नेतिज दृष्टि पर प्रश्नांकित लगता है।

५) सांखोगिकी रूप से तलनीकि शिक्षा का पर्याप्त ज्ञान देने पर भी उद्योगपतियों हावा पर्यावरणीय मानदण्डों का अनुपालन न करना (केन्द्रीय सूक्ष्म नियंत्रण बोर्ड रिपोर्ट) साथ ही कॉरपोरेट सोशल रिपोर्टिंगिंग (CSR) में न्यून आगीहारी।



- संविधान के जादर्शों की स्थापित
- सतत विकास लक्ष्य
- सद्भावहार विकास (evergreen development)
- लोकतांत्रिक सुदृढ़ीकरण
- गुड गवर्नेंस

पर्यावरणीय नैतिकता का क्या मर्द है? इसका अध्ययन करना किस कारण महत्वपूर्ण है? पर्यावरणीय नैतिकता की हड्डि से किसी रुप पर्यावरणीय मुद्दे पर चर्चा की जिसे? (2015)

Demand :-

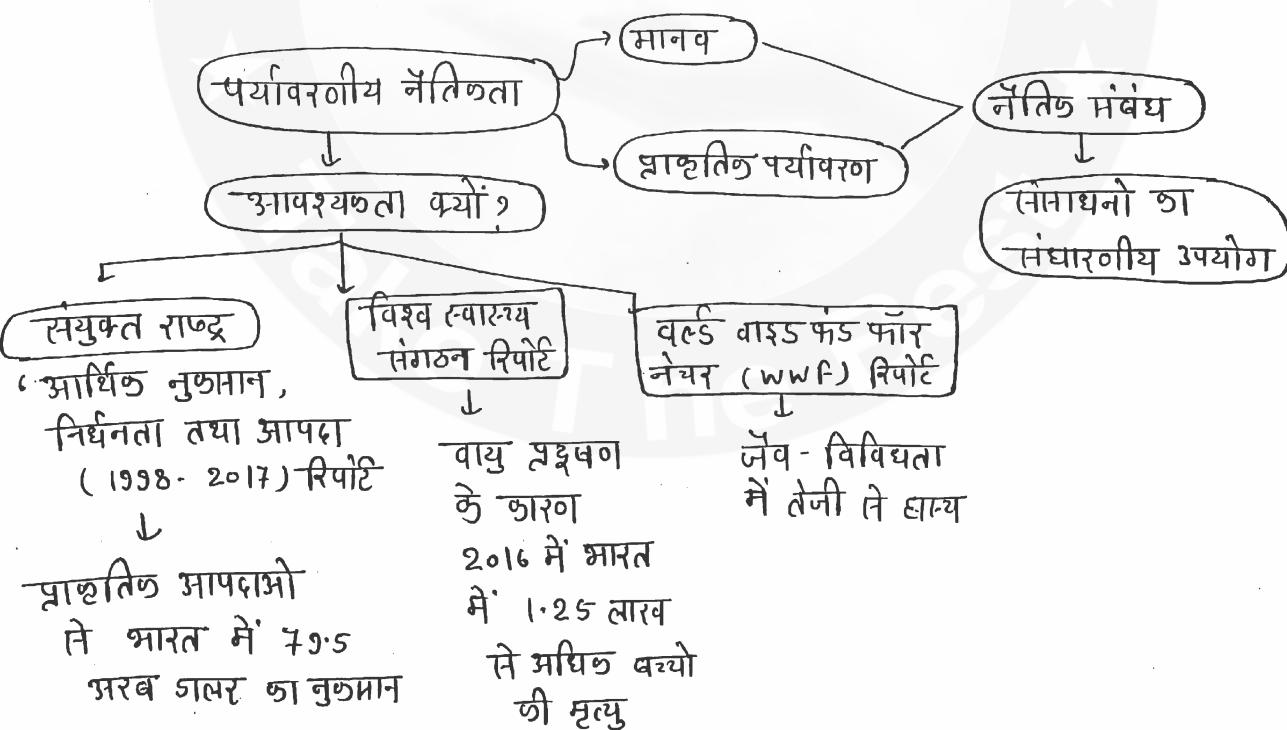
पर्यावरणीय नैतिकता से आशय?

इसका अध्ययन करना क्यों महत्वपूर्ण है?

किसी रुप पर्यावरणीय उत्तम अध्ययन के आधार पर पर्यावरणीय नैतिकता को स्पष्ट करें।

Supply :-

पर्यावरणीय नैतिकता से आशय है कि मानव और प्राकृतिक पर्यावरण के मध्य नैतिक संबंधों को ध्यान में रखते हुए मानवीय उपभोग हेतु समाधानों का प्रयोग किया जाना चाहिए।



(6)

इल ही में अन्तर-सरषारी पैनल (IPCC) द्वारा ग्लोबल वार्षिक आ॒प 1.5°C शीषिण से इ॒ष विशेष रिपोर्ट जारी की गई।
रिपोर्ट के प्रमुख निष्पत्ति :-

- i) मानव-जनित ग्लोबल वार्षिक 2017 में ही पूर्व ओड्डोगिण स्तर से 1°C ऊपर तक पहुंच गई थी।
- ii) मानव-जनित उत्सर्जन के तारण महासागर 60% अधिक तेजी से गम हो रहे हैं।
- iii) यदि वैश्विक औसत तापमान 2°C से अधिक हो जाता है, तो खलवायु परिवर्तन 'अपरिवर्तनीय' और 'विनाशकारी' हो सकता है।

उपर्युक्त रिपोर्ट पर्यावरणीय नेतृत्वा की आवश्यकता पर जोर देती है, जिसके लिये निम्नलिखित साध्य-रणनीति अपनायी जनि की आवश्यकता है -

- * इष्टी-स्थिक्स इवं पर्यावरणीय नेतृत्वा का तिकास।
- * अभिवृत्ति के संबोधन, भावना इवं छिया पक्ष में समर्पय।
- * प्रशासन द्वारा नीतियों के नियमि इवं छियान्वयन पक्ष में पर्यावरण अनुफूलन के लिये भावनात्मक समझ का पूरीग।
- * एंडिंग व्यावस्था में सुधार (पर्यावरण उष्टुप)।
- * सुष्टीम उर्ति द्वारा निष्ठार्थि सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप में लायद उरना।
- * अन्तर्राष्ट्रीय संबंधी में पर्यावरणीय नेतृत्वा को प्रमुख स्पान।

(Q) सार्वजनिक दोल में इति-संघर्ष तब उत्पन्न होता है, जब निम्नलिखित की रण-इसरे के अपर प्राथमिकता रखते हैं - ①

- (a) सार्वजनिक उत्तरव्य
- (b) सार्वजनिक इति
- (c) व्यक्तिगत इति

प्रशासन में इस संघर्ष को कैसे सुलझाया जा सकता है ?
उदाहरण नाहिं वर्णन कीजिए, (2017)

प्रशासन में इति-संघर्ष की विधि को निम्नलिखित साध्य-रणनीति अपनाकर सुलझाया जा सकता है -

- 1) नैतिक नियमों का अनुपालन जिसके अन्तर्गत स्वतंत्र अभ्यास से प्राप्त होने वाले सभी सडगुणों (बुद्धिमत्ता, भिताचार, न्याय, संयम इत्यादि) को धारण करते हुए साधन रखने साथ्य की पवित्रता को लाए करने का प्रयत्न, जैसे महात्मा गांधी के सात पापों के विचार और अनुपालन करना -
 - विचार के बिना राजनीति
 - कृषि के बिना धन
 - आत्मा के बिना सुख
 - नैतिकता के बिना व्यापार --- इत्यादि
- 2) व्यक्तिगत इति को सार्वजनिक इति पर वरीयता न होते हुए अपने उत्तरव्य भौत भूमिकार के मध्य सम्बन्ध स्थापित करना।
‘जैसे गुजरात-विवेक, मात्म-नियंत्रण इवं उत्तरव्यनिष्ठ रहने की बात करते हैं।

- ⑥ 3) रिविल सेवा के बुनियादी मूल्यों (सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, जवाबदेहिता, विक्षयनिष्ठता, ईमानदारी इत्यादि) को धारण ऊरना। जैसे बुनियादी मूल्यों की महत्व को स्थापित करते हुए वारेन बफेट कहते हैं -
- 4) रिविल सेवा आधार संस्थिता का अनुपालन एवं प्रशिक्षण जैसा कि हितीय प्रशासनिक सुधार आयोग ने अपनी रिपोर्ट में सुझाये प्रस्तुत किया है -
- संविधान की उद्देशिणा में स्थापित विविध आदर्शों के प्रति निष्ठा।
 - वाजनीति से परे रहने की चाही।
 - उद्देश्यधर्म और निष्पक्षता से भाग ऊरना।
 - निर्णय निर्माण में जवाबदेहिता --- इत्यादि।
- 5) मावनामिक समझ के द्वारा व्यक्तिगत द्वितीय लाभ की मावनाओं का सम्बंधन ऊरना, जैसे भारतीय नैतिक दर्शन (वेद, उपनिषद, पुण्य पुराणार्थी आदि) आदि के मूल्य धर्म, धर्म, जाम, मोहा में संतुलन द्वारा नैतिक मनुष्य के विकास पर बल करते हैं।
- 6) पदीय कर्तव्य से विमुक्त होकर भृष्ट आचरण अपनाने वाले रिविल जेवजो को हेतु हितीय प्रशासनिक सुधार आयोग ने उनके सुझाव दिये हैं, जैसे -
- प्रतिस्पर्शी एवं पारदर्शिता को बढ़ावा
 - विनेन्द्रीजरण को बढ़ावा
 - भृष्टाचार के विरोध कड़ी नियारक मजा
 - घोटालों और भृष्टाचार की सूचना देने वाले को प्रतिरोध से बचाने का प्रयास --- इत्यादि

(9)

Q. 'अंतःकरण की आवाज' से आप क्या समझते हैं? आप इसको अंतःकरण की आवाज पर ध्यान देने के लिए कैसे तैयार करते हैं? (2013)

Demand :- 'अंतःकरण की आवाज' को परिभ्राषित करना उदाहरण के साथ

- प्रमुख विचारों के कुछ मतों को विश्वास विश्लेषित करना
- इसके अंतःकरण की आवाज पर ध्यान देने के लिये तैयार करने की रणनीति

Supply :- 'अंतःकरण की आवाज' मनुष्य के अंदर विद्यमान रूप से ऐसी शक्ति है जो छिपी रूप से के उचित-अनुचित का सहज और साक्षात् ज्ञान बिना परिणाम और उद्देश्य का विचार किया ही प्राप्त कर लेती है।
जैसे- 'सत्य बोलना रूप कर्तव्य है।' इसलिए नहीं की वह सामाजिक कल्याण के लिए आवश्यक है बल्कि इसलिए कि वह एकत्र उचित है।

⇒ प्रमुख विचारों के अनुसार अंतःकरण के दो पक्ष हैं-



↓
किसी विशिष्ट रिपब्लिक में ऊन-सा रूप नेतृत्व है अथवा अनेकिए

↑
स्थकित पर यह दबाव बनता है कि अंतःकरण के नियमों को स्थीलारे और उसी के अनुराप कर्त्त्व करें।

(10)

मैं इन्हें को अंतर्कानी की आवाज पर ध्यान देने के लिए निम्नलिखित प्रकार से तैयार करता / ती हूँ -

- 1) मेरे परिवार के छाना मिले मूल्य जैसे - सहयोग, प्रेम, स्वीकृति, सदुभावना, परोपकार, इन्हें दूसरे को समझना इत्यादि को धारण करना।
- 2) संकूल रूप समाज से प्राप्त मूल्यों, जैसे; आध्यात्मिक रूप स्वावसाधिक मूल्य, बौद्धिक ज्ञान, सहयोग, परिज्ञम, मानवप्रेम सत्त्वी द्वारा भक्षित इत्यादि को आत्मस्वता कर।
- 3) श्रमुरव नेता जैसे- महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, भगत सिंह इत्यादि, समाज सुधारक राजा राम मोहन राय, विश्वेशानंद, ज्ञादि तथा शशास्त्र के रूप में अशोक, ६० ऋषिरन जादि के मिळांतो को धारण कर। जैसे गांधी जी के नॉकरशान नेतिकृत (पंचवृत रूप स्वर्विधि सम्भाव) तथा सात सामाजिक याय का मिळांत।
- 4) संविधान के आदर्शों (सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक न्याय, सभी को इन्वेंटरी, समानता रूप स्वर्विधि की भावना में जोड़ना) का अनुपालन।
- 5) मूल अधिकार रूप मूल उर्त्तियों की समझ विकसित कर।
- 6) समावेशी विज्ञान (वंकित के अंतिम व्यक्ति तक सभी बुनियादी सुविधाओं की पहुँच) के मूल्यों की समझते हुए।
- 7) गुड गवर्नेंस (नॉकरशानी उत्तरदायित्व, दक्षता, पारदर्शिता कानून वाधित व्यवहार, समाज व सरकार के बीच सहयोग भादि) तथा सतत विज्ञान की सवधारणा को धारण करना।

Q निम्न के बीच विशेष छीनिएः

(11)

- (i) विधि और नैतिकता
- (ii) नैतिक प्रबंधन और नैतिकता का प्रबंधन
- (iii) भौद्भाव और अधिमानी वरताव
- (iv) वैयक्तिक नैतिकता और संव्यावसायिक नैतिकता

(2015)

विधि

- रसमाज के प्रतिनिधियों द्वारा बनारप गरण दिशा-निर्देश जो कि वास्थणी होते हैं, वे जानन के रूप में समझे जाते हैं।
- उदाहरण - भूष्टाचार विरोधी जानन आदि।

नैतिकता

- नैतिकता का जाशय ऐसे नियमों से है, जो व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित व अनुशासित करते हुए उचित व अनुचित का निर्धारण करता है।
- इसका अंतिम लक्ष्य जानें रखें मानव अत्याचार है।

नैतिक प्रबंधन

- व्यवसाय में ऐसे प्रबंधन को संदर्भित करता है जो न केवल आधिकारिक लक्ष्यों और जाननी जिम्मेदारियों को पूरा करता है बल्कि सामानिक उपेक्षाओं के नैतिक मानदंडों को भी पूरा करता है।
- जैसे:- व्यवसाय के लिये सभी मानव पारदर्शी, निष्पक्ष, इत्यादि जैसे नैतिक मानदंडों पर आधारित हो।

नैतिकता का प्रबंधन

- यह व्यावसायिक नैतिकता के सभी पहलुओं पर लागू होती है तथा नैतिक मिळाते रखे नैतिक समस्याओं की जांच करती है। यह संगठन के प्रति व्यक्ति के आवरण तथा भाव को दर्शाती है।
- मानवीय नैतिकता का सम्मान, प्रोत्साहन नैतिक आचार संस्कार, रखें इंगिंग प्रोग्राम इत्यादि के द्वारा नैतिकता का प्रबंधन किया जाता है।

(19)

भेदभाव

दृवीग्रह, भाई-भतीजावाद, जाति, लिंग, धर्म-या जन्म स्थान के नाम पर किया जाने वाला ऐसा नकारात्मक व्यवहार है।

उदाहरण - लिंग के आधार पर भेदभाव करते हुए सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के स्वेश को रोकना
 → जाति के आधार पर बोट संग्रहन
 → धार्मिक छहरता (मॉब लिंचिंग)
 → आदि।

आधार

अर्थ →

व्यक्तिगत नैतिकता में व्यक्तिगत मूल्य तथा नैतिकता शामिल होते हैं।

स्वीकृत्यता → व्यक्तिगत नैतिकता को गृहण करना बाध्यता नहीं होती है।

स्वकृति → अधिकार मामलों में व्यक्तिगत विचार होते हैं जैसे- चंचितों के स्वति सेवाभाव

नजरियां → स्वत्येक व्यक्ति में अलग-अलग हो सकती हैं।

अधिमानी वरताप

इस सकारात्मक संलग्नना है जो व्यक्ति के स्वर्द्धन पर आधारित होता है तथा मोग्यता के आधार पर निरिचित किया जाता है।

उदाहरण - भारतीय संविधान की सूखतावना में वर्णित स्वमुख आयाम, मौलिक अधिकार, नीति निषेधाज तत्वों के माध्यम से सबके माध्य अधिमानी वरताप करने की जवाबदारी।

संव्यवसायिक नैतिकता

व्यवसायिक नैतिकता में संगठन हारा बनारा गये नियम व आनार संस्थिता लागू होते हैं।

बाध्यता होती है।

यहाँ व्यक्तिगत विचार के लिए स्थान नहीं है।

इस पेशे से सम्बन्धित कर्मचारियों के लिए इस समान।

(13)

Qn जीवन नैतिक आचरण के संबंध में आपको इस विषयात् व्यक्तित्व ने सर्वाधिक प्रेरणा दी है ? उनकी शिक्षाओं औ सार प्रस्तुत कीजिए। विराष्ट उदाहरण देते हुए वर्णन कीजिए कि आप अपने नैतिक विचार के लिए उन शिक्षाओं को इस दृष्टान्त लागू कर पाये हैं ? (2019)

Demand :-

- नैतिक आचरण के संबंध में इस विषयात् व्यक्तित्व ने सर्वाधिक प्रेरणा दी ?
- उनकी शिक्षाओं औ सार प्रस्तुत उत्तरे हुए उन्होंने अपने निजी उदाहरणों के साथ जोड़कर दिखाना है।

महात्मा

Supply :-

नैतिक आचरण के संबंध में मुझे प्रेरणा देने वालों में विषयात् व्यक्तित्वों में शामिल हैं प्रशासन के रूप में - समाज अशोक, दू. ग्रीष्मन, पं. जवाहर लाल नेहरा इत्यादि, सुधारक के रूप में - राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द आदि तथा नेता के रूप में महात्मा गांधी।

परंतु इन सभी में मुझे 'महात्मा गांधी' ने सर्वाधिक प्रभावित / प्रेरित छिया।

१९

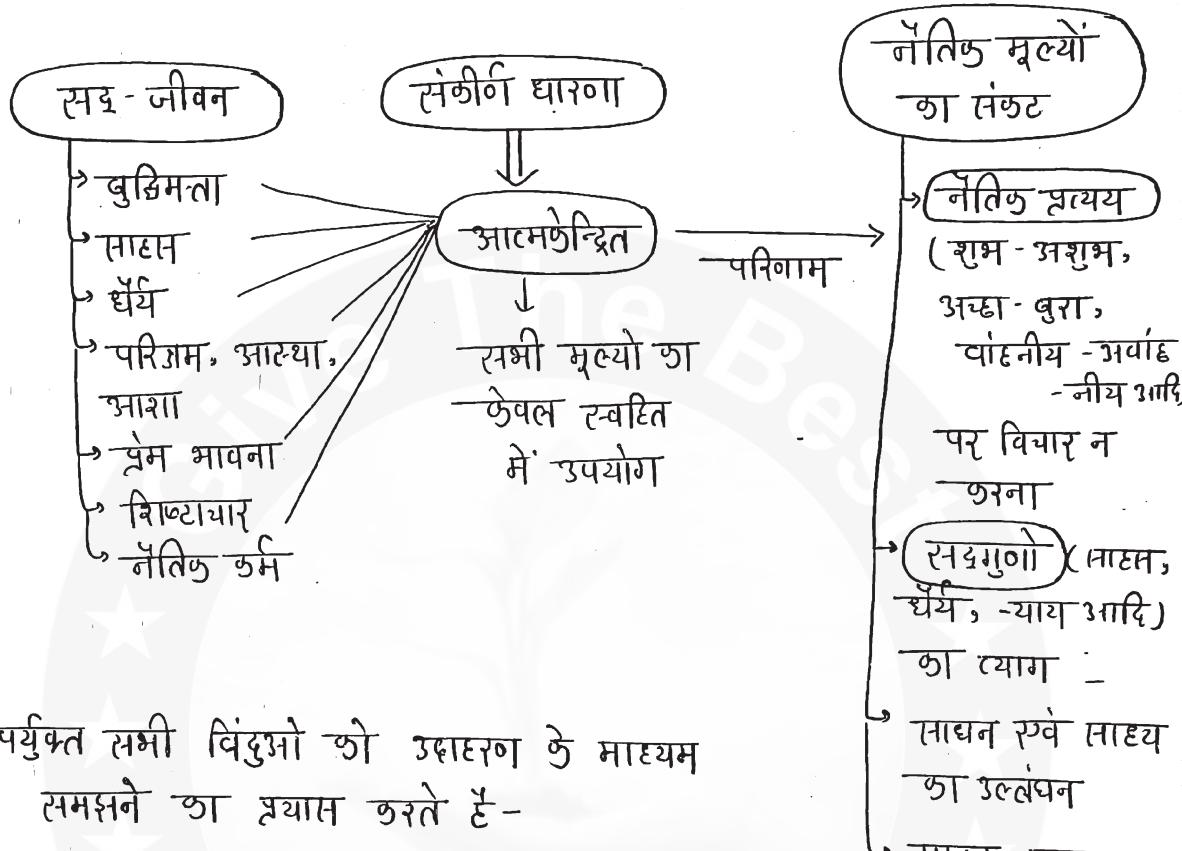
महात्मा गांधी

इनके विशेष गुण / शिक्षार्थ

मुझे प्राप्त होना

- 1) साधन रखे साध्य की पवित्रता पर बल → मुझे परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन के साथ उक्ता में सर्वाधिक अंक प्राप्त होने की प्रेरणा मिली
- 2) पर्यावरणीय संरक्षण सेवाएँ मूल्य, जिसमें गांधी की पर्यावरण को मानवता और सहचरी मानते हैं। → • स्कूल रखे छोलेज में वृक्षारोपण प्रतियोगिता में आठवींसारी
• 'होली', 'हीपावली' जैसे त्योहारों में जीव-जनुओं की सुरक्षा का ध्यान देना।
- 3) अस्पृश्यता निवारण → • मैंने जपनी दलित द्वेष्ट के साथ अपना टिफिन रखे पुरातने साजा की।
- 4) 'र-प्रदूषा', राष्ट्र के विभाग के लिये प्राधारभूत तत्व है। → • घर के क्रज्जा-करकट को नियमित रूप से इडाशन में डालने का प्रबल्प
• स्कूल, छोलेज, नार्वनिक रन्यालों को साफ रखने का प्रयास
- 5) सत्यनिष्ठता → • मैंने सभी नार्वनिक रखे निजी संस्थानों के नियमों का पालन करे उनुसासन के साथ होने का प्रयास किया (जैसे- अस्पतालों, परिवहन सेवों, सड़कों पर सिंग

Q वर्तमान समय में नेतिकृ मूल्यों का संकट, सद्गीवन की संकीर्ण धारणा से जुड़ा हुआ है। विवेचन कीजिए? (2017)



उपर्युक्त सभी विंदुओं को उदाहरण के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं-

- 1) शिशु जन्म के समय 'ईलाज' के रूप में बचत करने वाला परिवार 'नामकरण', पर अधिक रूप करता है।
- 2) शिक्षा की प्राप्ति के समय बच्चों के मानसिक विकास की आवश्यकता की वस्तुओं का ध्यान न करने वाले भौतिक उत्तराधिकारी की शिक्षा की शरण।
- 3) 'त्योहारों के नाम पर रात्रिवादी त्रैयाओं की लकीर पीटना, जैसे; 'होली', पर लकड़ी, रंग, वस्त्र इवं पानी की बर्बादी, दशहरे पर रावण जलाना तथा दिवाली पर पटाका जलाकर पर्यावरण को नुकसान पहुंचाना।

(16)

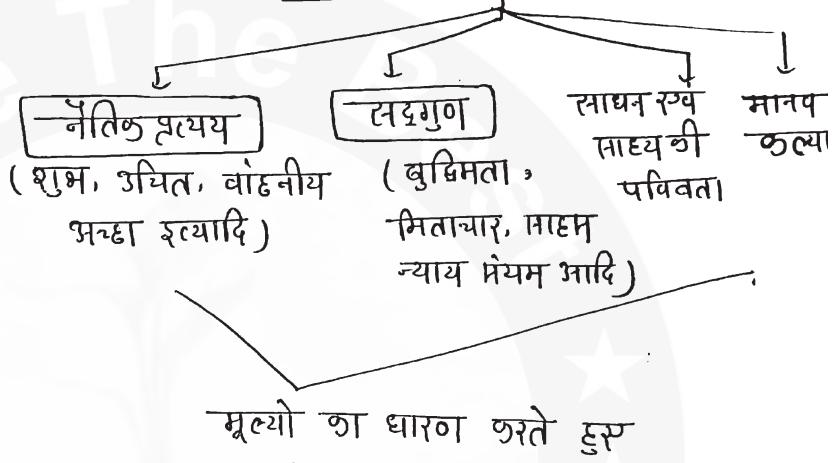
- १) पितृमत्तात्मक मानविकता से गृहित होऊर महिलाओं को द्वितीयक मानना (लिंग असमानता व्यवस्थाएँ के आळड़), दृष्टिविवाह में जन्मधिक रूप, महिलाओं को उपभोग की वस्तु लम्जना (महिला असुरक्षा के बढ़ते मामले) इत्यादि।
- २) जातीय कंगे, सांप्रदायिकता (जैसे मौखिक लिखिंग), कृष्णता, नक्सलवाद इत्यादि जानाविक मंजीरिता को प्रदर्शित करते हैं।
- ३) भारत की उम्मीदों व लक्ष्यवशीली भर्त्यवस्था में जन्मधिक अवकाश की मंसूबति, जिसका उस्तर विकास, उद्योग, न्याय बृणाली पर पड़ता है।
- ४) बुनियादी मुविधाओं तथा चंचित वर्गों की पहुंच न होना, जैसे; उच्च शिक्षा रखने वालों के लिए स्वाक्षरता व्यक्तियों सभी तथा उपलब्ध न होना (प्रैरिवल शिक्षा निगरानी रिपोर्ट) तथात्य मुविधाओं का जन्मधिक महंगा होना, माज भी उच्छ बड़ी आवादी 'जावास' मुविधा से चंचित है (उत्तोर्चम रिपोर्ट) इत्यादि।

अतः नेतिक मूल्यों का विभास करने (परिवार, संकुल रखने समाज बारा) तथा सामाजिक अभिवृत्ति के गुणों के विभास बारा सद-जीवन की मंजीरिता को रखने दिया जाना चाहिए जिसमें संविधान के आदर्श, भारतीय दर्शनिक मूल्य रखे जाते विभास की अवधारणा समादृत हो। इसी मंदर्भ में द्वितीय प्रशासनिक मुद्घार मायोग की रिपोर्ट में मुझाव देते हुए इस गया है कि-

"हम सुधार करना चाहते हैं तो सबसे पहले हमें अपने निजी जीवन में अभिनविगत मुद्घार लाने होंगे।"

(Q) सभी मानव सुरक्षा करते हैं। क्या आप सहमत हैं, आपके लिये सुरक्षा का क्या मर्ध है? उदाहरण प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट कीजिए? (2014)
 → हाँ सभी मानव सुरक्षा की जांच करते हैं।

मेरे लिये सुरक्षा का मर्ध है → नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांतों रखें जानकारी



व्यक्तिगत दितो के साथ-साथ सार्वजनिक दित के लक्ष्य को प्राप्त करना

1) मेरे लिये सुरक्षा का मर्ध है, अधिकृतम् व्यक्तियों के साथ जुड़ा हुआ सुरक्षा जैसे - व्यवसायी सुरक्षा को उत्पत्ति साध्य रूप मानते हैं तथा व्यवसायी सुरक्षा को 'अधिकृतम् व्यक्तियों के अधिकृतम् सुरक्षा' के रूप में मानते हैं।

उदाहरण - आयुष्मान योजना, पी.एम. किसान सम्मान निधि, मनरेगा जैसी योजनाओं का ग्राउंड जीरो (Ground zero level) तक ले जाना।

2) मानव इंजी में कमी (सामाजिक सुरक्षा मूल्यांक)

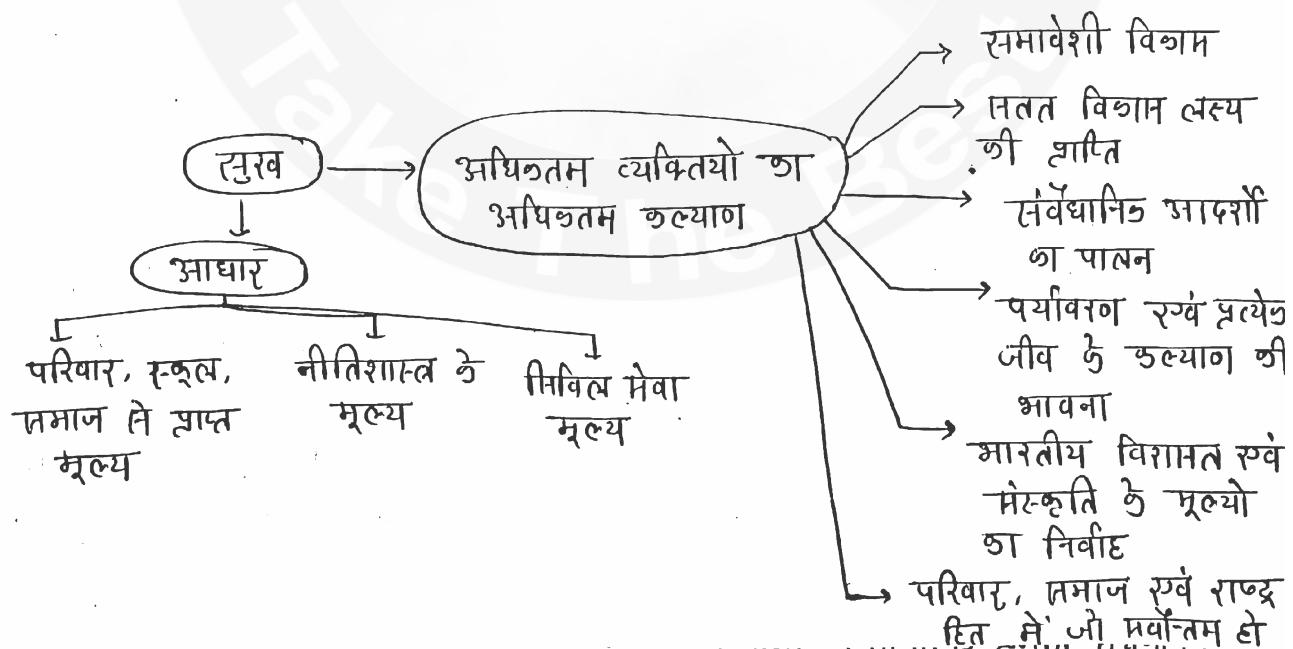
(18)

2) परिवार, एकल र्यवं समाज हारा मिली विश्वाओं (सेवा, ध्यान, परोपकार, समानता, बंधुत्व, न्याय, प्रेम आदि) को धारण करना र्यवं इसनो जो भी प्रेरित करना जिससे उन एक सुरक्षी समाज का विकास कर सके।

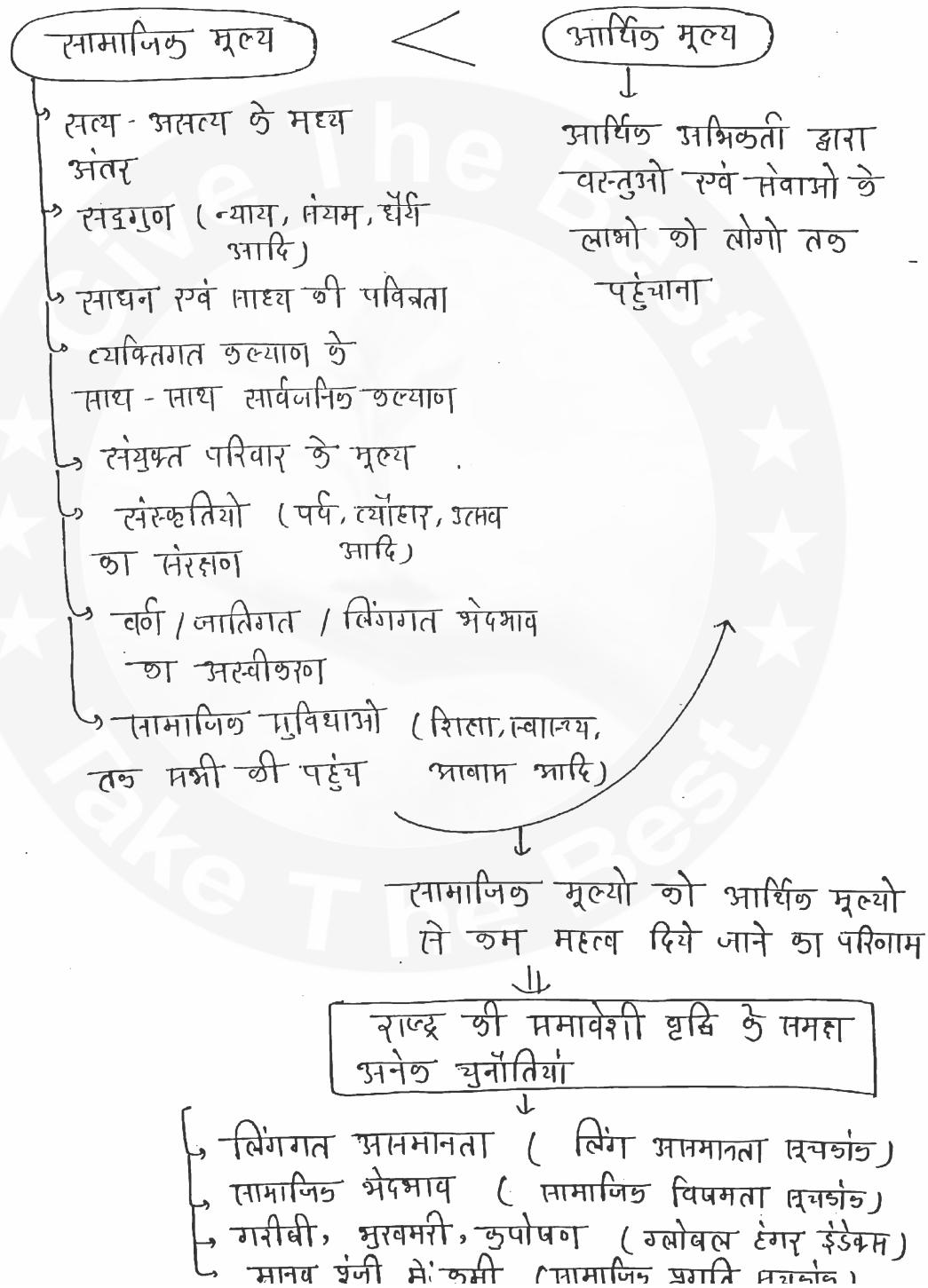
3) ‘कर्तव्य के लिये कर्तव्य’, तथा ‘शुभ मंकल्प’ जैसे शब्दों के सिद्धांत ‘सुख’ का पर्याय हैं।

उदाहरण - अपने जीवन की रक्षा करने के साथ-साथ
 } इसनो की महायता करना
 } धर्मग्रंथों हारा निर्धारित उर्म औ पालन
 (जैसे पुरुषमन से भी प्रेम करना)

4) मेरे लिये ‘सुख’ का अर्थ मिविल सेवा मूल्यों (सत्यनिष्ठता, निष्पक्षता, पारदर्शिता, ईमानदारी, जवाबदेही आदि) को धारण करना। उदाहरण - सत्यनिष्ठा के अभाव में ‘भृष्टाचार’, तत्त्वातिक सुरक्षा जो ब्रह्मण कर सकता है किंतु दीर्घकातिक सुख को नहीं।



(Q) “सामाजिक मूल्य”, ‘आर्थिक मूल्यों’ की मधेता अधिक महत्वपूर्ण है।” राष्ट्र की समावेशी संवृत्ति के तंदर्भ में उपरोक्त कथन पर उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए। (2015) (13)



(60)

अतः राष्ट्र की समावेशी वृद्धि के लिये 'सामाजिक मूल्यों' को 'सार्थित मूल्यों' की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण मानना आवश्यक है। जिनके निम्नतिरिक्त आधार हैं-

- गांधी के राष्ट्रकांश पाप नेतृत्व वृत्त (सर्वधर्म समझाव, सत्य, अद्विद्वा, महत्वेय भादि)
- महात्मा बुद्ध के भज्यांगित मार्ग (विचार रखें आचरण की पवित्रता, सभी मनुष्यों की समानता, जाति इष्ठा जा विरोध आदि, जैन धर्म जा निर्मल (सम्यक दर्शन, ज्ञान, चरित्र))
- मुण्डु उपनिषद् (सत्य मेव जयते), भगवत् गीता (निष्ठाम कुर्म गोग) के आदर्श
- राजा राम भोद्धन राय, विवेकानन्द, अरट्कू, प्लेटो तथा सुफ़रात आदि के विचार - -- आदि

॥

उपर्युक्त सभी मूल्य रखें आदर्श वर्तमान सामाजिक समस्याओं का (गरीबी, कृपोषण, लिंगांगत समसानता, कहरवाद, आय समसानता, सामुरक्षा आदि) जा हल हस्तनुत छरते हैं जो राष्ट्र के समावेशी विभाग लक्ष्य स्थापित में भव्यतं महत्वपूर्ण है।



निर्मान IAS

स्थानीय आदर्शता

QIP - ADVANCE CONCEPT

Unit - 2-5

By:

Sunil 'Abhivyakti' Sir

ENQUIRY OFFICE

631 Ground Floor, Main Road, Mukherjee Nagar, Delhi-09

HEAD OFFICE/CLASS ROOM

996 1st Floor, Mukherjee Nagar (Near Gandhi Vihar Bandh) Delhi-09

PH.: 011-47058219, 9540676789, 9717767797

Website : www.nirmanias.com | E-mail : nirmanias07@gmail.com

You can also visit our digital platform-



यूनिट-2:**अभिवृत्ति**

सारांश (कंटेंट),

संरचना,

वृत्ति; विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध;
नैतिक एवं राजनीतिक अभिरुचि; सामाजिक प्रभाव और धारणा।**यूनिट-3:****सिविल सेवा के लिए अभिरुचि तथा बुनियादी मूल्य,**

सत्यनिष्ठा,

भेदभाव रहित तथा गैर तरफदारी,

निष्पक्षता,

सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव,

कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति,

सहिष्णुता तथा संवेदना।

यूनिट-4:**भावनात्मक समाझः**

अवधारणाएं तथा प्रशासन और शासन व्यवस्था में उनके उपयोग और प्रयोग।

UNST-IInd

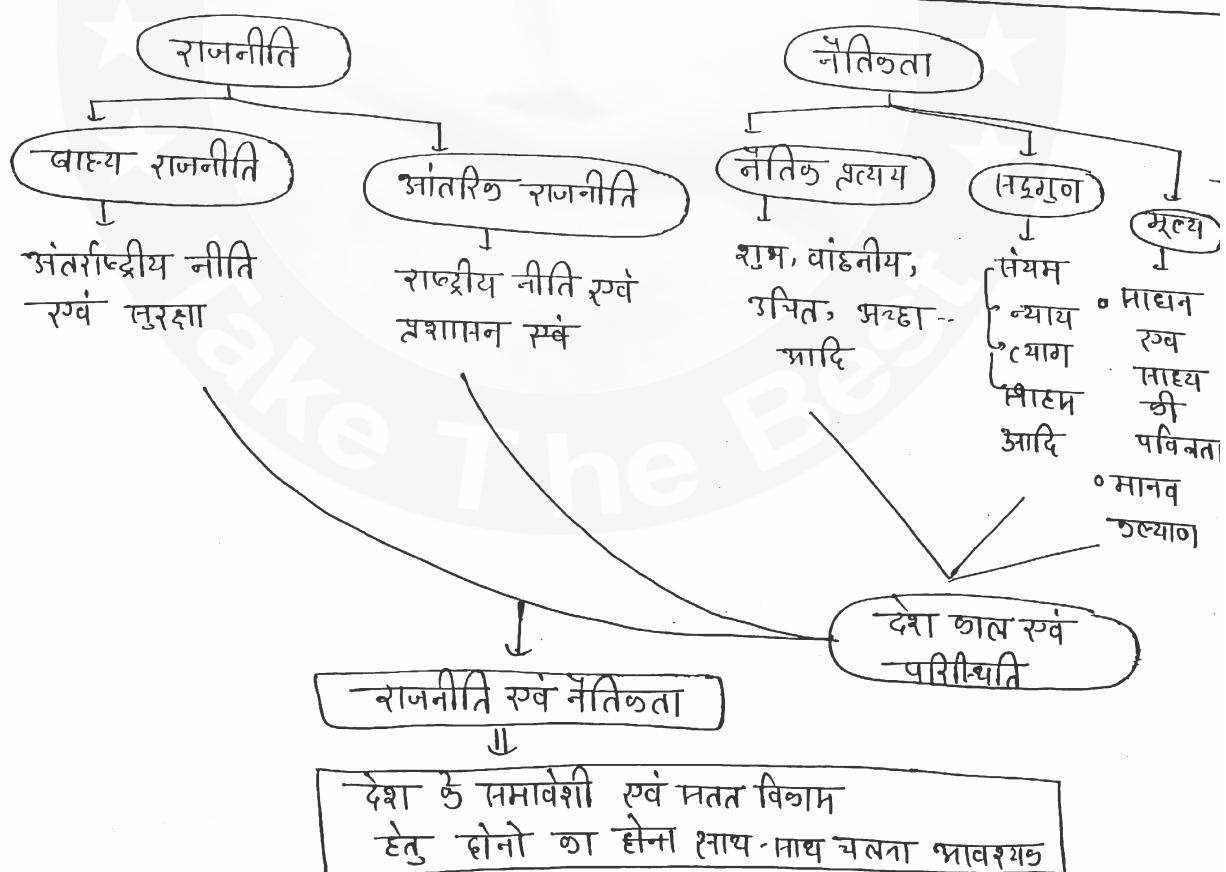
अभिवृति

(2)

Q. प्रायः यह कहा जाता है कि 'राजनीति' और 'नेतृत्व' साथ-साथ नहीं चल सकते हैं। इस लंबंध में आपका क्या मत है? अपने उत्तर का, उदाहरणों सहित, आधार बताइए। (2013)

Demand :-

- ‘राजनीति’ क्या है?
- ‘नेतृत्व’ क्या है? > संक्षेप में diagram के माध्यम से
- राजनीति एवं नेतृत्व साथ-साथ चल सकते हैं संबंधी अपना मत तथा उदाहरणों के साथ मत का पुष्टीयरण
- पश्चिमी विचारकों के मत जो ‘राजनीति’, और



Q)

मेरे मत में 'राजनीति और नैतिकता' साथ-साथ चल सकते हैं। इस संदर्भ में गांधी जी ना मानना या कि -

"जो कार्य नैतिक दृष्टि से उभित नहीं है वह राजनीतिक दृष्टि से उभित हो ही नहीं सकता!"

→ इस संदर्भ में अनेक उल्लंघन हैं जो राजनीति रखने नैतिकता को साथ-साथ प्रकट करते हैं, जैसे:-

- 1) स्वाधीनता के पश्चात कु. कामराज प्लान
- 2) डॉ. पी. आंदोलन
- 3) अन्ना द्वारे आंदोलन --- इत्यादि।

→ इस संदर्भ में कुछ परिचयीय विचारों ना मत हैं कि राजनीति रखने नैतिकता साथ-साथ नहीं चल सकते, जैसे दार्शनिक विचारण पर्याप्ती ना मत हैं कि - "राजनीति और नैतिकता साथ-साथ नहीं चल सकते, कुछ अपवाह हो सकते हैं, लेकिन अपवाह रख नियम नहीं बन सकते।"

→ वर्तमान राजनीति के कई पक्षों में नैतिकता का शरण दिखायी देता है, जैसे -

- गठबंधन की राजनीति में दलगत स्वार्थवाली राजनीति
- संसद में गलत आचरण का प्रदर्शन
- शब्दों की वर्णनता
- आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन
- अप्टायर, अपनाय का राजनीतिगत --- इत्यादि

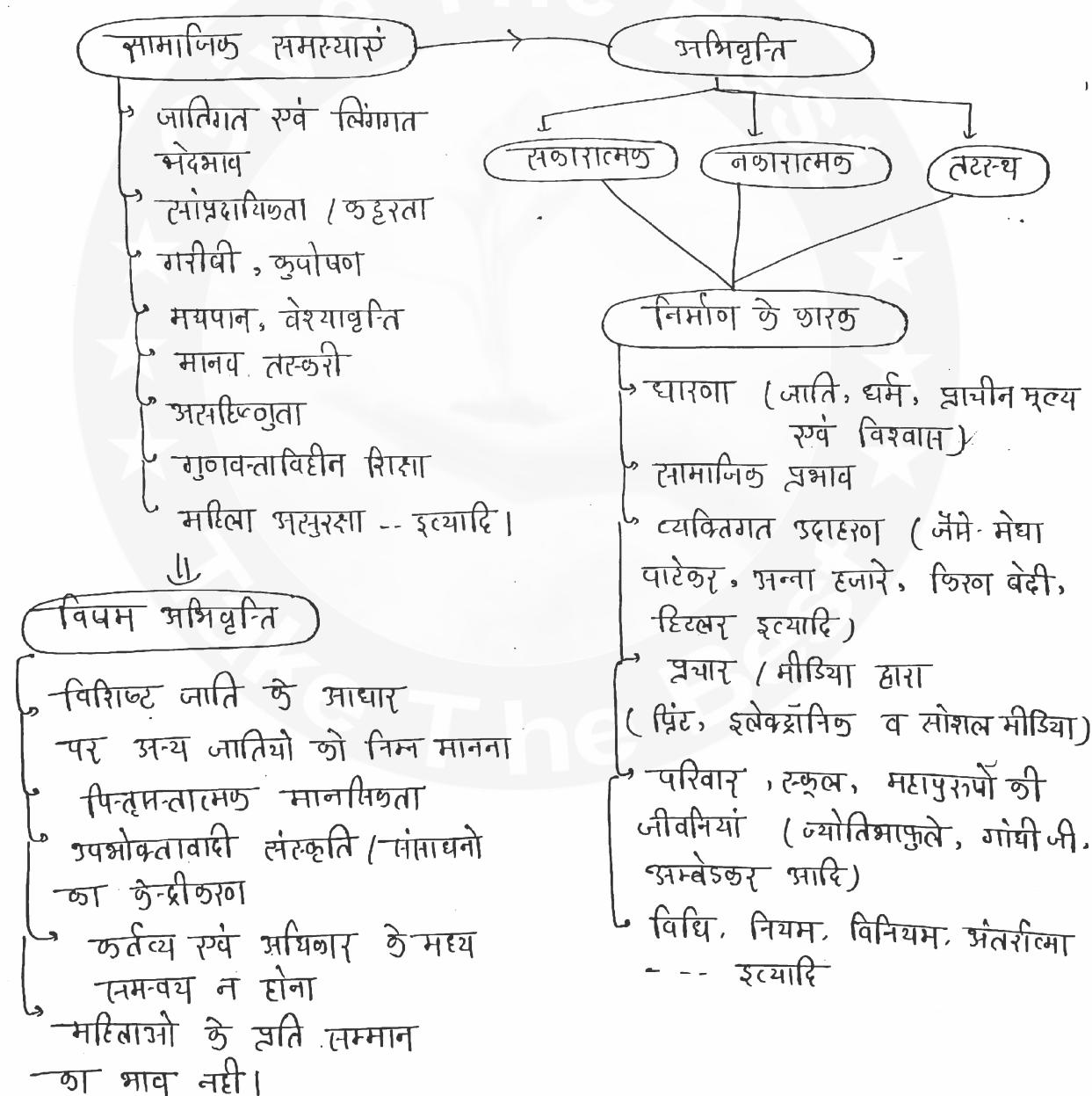
फिरु राजनीति रखने नैतिकता को 'साथ-साथ' स्थापित किया जा सकता है जैसे → गांधी जी के एकादश व्रत का अनुपालन कर (सत्य, सदिंशा आदि)

- संविधान के आदर्शों का अनुपालन, नैतिकता संबंधी समिति का गठन
- राजनेताओं रखने मंत्रियों द्वारा द्वितीय प्रशासनिक मुद्यार् भाषोग की अनुशंसामों को लाए कर

Q रामाजिनी समस्याओं के पृति व्यक्ति की मनिवृत्ति के निर्माण में जोन-से जारी स्वभाव जाहते हैं? हमारे समाज में अनेक सामाजिक समस्याओं के पृति विषम अनिवृत्तियाँ व्याप्त हैं। हमारे समाज में जाति पृथा के बारे में क्या-क्या विषम अनिवृत्तियाँ आपको दिखाई देती हैं? इन विषम अनिवृत्तियों के असरित्व को आप किस पूलार उपचार लगाते हैं?

(2014)

(23)



११

‘जाति पूर्वा’ के संबंध में विषम मिश्रिति

संज्ञान के स्तर पर

- उदाहरण के लिए जाति विशेष को परिचय मानते हुए ऐवल इह ही जातिजनित उच्चारों (मंदिर, तालाब, वर्गीयों में स्वरेश का इत्यादि) परिचय
- जिसी दोनों में विशिष्ट ‘जाति’ के आधार पर वोट मांगना

धर्म पर लियी विशेष जाति का अधिकार मानते हुए अन्य जातियों को मेवक मानना तथा अधिकारों से वंचित करना

आवाना के स्तर पर

- जपनी जाति के पृति प्रेम, परोपकार, ह्या वा भाव तथा अन्य के पृति पूछा ईच्छा ... इत्यादि।

किया के स्तर पर

- सांप्रदायिक होने वाले विंचिंग कहरता

जाति विशेष के कल्याण वा भाव होना न कि समस्त लोगों रखने वालियों के पृति

निन्दा जातियों को धार्मिक लायों होतु अनुपयुक्त मानना इह निष्पक्ष समझना

जाति विशेष को राजनीति में स्वरेश होना अनेक अधिकारों रखने वालों के मन्त्रालय शासन बनाना

निन्दा जातियों के माथ दुर्घटार, दिंसा - इत्यादि।

इन सभी मिश्रितियों को प्रदर्शित करने के अनेक स्तर होते हैं

कर्धण शक्ति

अभिवृति होन्वापर वा प्राक्कर्तन

चरमानीमा

अभिवृति की सीमांत हासिता

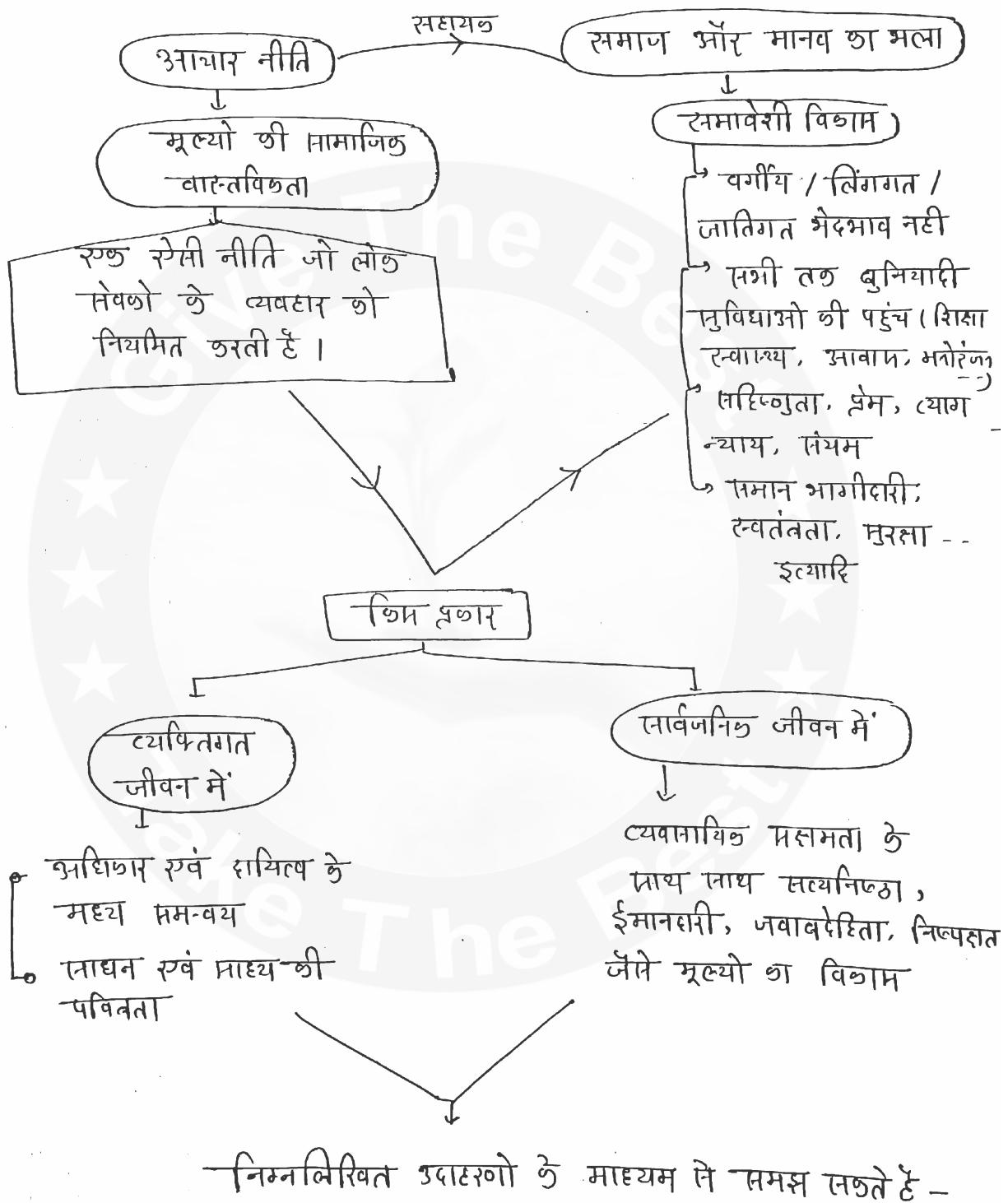
नरलता रखने वाली जटिलता

रण या हो अभिवृति होने पर

को-शक्ति

परिवर्ष अभिवृति

Q स्पष्ट कीजिए कि आचारनीति समाज और मानव का छिपा
प्रभार भला करती है। (2016) 25



(Q)

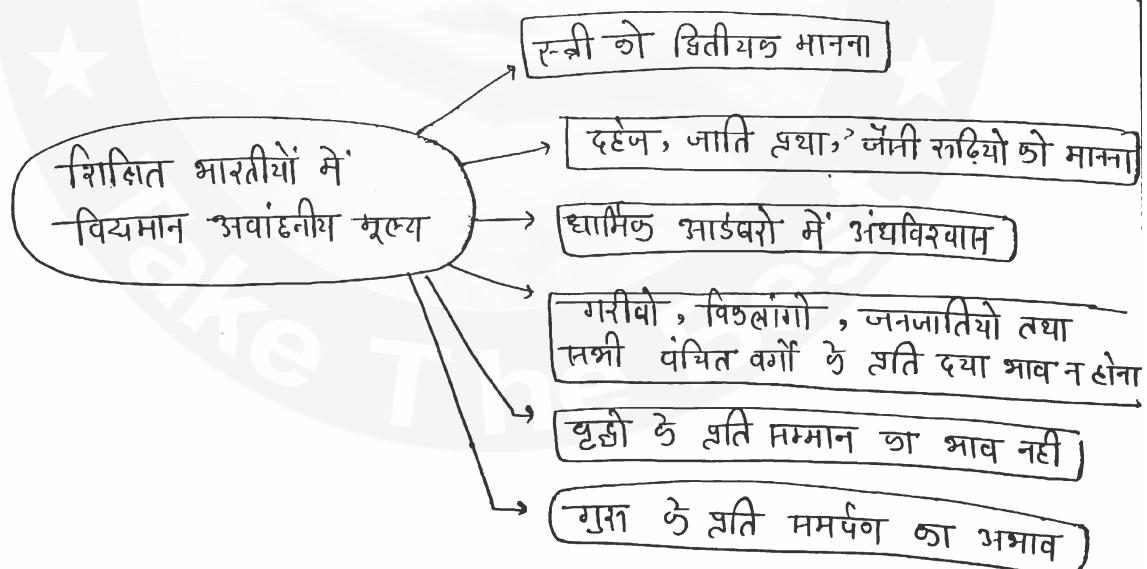
- 1) आचार नीति जा अनुपालन करने वाले राजनेता भृष्टाचार, गठबंधन रखे इवगत राजनीति, अर्ड-भृतीजावाद से इर रक्षर बेटर शासन व्यवस्था जा प्रयोगन करने जिसमे प्रत्येक वर्ग के तिये नीतियो पर पर्याप्त चर्चा रखे क्रियान्वयन मुनिशित होगा।
- 2) पूर्णामित्र नोकरशाही जिवित मेवा के मूल्यो को धारण (जवाबदीता निष्पक्षता, इनानदारी, सत्यनिष्ठा ज्ञादि) करते हुए वंकित छे अंतिम होर पर खड़े व्यक्ति तक सभी बुनियादी सुविधाओ जा लाभ पहुंचाएगी रखे गुड गवर्नेंस की स्थापना को बल भित्रेगा।
- 3) सामाजिक शोल मे व्याप्त समस्याएँ आचार नीति जा अनुपालन न होने जा परिणाम हैं जैसे गुणवत्ताविदीन शिक्षा, महंगी स्थानीय सुविधा, भ्रातुरता इत्यादि। आचार नीति जा अनुपालन होने ते सर्व विकास अभियान, आयुष्मान योजना, बेटी-क्षयामो बेटी पदाओ जैसी योजनाओ जा सफल क्रियान्वयन मुनिशित होगा।
- 4) ट्राक्टिगत स्तर पर अधिकार रखे दायित्व के मध्य समन्वय स्थापित होने ने संसाधनो का विक्रीकरण मुनिशित होगा जिसमे प्रत्येक व्यक्ति जो (रवाना, उपज़ा, मछान) बुनियादी सुविधाएँ, मनोरंजन के साथ उपलब्ध होगे।
- 5) लोक भ्रातालतो, ग्राम भ्रातालतो तथा नरल रखे स्पष्ट न्याय प्रविधि के प्रयोगन मे तेजी आयेगी जिसमे प्राष्टिक न्याय के मिहांत जी दृष्टि होगी।
- 6) आचार नीति; संविधान के आदर्शो, मानवाधिकार नियमो रखे सतत विजाम सर्वो की शाप्ति जी दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

Q. जीवन, कर्य, अं-य व्यक्तियों रुपे समाज के स्तरि हमारी (7)
भगिवृत्तियों प्रामतोर पर अनजाने में परिवार रुपे उन सामाजिक
परिवेश के द्वारा रापित हो जाती हैं, जिसमें हम बड़े होते हैं
अनजाने में घास्त इनमें से उह भगिवृत्तियों रुपे मूल्य भक्तर
आधुनिक लोकतांत्रिक रुपे समतावादी समाज के नागरिकों के
लिये अवांछनीय होते हैं।

- a) आज के विद्वित भारतीयों में विद्यमान स्थेष्ठे अवांछनीय
मूल्यों की विवेचना कीजिए।
- b) ऐसी अवांछनीय भगिवृत्तियों को कैसे बदला जा सकता
है तथा लोक सेवाओं के लिये आवश्यक समझे जाने वाले
सामाजिक नेतृत्व मूल्यों को भागांकी तथा कार्यकृत लोक
लेवरों में इस पृष्ठार संवर्धित किया जा सकता है?

(2016)

a)

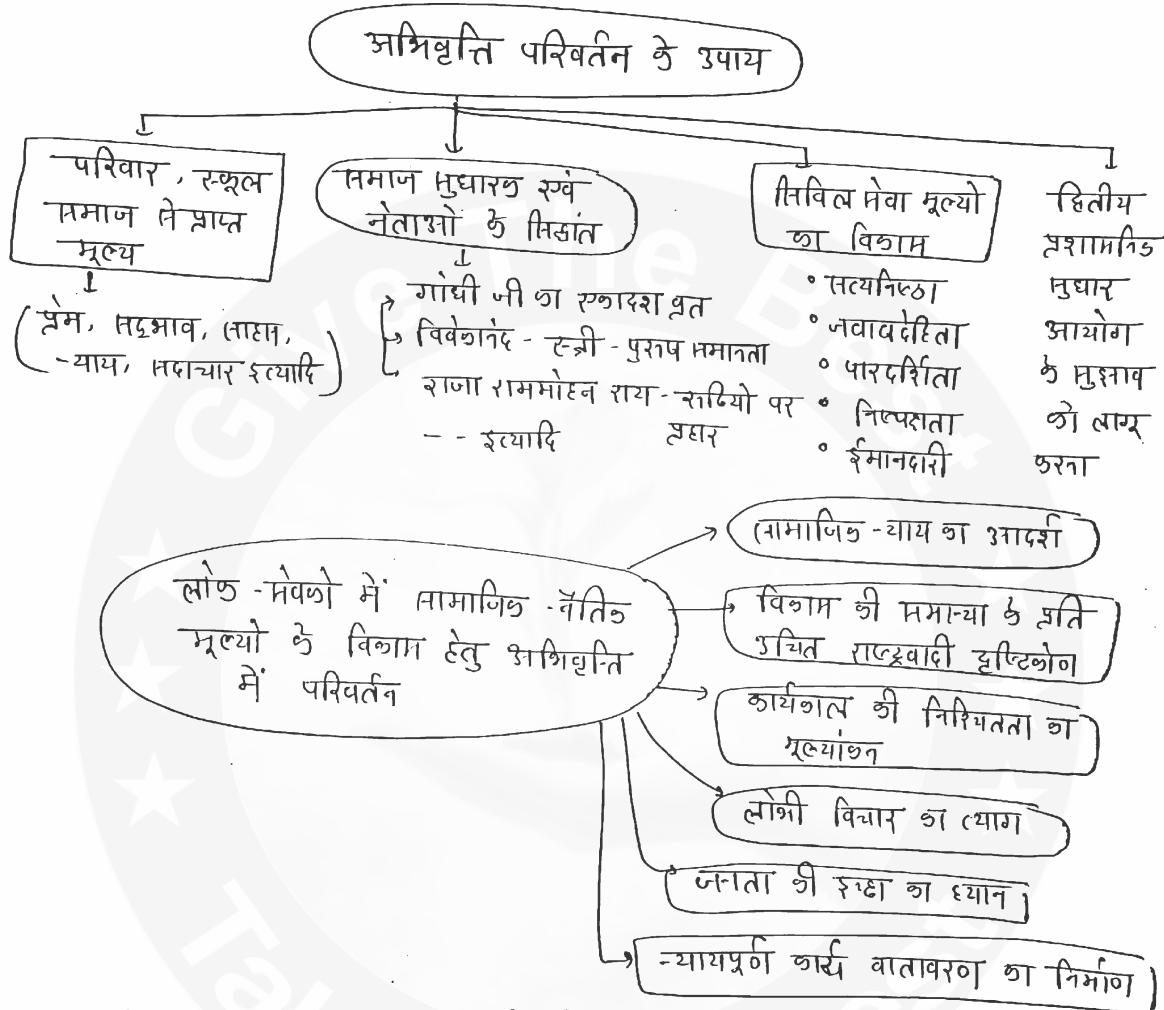


(Q) उपर्युक्त विक्रमो को निम्नलिखित उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं -

- 1) ग्लोबल इंजर गेप रिपोर्ट के आठड़े जो कि आधिक भागीदारी, शॉकिंग उपलब्धता, र-वार्ष्य रूप स्तरजीविता तथा राजनीतिक मशक्तिशरण जैसे पैमानों पर भागीदारित हैं, लैगिंग अभ्यास के उच्च स्तर को प्रकट करता है। यह विशित भारतीयों की रिक्वेशंप्रियों के प्रति नवाचारण का ही परिणाम है।
- 2) साम्प्रदायिकता (जैसे मौल लिंगिंग), दृष्टि तथा में प्रबंधित मामले हत्याएँ आदि जाति को लेकर लड़िगत अभिवृत्ति को प्रकट करता है।
- 3) धार्मिक आड़खरों में विवाह (जैसे अवधीमाला मंदिर में महिलाओं का शुद्धेश वर्जित छरना) नामकरण, उत्थेंजिट आदि पर अधिक रवैये।
- 4) वंचित वर्गों के प्रति दृश्य भाव न होना परिणाम इक बड़ी आवादी भूख ते मर रही है (ग्लोबल हंगर इंडेक्स) तथा इक होटी प्री आवादी सम्मि-विवाह, ट्योहार, जन्मदिन के अवसरों पर आंजन की वर्वादी कर रही है।
- 5) आधुनिक शहरी जीवन में वृक्षों को 'वृक्षात्रम्' का सदाचा लेना पड़ रहा है विभिन्न प्रश्नार के राजनीयों, रिपोर्ट उनकी दयनीय रिक्षति को व्यक्त करते हैं। यह विशित भारतीयों के परिवारिक मूल्यों के प्रति नवाचारण का परिणाम है।

(१२९)

- (b) अवांछनीय अभिवृत्तियों को निम्नलिखित प्रश्नाएँ से वस्ता जा सकता है -

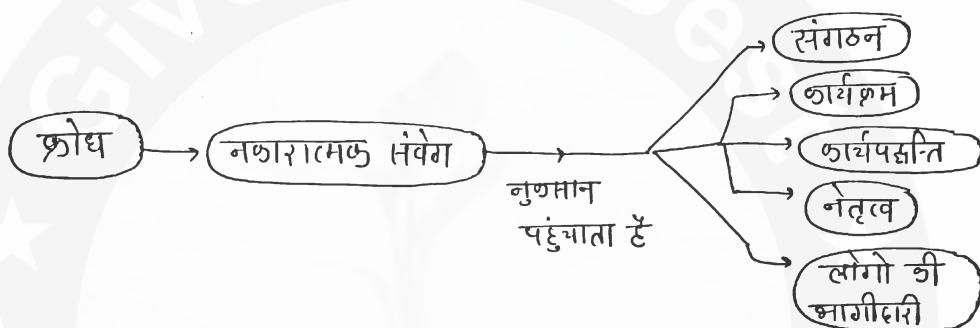


इसी प्रश्नार कुह अब दूर्यों को लागू किये जाने की आवश्यकता है
जैसा कि द्वितीय प्रशासनिक मुद्घार आयोग ने अपनी रिपोर्ट में सुझाया है-

- 1) संविधान की उद्दीपिता में स्थापित विविध आदर्शों के प्रति विष्णा।
- 2) नेतृत्व आभार समिति का गठन।
- 3) राजनीति में परे रहनेर कृत्य
- 4) निर्णय निर्माण में जवाबदी रूप पारदर्शिता
- 5) रखर्चो में मित्रव्यविता
- 6) गोपनीय दूर्यों को निजी दृष्टि में प्रभोग न करना इत्यादि।

- (Q) ^{(30) 40} 'क्रोध रुक्त दानिशारक नशारामक मंवेग हैं। यह व्यक्तिगत जीवन रखने की जीवन दोनों के बिच दानिशारक हैं।'
- चर्चा जीजिस कि यह जिस प्रभार नशारामक मंवेगों से और अवांछनीय व्यवहारों को पैदा कर देता है।
 - इसे कैसे व्यवस्थित रखने नियंत्रित किया जा सकता है।
- (2016)

a)

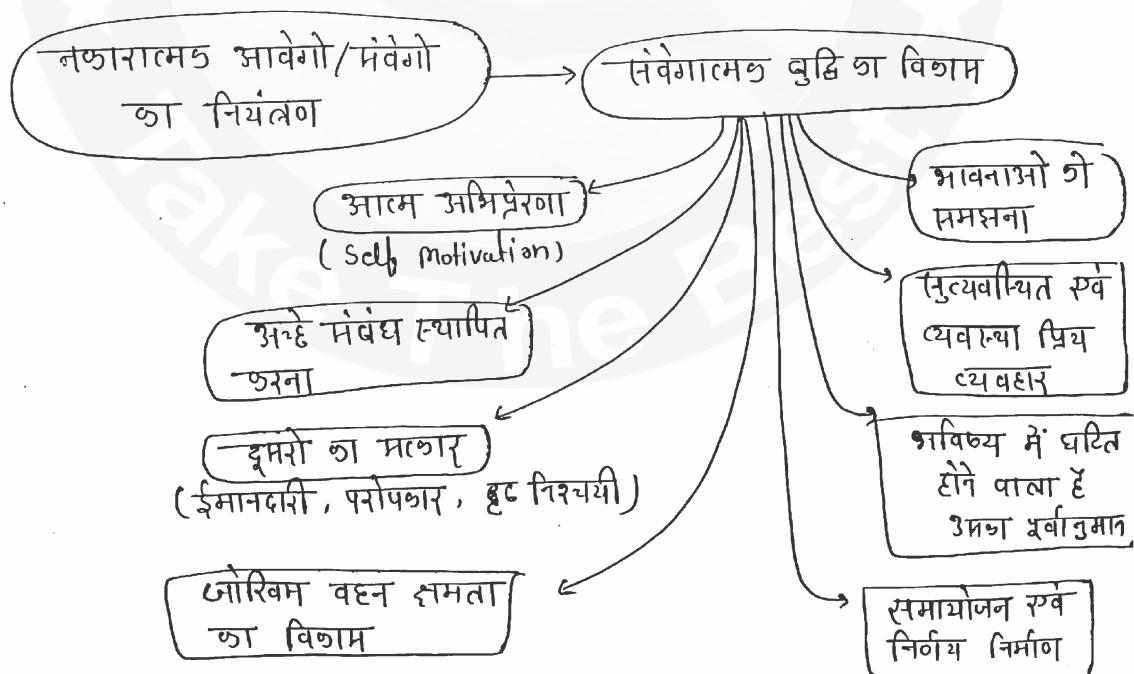


- महात्मा गांधी क्रोध के अवांछनीय व्यवहारों को प्रकट करते हुए कहते हैं - 'क्रोध और अमर्दिष्टुता सही समझ के रात्रु हैं।'
- क्रोध में होने पर व्यक्ति जहे व बुरे के मध्य, उचित व अनुचित के बीच विशेष नहीं भर पाता, जिसका परिणाम नशारामक रूप से संगठन व व्यवहार में दिखाइ होता है, जैसे -
- पूर्णामनिष कियाओ पर नशारामक प्रभाव जैसे वरिष्ठ का उनिष्ठो के सुझाव को दरछिनार करना।
 - जातीय दंगे, धार्मिक दंगे, मौखिक लिङ्ग की घटनाओं में बढ़ोत्तरी, आतंकवाद, नक्षत्रवाद
 - महिलाओं के विरोध दिंसा, यौन उत्पीड़न
 - राजनेताओं के अर्थादित वंकतत्व
 - नीतिगत अद्वितीयता जैसे द्रेप ब्राह्मणों के बाहर होना, संरक्षणवाद उदादि।

- (ii) 6) मानवाधिकारों का उल्लंघन।
 7) अतिव्याय नागरिकीय परीक्षण जैसे - उत्तर शौरिया छारा छिये गये परमाणु परीक्षण।
 8) अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद के विवाह रख राय न देन पाना जैसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में चीन के विरोधी मत।
 9) पर्यावरणीय संकट, संसाधनों पर केन्द्रीकरण की होड़ परिणामतः उल्लेखन वार्मिंग का बढ़ता स्तर तथा जैवविविधता पर मंकट।

इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में देश के अंदर अलग-अलग विचारधाराओं व मान्यताओं द्वारा मानने वाले लोगों के बीच समस्तिष्ठिता का भाव देखने द्वारा भिन्नता है जो कहीं न कहीं हेशा भी रुक्ता रुक्ते मतत विद्याम की अवधारणा जो कमज़ोर बनाता है।

- b) कौद (नकारात्मक मंवेगों) को रोकने के उपायः-



(32)

इनके उत्तरिक्त भव्य उपायों को लागू करना -

- 1) भारतीय नेतिः दर्शन वेद, उपनिषद्, पुराण के मूल्यों को धारण करना जिनमें 'समात इंद्रियों के नियंत्रण', जा आदर्श अस्तुत लिया गया है। जैसे- गीता - निष्ठाम उर्मि घोग एवं 'स्थितप्रभृत' जा संदेश पूर्ण करती है।
- 2) भारतीय धार्षानिः एवं विचारणों के मूल्य जैसे- महात्मा बुद्ध के अम्बिनि उपर्यांगिः मर्म (विचारों एवं ज्ञान की पवित्रता आदि) जैसे धर्म जा किरण एवं पंचमहावृत् आत्मसंयमी होने की शिक्षा पूर्ण करते हैं।
- 3) इसी पूर्ण गांधी जी जा राजाद्वा वृत्, सुखरात् के नेतिः जीवन और उपदेशों के दर्शन (मत्य की त्वेज), अरत्कृ के नेतिः विचार (संयम, साधनी, न्याय आदि) आदि बुद्धि एवं भावना में समन्वय की शिक्षा पूर्ण करते हैं।

(Q) देश में महिलाओं के बृति योनि-उत्पीड़न के बढ़ते हुए ③७
दृष्टिकोण से विवरित करें। इस कृष्टिय के विरास्त विधान
विधिन उपबंधों के होते हुए भी, ऐसी आवानाओं की संख्या
बढ़ रही है। इस संकट से निपटने के लिए कुछ नवाचारी
उपाय मुश्खला?

Ans -

नेशनल काइम रिकॉर्ड ऑफरिंग

महिलाओं के विरास्त
योनि-उत्पीड़न के सामने
में बढ़ती

(2015 की अपेक्षा 2016 में
12.4% मामलों में घट्टि)

इस संकट से निपटने हेतु नवाचारी रणनीति

1) नेत्रिका मूल्यों का विकास

- परिवार, स्तर, समाज द्वारा महिलाओं के बृति सम्मान भाव, धैर्य, सेयम, स्ट्रेम आदि मूल्यों का विकास करना।
- स्त्रीली पाठ्यक्रमों में नेत्रिका विद्या को अभिवाद्य बनाना।
- मीडिया (फ्रिंट, डिनिटल, मोशल) के माध्यम से महिला सुरक्षा के बृति साकारात्मक मूल्यों का विकास।

2) महिलाओं के बृति साकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण -

- सरकारी, गैर सरकारी संगठनों द्वारा पंचायतों में नियमित नार्यवालाओं का भागीदारी।
- प्रिवेट सोसाइटी, सननीओ, लोक सेवकों द्वारा माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकारों के बृति जागरूक करना।

(३५) c) विवेशनंद, गोंधी, सुश्राव, मदर देरेसा आदि के मूल्यों का समाज में पूचार-पूसार।

3) भावनात्मक समझ का विषय :-

- (a) महिला वर्कशॉप रखे पूर्विकाण।
- (b) पाठ्यपुस्तकों में महिला संबंधी मुद्दों को नाट्यकला में प्रस्तुत करना।
- (c) परम्परा, रीति-रिवाज व मान्यताओं के नियारात्मक पद्धतियों के बहुत जागरूक करना।
- 4) महिलाओं के पृति पुरापो की नियारात्मक अभिहासिता का विषय -
- (a) पूर्विकाण रखे अनुकूल वातावरण उपलब्ध छरोड़र
- (b) महिलाओं की आगीकारी को बढ़ावा देणा।
- 5) सुरक्षा संबंधी उपाय :-
- (a) रक्षा, कॉलेजों में 'गर्भ मेल' का गठन, जहाँ आत्मरक्षा (self defence) के लिये पूर्विकाण शिया जाए।
- (b) नार्वेजनिक रक्षा, परिवहन साधनों में 'पैनिक बटन' का उपयोग।
- (c) महिला पुलिस वालंटियर को पूर्विकाण छरना।
- (d) महिला रखे बाल विषय मेलात्मय की योजनाओं, जैसे; वन स्टाप मैर्टी, सुरक्षित राहर परियोजना, श्री-बॉक्स आदि को नियमे हतार तक लेजर लाना।

५ समझौते से द्वृष्टि रूप से इनकार करना सत्यनिष्ठा की एक परवर्ती है। इस संबंध में वास्तविक जीवन में उदाहरण देते हुए व्याख्या कीजिए। (36)



“ सार्वजनिक पद पर बैठे व्यक्ति को
ऐसे भिन्नी समझौते से दूर रहना / इनकार करना
चाहिए जो संगठन या सार्वजनिक वार्षिकीय
को विपरीत रूप में प्रभावित करे। ”

इसी संबंध में वारेन बफेट का विचार है कि -

“ भिन्नी संगठन के लिये बुलिमिता रूपं ऊर्जा आवश्यक है जिसके साथ सत्यनिष्ठता का भभाव संगठन को समाप्त कर सकता है। ”

उदाहरण :- कर्मचारी या अधिकारी का वेतन कम होना, जिनी जरूरतों को पूरा कर पाने के कारण कर्मचारी या अधिकारी, पारिवारिक व सामाजिक दबाव में उन्नेतिषु आचरण (भूष्याचार आदि) करने के लिये विवश हो जाता है।

जिस एक सत्यनिष्ठ प्रशासन अपने लक्ष्यों के द्वारा से भिन्नी पूछार का समझौता नहीं करता। ऐसे उनके उदाहरण हैं -

(1) मेंट्रो - मैन ई - शीघ्रन ने नीत्यामी पृष्ठिया को ओपन (फॉन) कर पृष्ठिया को पारदर्शी बनाया न कि समझौता कर नीत्यामी पृष्ठिया कुछ लोगों के हाथों में पौंपी।

(3) 2) गांधी जी ने चृपने मिसांतो सत्य, महिंसा, मादहयोग,
निविनय मवज्जा आदि का मनवरत पातन किया। भ्रंगेजो
द्वारा झनेक पूछार मे लालच दिये जाने के बावजूद झोने
समझौता नहीं किया।

3) इसी पूछार जे० पी० जांशीलन, उन्हाँने जांशीलन
सत्यगिष्ठता का प्रतिमान पूर्णतुत करते हैं।

- नोबन समिति ने सार्वजनिक पद पर जातीन लोगों के नेतृत्व मानदण्डों की रखापना हेतु 'सत्यगिष्ठा' को अमाधार श्रृङ्खला अधारशृङ्खला मूल्य माना है।
- इसी संदर्भ में द्वितीय तृक्षामनिक पुष्टार उमायोग ने झनेक फिकारिशो पूर्णतुत की है -

 - 1) संविधान की उद्देशियका में रखापित जादरों के द्वाति निष्ठा।
 - 2) राजनीति से परे रहकर कार्य करना।
 - 3) उद्देश्यपूर्णी और गिष्पक्षता से भाग उठना।
 - 4) निर्णय निर्माण में जवाबदी रूप सारदर्शिता।
 - 5) रख्यों में अनियतिता लाना।

(Q) वर्धित राज्यीय संपत्ति के लाभों का न्यायोचित वितरण नहीं हो सका है। इसने "बहुमत के नुकसान पर केवल होटी अल्पसंख्या के लिए ही आधुनिकता और वैभव के रूपकल्प" बनाया है। इनका औचित्य सिल छीनिया। (2017) (38)

Ans -

1) हाल ही में जारी आक्सफॉर्म रिपोर्ट में कहा गया कि भारत के कुल धन में 73% धन मध्यम 1% जमीरो के पास है। प्रमिल अर्थशास्त्री योग्यता पिक्चरों ने भी यह माना है कि भारत में आय की मध्यमानता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

2) इसके जतिरिक्त अन्य रिपोर्ट जैसे ग्लोबल हंगर इंडेक्स मादि भारत की बड़ी आवादी की वेचना को प्रदर्शित करती है जिसमें अनुमोदित जाति, जनजाति, विकलांगों, अल्पसंख्यकों मादि की स्तरता प्रधित है।

3) यदि हम लगातार आरक्षणीयी तरफ बढ़ रहे हैं जबकि आर्थिक विकास पर भव तथा उच्च पायदान को प्राप्त कर रही है तो यह स्थिति सामाजिक वेचना को प्रदर्शित करती है।

उपर्युक्त स्थिति के निम्नलिखित फारन हैं-

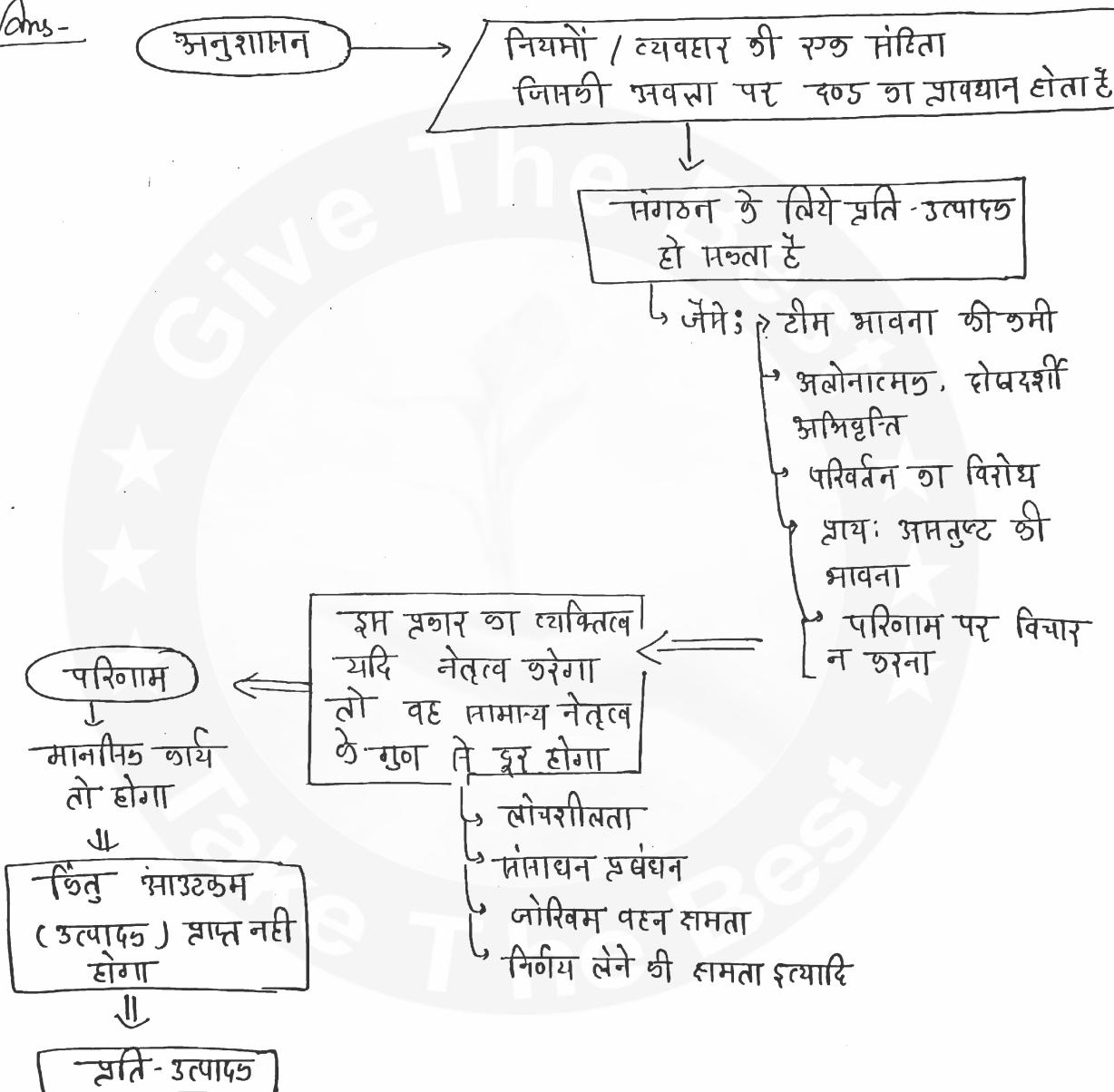
- (1) सर्वजनिक पदों पर व्यावसायिक मध्यमता पर नेतृत्व का अभाव जैसे - गुणवत्ताविधि शिक्षा, मध्यमी स्वास्थ्य सुविधा, भूष्टाचार, इत्यादि।
- 2) राजनीताभी वा गांधी के मूल्यों से विमुख होना, परिगाम राजनीति वा अपनाधीरण, भाई-भतीजावाद, अमानवीय व्यवहार मादि।
- 3) व्यवसायियों द्वारा गांधी जी के दृष्टीरूप वा पालन न करना तथा कॉरपोरेट सोशल इम्पॉरिमेंटिटी में डाल्टन भागीदारी।

(३७) ४) लोक सेवको में मिशन सेवा मूल्यों का अभाव (सत्यमित्ता, जावाबदीता, निष्पक्षता, पारदर्शिता आदि) तथा जाम, क्रोध, लोभ जैसे मूल्यों की अधिकता।

भारतीय संविधान में नीति निर्देशन तत्वों में मनुष्टेद उपर्युक्त राजीय सम्पत्ति के याचिकाने की वितरण की संलग्नता की गयी है जिसके अनुसार इसका वितरण के अभाव, लोगों में जागरूकता की उमी आदि कारणों से राज्य सम्पत्ति को वहन नहीं पा सकता।

Q अनुशासन में तामाच्यतः आदेश पालन और अधीनता निर्दित हैं, किर मी यह संगठन के लिये स्वति-उत्पादक हो सकता है। चर्चा कीजिए? (2017) 10

Ans-



(६)

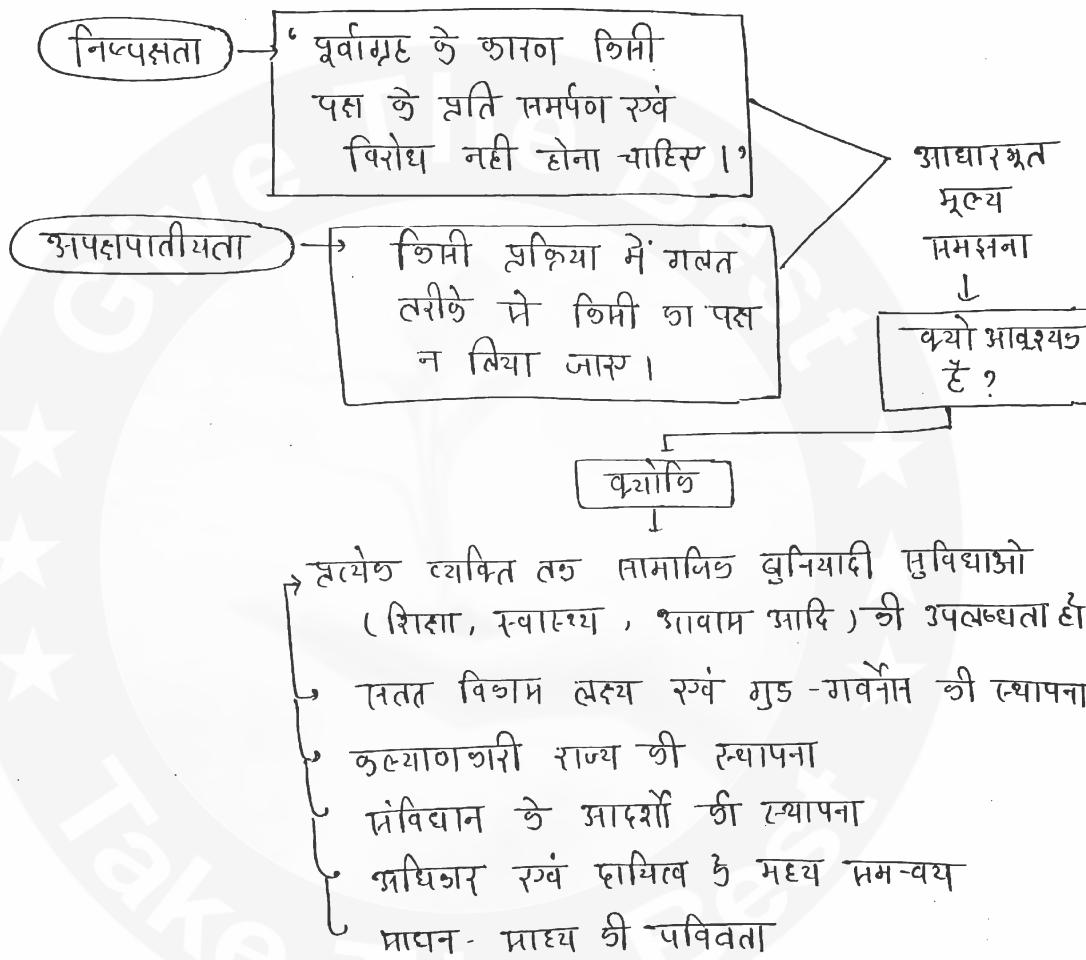
उपर्युक्त घटवित रिपोर्ट को रुक्त कुमार गांगांगन के मानाग में समझने का व्याप उत्तर है -

उदाहरण :- “रुक्त अधिकारी जो उत्तराधिकारी कुमार गांगांगन हैं तथा उन्हीं भी नियम का उल्लंघन किए गए परिणाम में कानूनी ढीक नहीं समझता। रुक्त शोजेकट पर अपनी दीका के माथ कानूनी कानून कुरना चाहता हैं तिन्हुं उसके अति जानुरामनिक नियंत्रण के कारण वह अपनी दीका में उपर्युक्त संप्रैक्षण स्वापित नहीं भर पाता। न ही उनकी समझाओं रुक्त गांगांगन के मानाग में भूमाल करता है। परिणामतः उनकी व्यवहार में सभी दीका के मानाग कानून को करते हैं परंतु उपर्युक्त १००% नहीं देते और अंततः व्योग्यकरण मानाग रहता है।”

अतः इच्छा अधिकारी को गांगांगन के नियंत्रण के अधिकारी व उमियारियों को अधिकृत भरे, उनके विचारों को जाने समझे, दीका भावना में कार्य करे, विसमें व्येतर कार्य संकृति का निर्माण हो और इत्यादिता भी मानागाल के रूप में बढ़े। इसी संदर्भ में द्वितीय घशामनिक सुधार गांगांगन के अनेक असारियों स्वत्तुत भी हैं -

- 1) महत्वपूर्ण मामलों में विर्णीय लेने का कानून किसी व्यक्ति विशेष को सौंपने की बजाए रुक्त अभियानिकों को दिया जाना चाहिए।
- 2) ‘कार्यों के रक्खाधिकार’ के उत्तिष्ठकों के माथ सेयगित किया जाना चाहिए।
- 3) स्वयना व्योग्योगिकी के माध्यम से विशागीय अधिकारियों के माथ व्येतर सम्बन्ध स्वापित करना।
- 4) नागरिकों की भी भूमिका सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- 5) अभियानियों के संघर्ष को अधिकारियों के लिए नेतृत्व संदित्ता और आचार संदित्ता में विस्तृत रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

Q क्या लाभ है कि निष्पक्षता और अपक्रपातीयता को लोक सेवाओं में, विवेषकर वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक प्रवर्द्धन में, आधारशृंखल्य तमसना चाहिए? अपने उत्तर को उदाहरणों के साथ सुरक्षित लीजिए। (2016) (51)

Ans.

- स्वत्येषु व्यक्ति तथा सामाजिक बुनियादी सुविधाओं (शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास आदि) की उपलब्धता हो,
- ऐसा विभाग लक्ष्य रखें गुड-गवर्नेंस की स्थापना
- कल्याणशाली राज्य की स्थापना
- संविधान के जादर्शों की स्थापना
- न्यायिक रखने साथित्व के मध्य सम-वय प्राप्ति-प्राप्ति की परिवर्तना

वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक प्रवर्द्धन के कुछ नकारात्मक बिंदु हैं जो निष्पक्षता रखने वाली अपक्रपातीयता को आधारशृंखल्य मानने पर बत्ते हैं -

- (१७) उदाहरण :- 1) नेशासन में भूज्याचार (भूज्याचार बोध सूचींत्र)।
- 2) नॉक्युरशाई का राजनीतिकरण (स्थानांतरण, पदोन्तति, तेनाती के लिए राजनीतिक्षो से समझौता)।
- 3) रवेंद्रा रवे मनमानीपूर्ण न्याय व्याख्या।
- 4) भपराध का राजनीतिकरण (17वीं लोकसभा में लगभग 35 से अधिक सांसदों के विरोध आपराधिक सामले हैं)
- 5) अभिननवादी भावना, भर्ती व व्यक्तिगत शी व्यवहारी व्याख्या।
- 6) विशेषज्ञ बनाम समान्यज्ञ जैसे - यह और तकनीकी विधियों के विषयों के ज्ञानों को उनसे संबंधित होकरों में वरीपता दी जा रही है इसी तरफ सामान्य अधिकारी द्वारा भी नेशासन का विशेषज्ञ मिल लेने को उत्सुक है।
- 7) सामानिक आममानता (आकस्मैन रिपोर्ट), महिलाओं की राजनीति - नेशासन में युन भागीदारी, -- इत्यादि।

॥

उपर्युक्त नकारात्मक विंदुओं का परिगाम -

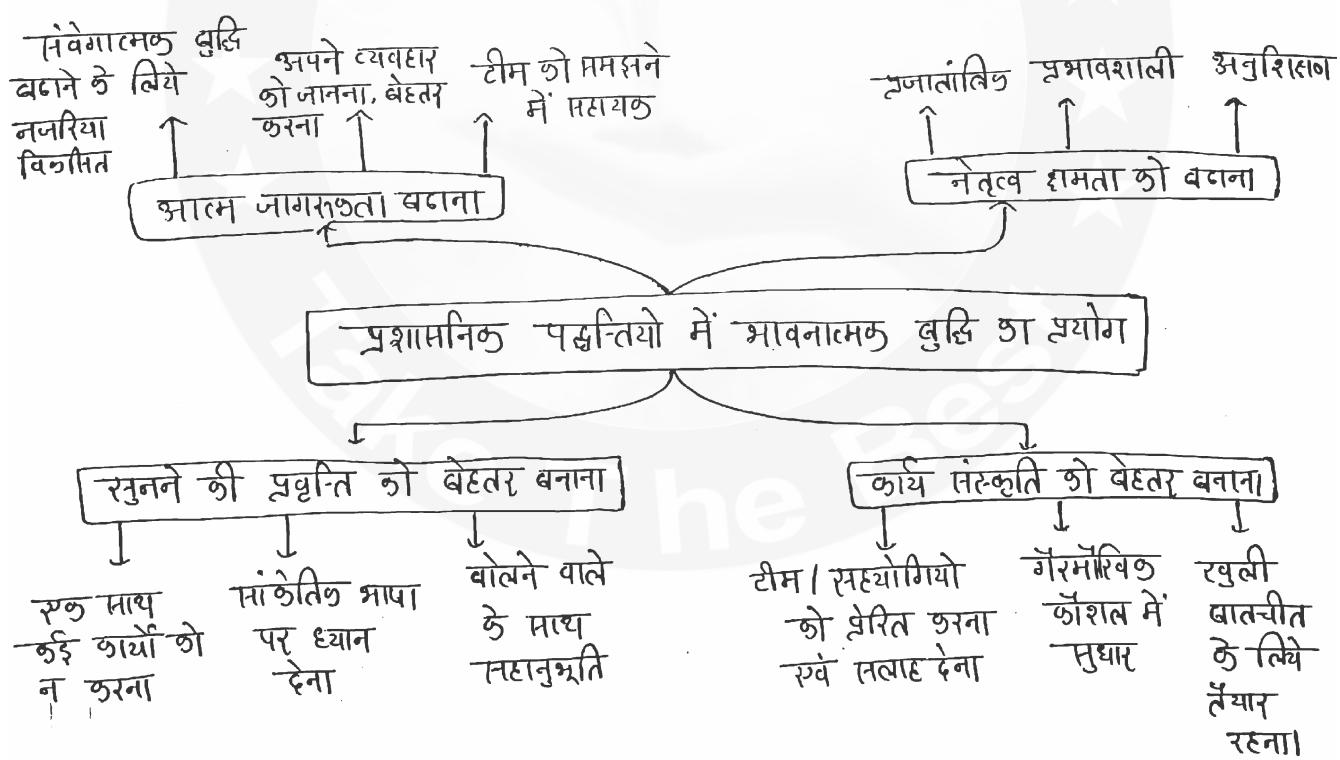
उदाहरण के लिये - यदि यह मनद्रर जो उसके नियोक्ता हारा व्या डेक्केदार हारा उचित व निर्धारित मनद्ररी नहीं ही जाती है और वह मनद्रर उल्केक्षेट में न्याय के लिये शापन देता है जोर यह तिविल सेवक उस मनद्रर के पास में न रखा होकर उस नियोक्ता का पास लेता है तो यह सामानिक न्याय भी मंजूल्यना जो पूर्ण नहीं कर पायेगा तथा समावेशी विभास हृषिया जो हानि पहुँचेगी। अतः निश्चय निष्पक्षता और अपक्षपातीयता जो आधारश्वत मूल्य समझना चाहिए।

इसी संदर्भ में हितीय प्रशासनिक सुधार ज्ञायोग ने लोछ मेवको हैत्य
भिन्नविवित सिफारिशों की है - (53)

- 1) संविधान की उद्देशिया में रूपापित विविध ज्ञादर्शों के प्रति निष्ठा।
- 2) राजनीति से परे रह और कृत्य।
- 3) सर्वानन्दनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव।
- 4) निरीय निर्माण में जवाबदेही रखें पारदर्शिता।
- 5) 'लोछ मेवा मूल्यों' को परिभाषित करना तथा उद्देश्यकर्णी रखें निष्पक्षता से काम करना।

UNST- 4th

Q प्रशासनिक पक्षितियों में भावनात्मक बुद्धि का आप छिन तरह
पूछोगा जुर्गे ?



(५) वृशासनिक पक्षियों में भावनात्मक बुद्धि के स्थोग को ऐसे अध्ययन के माध्यम से समझने वा प्रयास करते हैं -
(पुराष)

Case :- कर्मचारी 'A' और कर्मचारी 'B' (महिला) जिनी उपनी में कार्यरत हैं। कर्मचारी 'A' की उत्पादकता पर उपनी अत्यधिक निर्भर है। ऐसे दिन कर्मचारी 'B', 'A' के विरोध योन दिंसा की शिकायत दर्ज करती है और जाथ ही अपना इन्टीफा भी वस्तुत करते हुए कहती है कि वह 'A' के रहते उपनी में लाम नहीं कर सकती। उपनी रियति में यदि मैं इस उपनी वा निदेशालू होता / होती तो निम्न प्रश्न में अपनी भावनात्मक समझ वा परिचय होते हुए निर्णय करता / ती.

- 1) सर्वप्रथम महिला (B) को यह अश्वामन जी शीघ्रातिमीथु रुज अंतरिक्ष लोर क्षेत्री छारा मामले जी जांच जी जारगी तथा तल्लालीन रूप से उहे भावनात्मक समर्थन दृश्यन करना कि उपनी उनके जाथ है।
- 2) जांच प्रक्रिया के छारा गिरणपि तज पहुंचा जा सकता है कि वस्तुतिंथति क्या है। यदि मिर्टर 'A' होषी पार्स जाते हैं तो उहे तल्लाल प्रभाव से इन्टीफा होने के लिए दबाव बनाया जारगा। क्योंकि बुद्धिमत्ता, जर्जी, उत्पादकता के जाथ यदि मंगठन के प्रति प्रत्यनिष्ठा नहीं है तो मंगठन का विनाश ही सकता है।
- 3) यदि 'B' होषी पायी जाती है तो उहे तल्लाल प्रभाव से सेवा मुक्त किया जायेगा जोकि उनके चारिक्रिय प्रमाण पत्र में भी इस बात जी अनुशासा की जारगी।

उन्होंने प्रश्नार्थियों को भी यह संदेश दिया जारगा कि उपनी अपने प्रश्नामन के साथ वैतिक आचरण जो भी महत्व होती है।

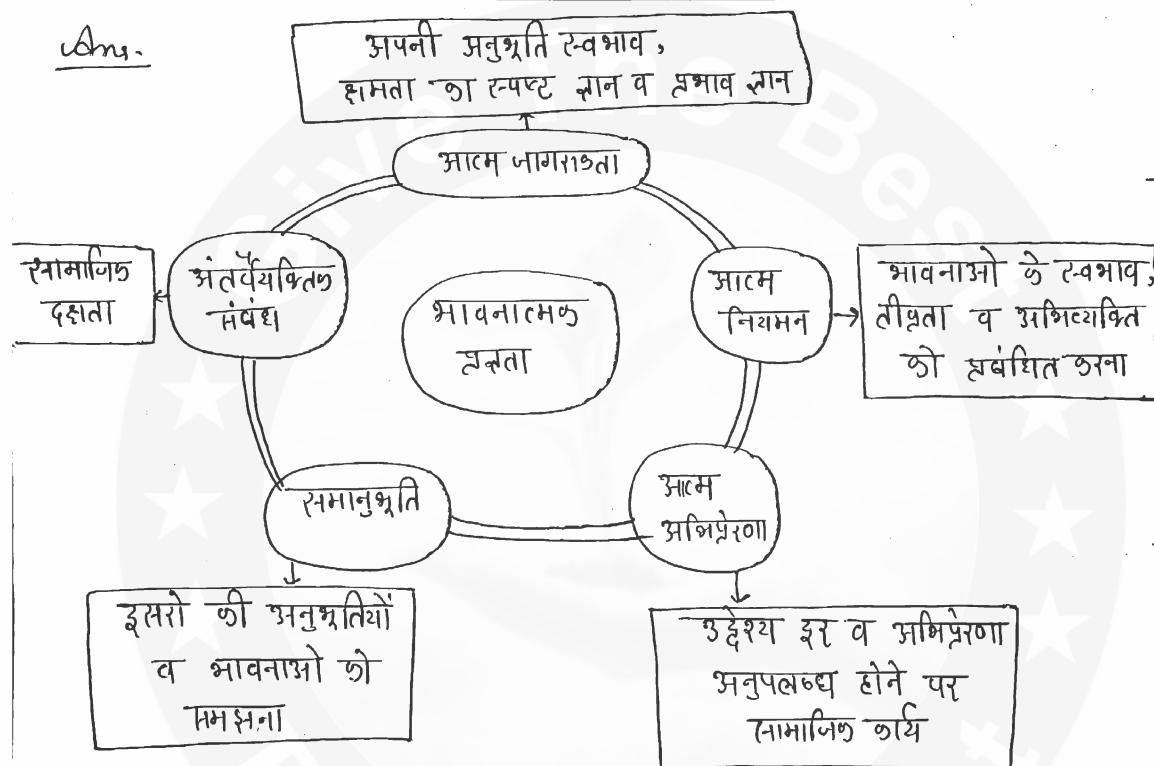
(५९) वृशासनिक पक्षितयों में भावनात्मक बुद्धि के स्वयंग को ऐसे अध्ययन के माध्यम से समझने वा प्रयास करते हैं-

(पुराष)

Case :- कर्मचारी 'A' और कर्मचारी 'B' (महिला) जिनी उपनी में कार्यरत हैं। कर्मचारी 'A' की उत्पादकता पर उपनी अव्यधिक निर्भर है। ऐसे दिन कर्मचारी 'B', 'A' के विशेष योग्यता की शिकायत दर्ज करती है और जाथ ही अपना इन्टीफा भी वस्तुत रहते हुए रहती है जिसके बाहर 'A' के रहते उपनी में छाम नहीं कर सकती। यही विचार में यदि मैं उस उपनी वा निषेशान् होता / होती तो निम्न प्रश्न में अपनी भावनात्मक समझ वा परिचय हेते हुए निर्णय करता / ती-

- 1) सर्वप्रथम महिला (B) को यह अश्वासन जी शीघ्रातिसीधु रुक्ष अंतरिक्ष को उभेड़ी छारा मामले जी जारगी तथा तलाकीन रूप से उन्हें भावनात्मक समर्थन प्रदान करना जिसकी उपनी उनके जाथ है।
 - 2) जो वृक्षिया के छारा निष्ठित तर पहुंचा जा सकता है जिसके वस्तुतिथाति प्रया हैं। यदि मिस्टर 'A' होषी पाए जाते हैं तो उन्हें तलाल प्रभाव से इन्टीफा देने के लिए दबाव बनाया जारगा। क्योंकि बुद्धिमत्ता, जर्जी, उत्पादकता के जाथ यदि मिंगठन के तृतीय मत्यनिष्ठा नहीं हैं तो मिंगठन वा विनाश ही सकता है।
 - 3) यदि 'B' होषी पायी जाती है तो उन्हें तलाल प्रभाव से निवारण किया जायेगा और उनके चारिबिक्षु प्रमाण पत्र में भी इस बात जी मनुशंसा की जारगी।
- उन्हें अपूर्वार्थी जो भी यह संदेश दिया जारगा जिसकी उपनी अपने वृशासन के जाथ वैतिक आवरण जो भी महत्व देती है।

Q1 'भावनात्मक प्रत्यक्षता' (Emotional Intelligence) क्या होता है और यह लोगों में इस प्रश्नाने विशेषता क्या होती जा सकता है? इसी व्यक्ति विशेष को नेतृत्व निर्णय लेने में यह कैसे आवश्यक होता है? (2013)



भावनात्मक प्रत्यक्षता को लोगों में निम्नलिखित रूप से विशेषता किया जा सकता है -

- 1) परिवार, स्कूल, समाज से बाहर मूल्यों (मित्रता, सहयोग, सेवा, परापरार, त्याग, न्याय आदि) का पिछाना कर।
- 2) स्कूली पाठ्यक्रमों में दर्शानी एवं समाज सुधारकों के विचारों एवं उनका जीवन परिचय शामिल कर। (जैसे - गांधी जी का राजनीति विचार, सुश्राव के 'सत्य शीखों आदि)

(Q) 3): सीडिंग (प्रिंट, डिजिटल, सोशल) रखे संचार के मध्य साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान द्वारा तथा मनवीकृत सम्प्रेषण का विभास उठें।

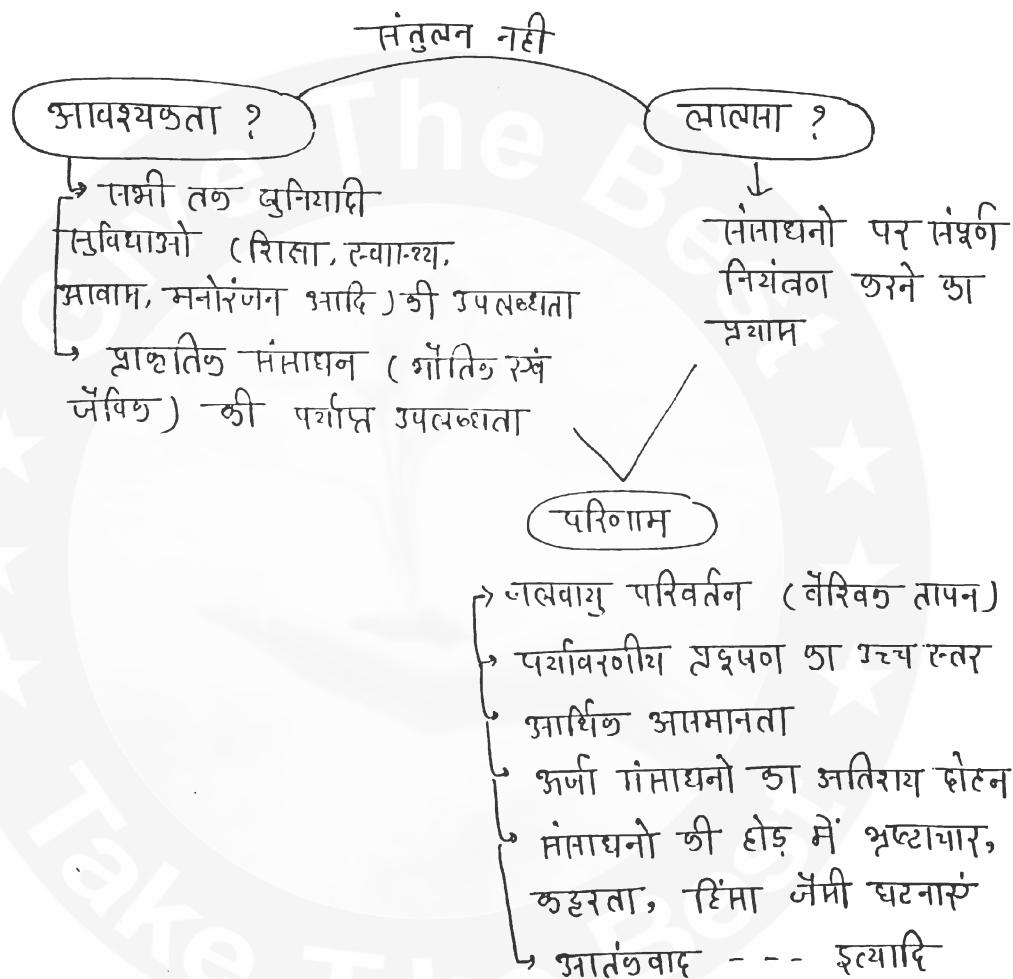
- 4) आरतीय दर्शन (वेद, पुराण, उपनिषद् आदि) के मूल्य जैसे 'गीता' वा 'निष्ठाम् तर्म् योग', धूराधार्थी (धर्म, मर्दी, ताम, मोहा) की शिक्षा, पर्णात्रम् धर्म आदि वा ज्ञान उत्तराधार।
- 5) साधन रखे साइबर की परिचर्ता वा बोध उत्तराधार।
‘मावनात्मक सूक्ष्मता’ व्यक्ति विशेष को नेत्रित्व निर्णय लेने में निम्नलिखित रूप से सहायता होता है -

 - 1) सामाजिक संबंधों के छोशाल वा विभास जिसमें किंगगत रखे जातिगत शोदधाव को रोकने में सहायता प्राप्त होती है।
 - 2) संचार रखे समय संबंधन वा छोशाल जिसमें कम संसाधनों में अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सके।
 - 3) विश्वास छोशाल वा विभास परिणामतः नागरिकों वी कल्याणजनी योजनाओं में शामिल कर गुड-गवर्नेंस वी स्थापना उठाना।
 - 4) तनाव सहने के छोशाल वा विभास जिसमें जिसी भी सूक्ष्म नुकसान को इसरो पर न जलाये बल्कि उसमें बेहतर रूप से नियंत्रित उठाना।
 - 5) टीम भावना तथा संगठन निर्माण छोशाल वा विभास जिसमें अप्स्टाचार जैसे अनेत्रित व्यार्थों पर रोक लगाना साथ ही बेहतर कार्य संस्थापना का निर्माण उठाना।

यूनिट-5:

**भारत तथा विश्व के नैतिक
विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान।**

a) “पृथ्वी पर हर रुकुशी आवश्यकता इस्ति के लिए जाफी हैं पर निमी के लाभक के लिए उष्टु नहीं।” (महात्मा गांधी)



अर्थ → महात्मा गांधी के मनुमार वृक्षति सभी की आवश्यकताओं की इस्ति करने में सहम हैं क्योंकि वृक्षति भ ने संसाधनों का निर्माण इस पृष्ठार लिया है कि परिवर्तितीय तंत्र में रुकु संतुलन बना रहे। लेकिन मनुष्य ने जपने लोभ व अधिकता अधिक धन संपद स्थलित करने की ईच्छा के बारण वृक्षति को असंतुलित किया है।

(५)

वर्तमान स्थानंगिता

वैरिक उत्तर पर

भारत में

- अर्जी संसाधनों का अतिशय होषन परिगाम ब्रोबल वार्मिंग जैसी समस्याएँ
- संसाधनों की लड़ाई ने ही द्वितीय विश्व युद्ध जैसे मानवता को हति पहुंचाने वाली घटनाओं को जन्म दिया।
- नाशिकीय परीक्षण जैसे उत्तर भौतिक द्वारा दिये गये परमाणु परीक्षण जो पृथक् रूप मानवता को के द्वानिकारक हैं।
- व्यापारिक लाभ पर राजाधिकार स्थापित करने का प्रयास (मंसानवाह, ड्रेक वार, मुद्रा चालबाजी इत्यादि)
- क्षेत्र विबोध पर राजाधिकार स्थापित करने के द्वारा (दृष्टि अक्षीय मंडल, प्रीरिया मंडल सम्बन्धित मंडल जादि)

‘लालमा’ की इस पृष्ठभूमि में गांधी जी का कथन स्थानंगित है, जो कि संघारणीय विभास के सतत विभास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

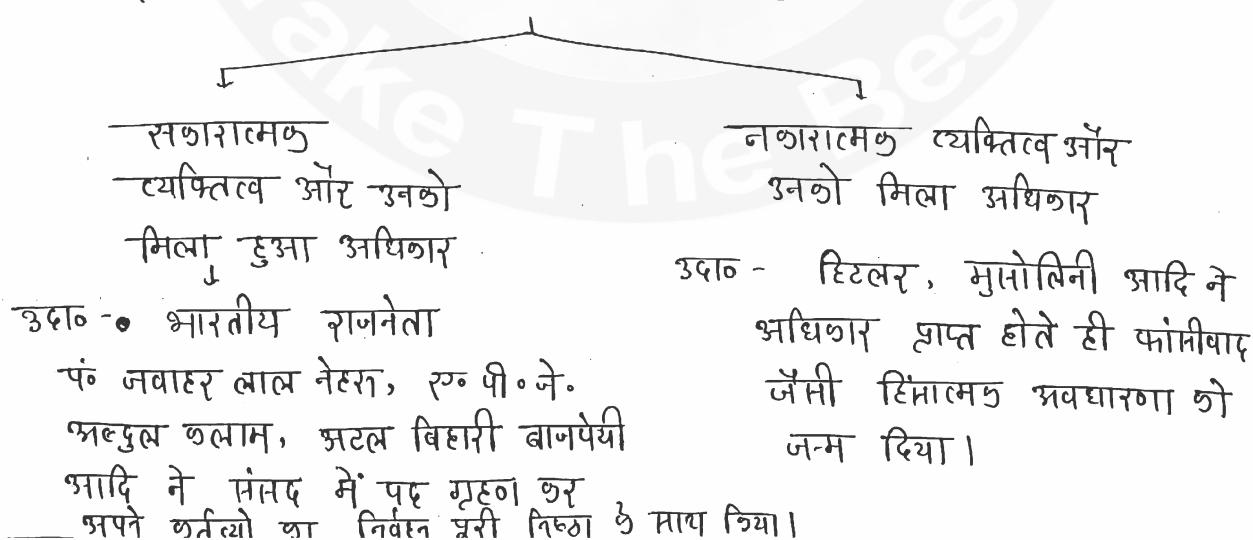
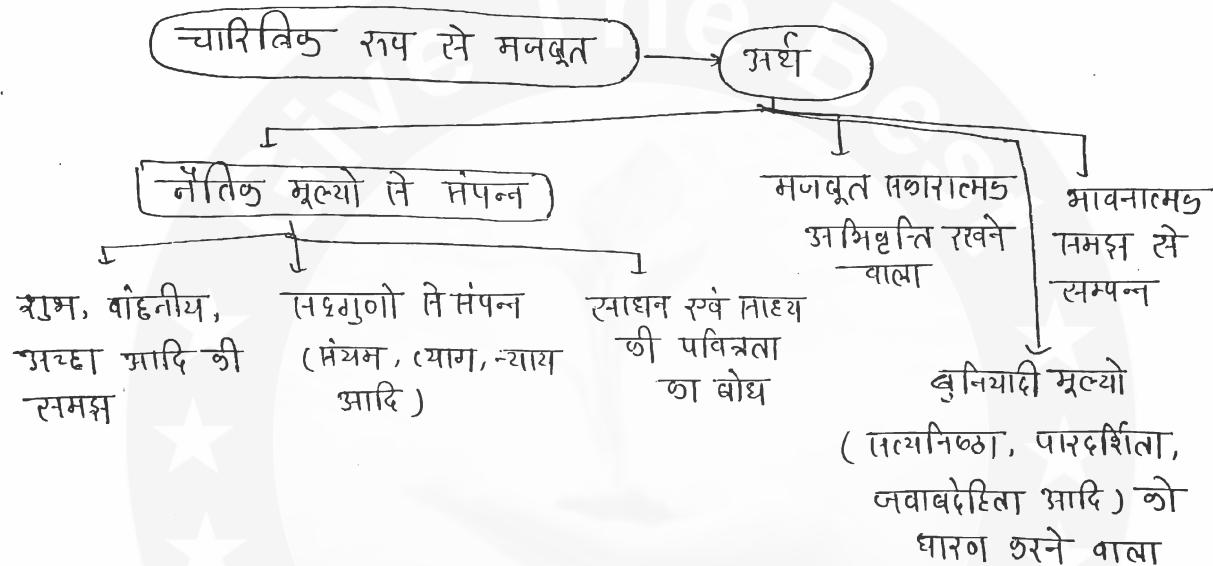
- आर्थिक असमानता जा उच्च उत्तर (भाक्सफॉम रिपोर्ट)
- संगठन रूप व्यक्तियों द्वारा उत्पन्न में छिया जा रहा अर्थ जैसे - विनय माल्या, मेहुत चौधरी हारा छिया गया धोटाला,
- उर्वेद वनों की उर्द्दी, रकनन में श्रमिक जा बड़ा दिस्ता बंजर
- जल की अतिशय बर्बादी में ५३ ते अधिक आबादी जल संकट का सामना कर रही है (WHO रिपोर्ट)
- व्यापाराधिक नीतियों के अभाव में उभोगपत्रियों द्वारा पर्यावरणीय मानदंडों का उल्लंघन परिगामतः पृथक् रूप स्थान तथा गंभीर बीमा रियो का जन्म।

अतः निम्नलिखित राजनीति अपनाएं जाने की आवश्यकता है - (56)

- 1) गांधी जी द्वारा बताए गए 'जात - समाजिक पापों' के मिळांत को मानते हुए नेतृत्व का अनुपालन जैसे -
 - बिना मिळांतो के राजनीति
 - बिना शाम के धन
 - बिना नेतृत्व के व्यापार -- इत्यादि।
- 2) साधन रखने साध्य की परिवर्ता और द्यान रखना तथा संदेव रखना निर्णय लेने का व्यापार छरना जिसमें 'अधिकृतम् व्यक्तियों का अधिकृतम् सुख' सुनिश्चित हो।
- 3) संवेदानिक जादशो, मूलअधिकारों रखने की उत्तम्यों का अनुपालन।
- 4) राजनेतृत्व नेतृत्व, भंतराष्ट्रीय नेतृत्व, पर्यावरणीय नेतृत्व, व्यष्टसाधिक नेतृत्व जादि का अनुपालन।
- 5) नेतृत्व जागार संहिता का बेहतर अनुपालन।

(60) “लगभग सभी लोग विपत्ति का मामना उर मज्जते हैं परं यदि लिंगी के चरित्र का परीक्षण करना है, तो उसे शक्ति / अधिकार हो ही।” (अब्राहम लिंग) (2013)

अर्थ:- अब्राहम लिंग के इस उधन का तात्पर्य है कि अधिकार एवं व्यक्तित्व में रण संबंध होता है और इसमें बेहतर संबंध वही बना पाता है जो चारिकिंग रूप से मनवूत होता है।



- ⑥) ० आर्थिक गतिविधियों में विवाह द्वारा, चेहरा छोड़ने, दीपक पारित्य, नरसिंह राव आदि ने भावतीय अर्थव्यवस्था में नवीन आधामों को जोड़ा।
- ० रवज्ञर मिंट व सुपमा भवतार औ शिक्षा व अन्य सामाजिक कार्यों में बेहतर कार्य करने हेतु राष्ट्रीय शिक्षण पुस्तकार प्राप्त हुआ।
- ० नीरव मोदी, मेहुल चौधरी, विजय माल्या जैसे व्यवसायियों ने अपने देश को आर्थिक रूप से संतुष्ट किया।
- ० वही उसरे रिपोर्ट के आठड़े भारत की प्राथमिक शिक्षा को बड़े स्तर पर गुणवत्ताविधीन बताया है जो शिक्षण के मारा अपने दायित्वों के पालन न किये जाने को झटक उतारा है।

अलंकार अवधारणा के उपर्युक्त उथन समावेशी विज्ञान रखने जलत विज्ञान लक्ष्यों की स्थापित भी दृष्टि से उत्कृष्ट महत्वपूर्ण है आवश्यकता है कि इनी व्यक्ति के चरित्र का परीक्षण करने के लिये उने अपनी घोग्यता अनुमार अधिकार रखने शाक्ति प्राप्त घृणन की जाए जैसे:-

→ सेडिकल जी तैयारी करने वाले को को चिकित्सक छापद
 ↓
 सिविल सेवा की तैयारी करने वाले को सिविल सेवा में चयन
 राजनीति करने वाले का मंत्रालय या विद्यानमण्डल के लिये पुना जाना इत्यादि।

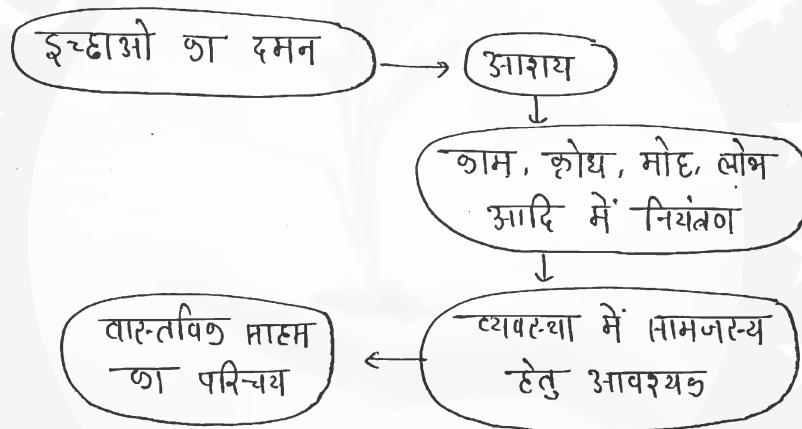
साथ ही नेतिकू मूल्यों रखने सामाजिक-राजनीतिक -आर्थिक दायित्वों का बोध कराया जाना भी आवश्यक है।

Q. “शतुभो पर विजय पाने वाले की अपेक्षा में उपनी इच्छाओं का ⁽⁶²⁾
दमन उने वाले लों अधिक साधनी मानता है।” (अरत्त)

(2013)

अर्थः- अरत्त ने उच्चन लों निर्दितर्थ यह है कि व्यक्ति
लों उपनी इन्द्रियों व जामेन्द्रियों पर विजय प्राप्त उना चाहिए।

→ इनषे उनुसार वास्तविक साधन बाह्य शतुभो पर विजय प्राप्त
करके नहीं वरन् उपने त्वनियंत्रण में हैं। अर्थात् नाम, कौश,
मोट, लोभ आदि इच्छाओं लों नियंत्रित उर व्यक्ति उपने
साधन लों बेदतर परिचय हे मिलता है।



उच्चन लों पर्तमान घटांगिता :-

- 1) 'नाम' पर नियंत्रण न होने से लगातार महिलाओं के विरुद्ध^{गौं} गौं-उपीड़न के मामले (नेशनल काइम रिकॉर्ड ब्यूरो रिपोर्ट)
बढ़ते जा रहे हैं।
- 2) 'कौश', लों ही परिणाम है कि जाति रँवं धर्म के भाष्यार पर
दिंसा उना, नस्तभेद, आतंकवाद, राजनेताओं के अमर्यादित व्यापार,
संरक्षणवाद, इत्यादि।
- 3) 'मोट' से अत्यधिक प्रभावित होने के उपर निष्पक्षता रँवं गैर-
तरफादारी जैसे बुनियादी मूल्यों लों शरण हो रहा है, जैसे -

(Q.) "मनुष्य के साथ सर्व अपने-आप में 'लक्ष्य' मानव व्यवहार करना चाहिए तभी भी उनको केवल 'साधन' नहीं मानना चाहिए।" आधुनिक तकनीकि-आर्थिक समाज में इस लक्षन के निश्चियों का उल्लेख करते हुए इनका अर्थ और महत्व टृप्पट कीजिए ? (2014)

अर्थः- कोंट ने अपने 'कृत्य के लिये कृत्य', के निष्ठांत को समझाने के लिये यह सब दिया था कि मानव जीवन में कोई भी कार्य करे तो उसमें मानवता ही साध्य होनी चाहिए 'साधन' नहीं।

- ⇒ यहाँ मानवता के साध्य होने का अर्थ है व्यवस्था के समस्त स्रोपानों में समाज के सभी लोगों की आगीकारी।
- ⇒ मनुष्य जो यदि साधन के रूप में देवा भी जाए तो वह देश-काल रूप सरित्थित पर निर्भर हो, जैसे; राष्ट्रकृति के लक्ष्य की स्थापित के लिये मौनिक वा बाहीद होना।

आधुनिक-तकनीकि समाज में 'लक्षन' का महत्व →

- 1) राजनेताओं द्वारा वोट देने की राजनीति जो कि विभास को लक्ष्य बनाकर होनी चाहिए। कल्याणकारी योजनाओं वा सफल शिया-वयन मुनिकित वरना जर्तात जिनमें वोट की मांग की जाती है उसके साधन न ममताकर साध्य समझना तथा उनके द्वित में कार्य करना।
- 2) वर्तमान समय में मल्टीनेशनल कॉर्पोरेशनों मानव संसाधन का नियोजन अधिकतम लाभ के लिये करती हैं। जैसे ही मंही आती है वैसे ही कर्मचारियों की हटनी सारंभ हो जाती है।

(6) 3) स्कूल में व्याप्त भूषणारूप जो मनुष्यों के लिये निर्धारित नीतियों जो उन तक पहुंचने नहीं होता, जैसे वृद्धानमंत्री कामबद्धीया पर्याप्ति में अधिकतम 40% से उम्मीद लोग लाभांशित हो पाये हैं (आर्थिक पर्वदान 2017-18)

4) शिक्षा व्यवस्था में लक्षित समृद्धि तक गुणवत्तापरक शिक्षा न पहुंचना (जास्तर रिपोर्ट), चिकित्सा के क्षेत्र में सरोगती जो लाभ वा व्यापार बनाना, जंगों वा व्यापार, मानव क्लोनिंग आदि मानव जो साधन रूप में प्राप्त होता है।

अतः आवश्यकता है कि मानव जो साधन नहीं बिल्कुल साध्य मानव जो अनुपालन किया जाना चाहिए जिसे निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं -

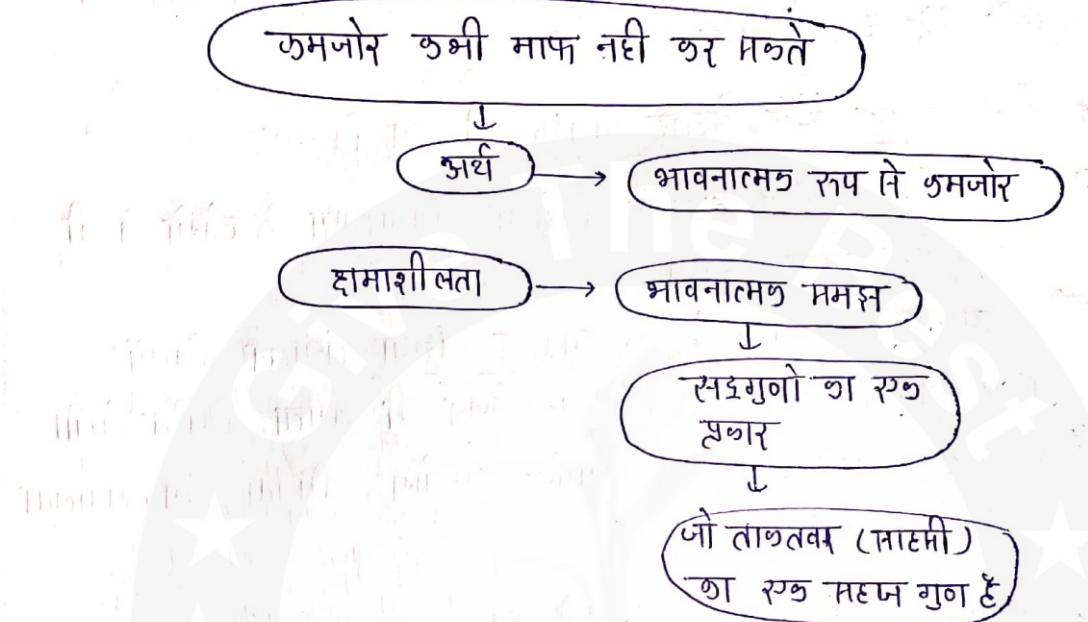
1) बेलीज के संविधान और आगार मंडिता (पद भा व्योग निजी लाभ में न होना, इमानदारी रखें प्रत्यनिष्ठा वा अनुपालन आदि) वा अनुपालन किया जाना चाहिए।

2) गांधी जी के मामानिक पाप के नियंत्रणे तथा रुग्णादश वृत्त का अनुपालन रखें नीतिक मूल्यों का विश्वास सुनिश्चित हो।

3) लोक सेवकों हेतु गुड-गवर्नेंस भी व्यापना हेतु के लिये हितीय स्कूलानिक सुधार जायोग के मूल्यों रखें सुझावों और लागू होना, जैसे -> संविधान की उद्दीपिता के स्तर निष्ठा
 ↘ इंडेश्यप्रूणि वार्षिक निष्पादन
 ↘ निष्पत्ता, इमानदारी रखें जवाबदेहिता का अनुपालन इत्यादि।

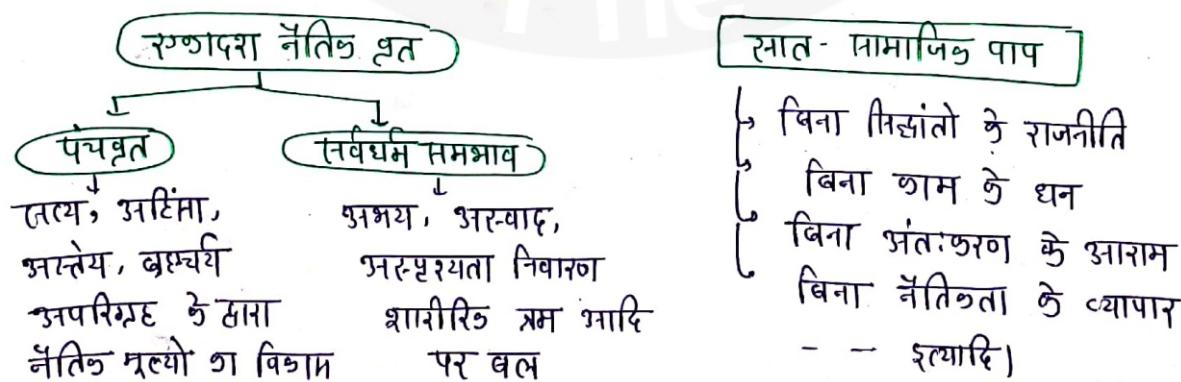
4) परिवार, स्वास्थ्य, समाज तारा खुगियादि मूल्यों (सामूहिक, नियम, धारा, स्वेच्छा आदि) तथा सशारात्रिक अभिवृत्ति व आवासात्मक समस्या को किञ्चित जिया जाना।

Q. “जमजोर उभी माफ नहीं कर सकते; द्वामाशीलता तो ताजतवर ऊँटी में सहज गुण है।” (2015) 66



अर्थ :- गांधी जी शारीरिक शक्ति ऊँट तुलना में आत्मिक शक्ति को महिला बत्ते हैं। उन्हें इस व्ययन में यह भाव है कि (जमा) माफ वही व्यक्ति कर सकता है जो आंतरिक मूल्यों को धारण करता है।

⇒ इस आत्मिक शक्ति के विषय के लिये गांधी जी ने स्वाधारा वृत्त और सात सामाजिक पाप बताएं हैं -



(6)

वर्तमान सहत्व

॥

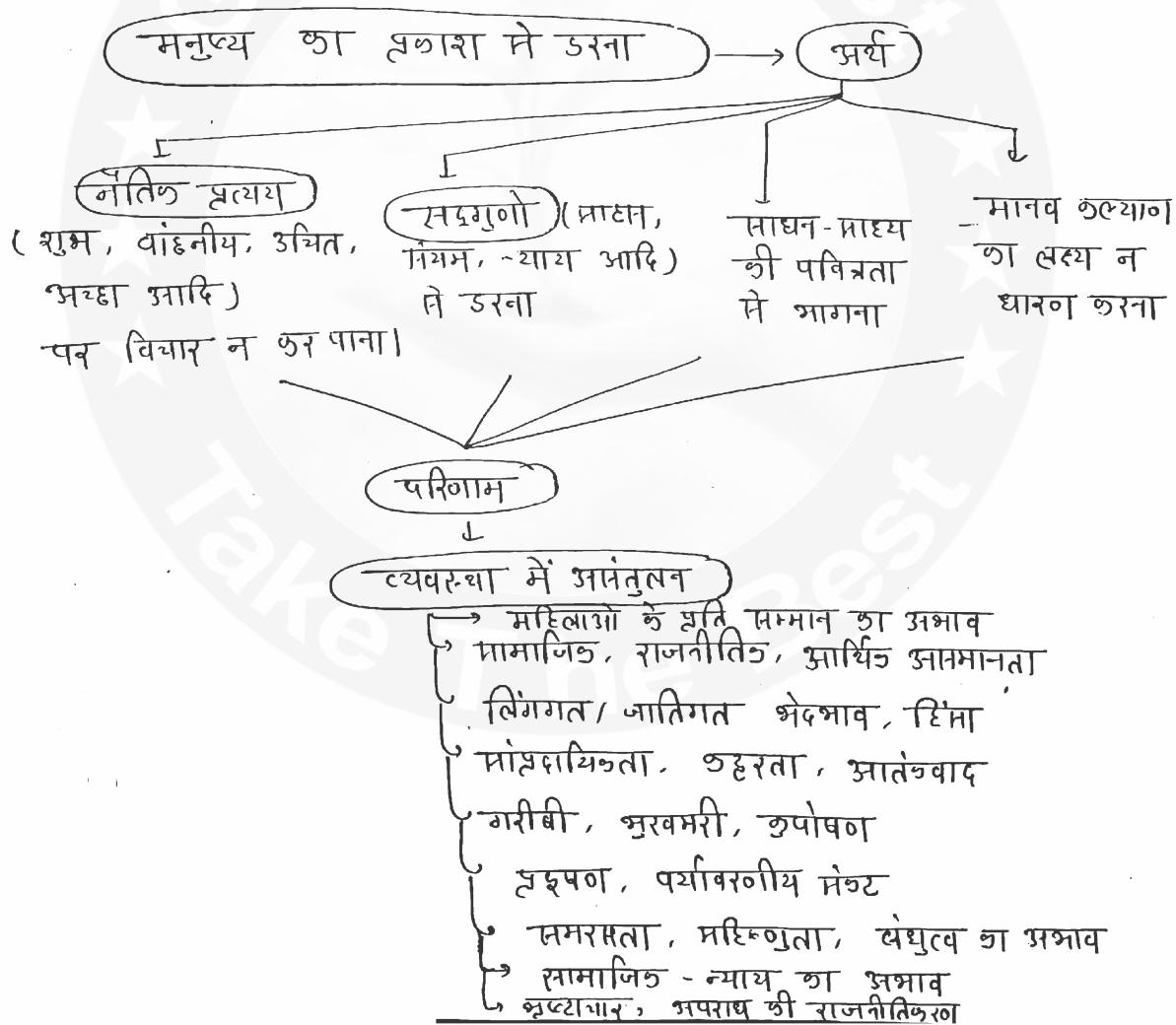
दामा लगते ही हम जामने वाले को स्वयं पर जारी करने की अनुमति देते हैं परिणाम -

- टीम भावना क्यं बेटर जारीतांकृति औ विज्ञान
- सहयोग; विपरीत क्यं विरोधी विचारधारा के लोगों से भी सहयोग प्राप्त होगा।
- पातावरणीय रिक्षति के मुत्राप हिया मंगठन जिसमें लचलीपन, अविष्कार क्यं जमायोजन की समता निश्चित होगी।
- सामुन्न निर्माणशृंखला; जामाजिक सहयोग, भिन्नता, ईम, सफलता प्राप्त करने में सहायता
- बेटर नेतृत्व और शाल औ परिचय।
- मंगठन निर्माण और शाल तथा जोखिम पहन हामता औ विज्ञान
॥

इस प्रभार क्या बेटर कार्य मंसूष्टि औ निर्माण होगा जो नेतृत्व मूल्यो, सद्गुणों से परिपूर्ण होगी और संघारणीय विज्ञान तथा सतत विज्ञान लक्ष्यों की साक्षि में सहायता होगी।

Q. “हम बच्चे को आसानी से माफ उर मतते हैं, जो अंदरे से ६८
डरता है; जीवन की वार्ताविलु विड़बना तो तब है जब मनुष्य
तृष्णा से उने लगते हैं।” (2015)

अर्थ → प्रेटी उपर्युक्त उथन के माध्यम से कहना चाहते हैं कि
बच्चा अबोध होता है जो बुझि और सान छा प्रमाण नहीं कर
मतता भीर शही लगता है कि वह अंदरे से डरता है। इंतु
जब मनुष्य तृष्णा से उने लगता है (अर्थात् नैतिक मूल्यों, शुभ,
अचित्, वांछनीय, साधन रखने माध्य की पवित्रता, सानव गल्याण आदि)
तब व्यवहार में अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।



(६७)

इस प्रश्नान् उपर्युक्त समस्याओं के निदान के लिये आवश्यक हैं कि व्यक्ति बृत्ताश में इसे नहीं बल्कि रूपरूप जो व्यवस्था के बेहतर लक्षणों में सहयोगी के रूप में व्यक्तिगत छोड़ दें। इस संदर्भ में गांधी जी ऊर्ध्वनाथ अत्यंत धृतिंगित हैं -

“ इन इंसान के रूप में हमारी महानता इसमें इतनी नहीं है कि हम इस दुनिया को बदले - - - - जितनी इसमें है कि हम अपने को बदल डालें।”

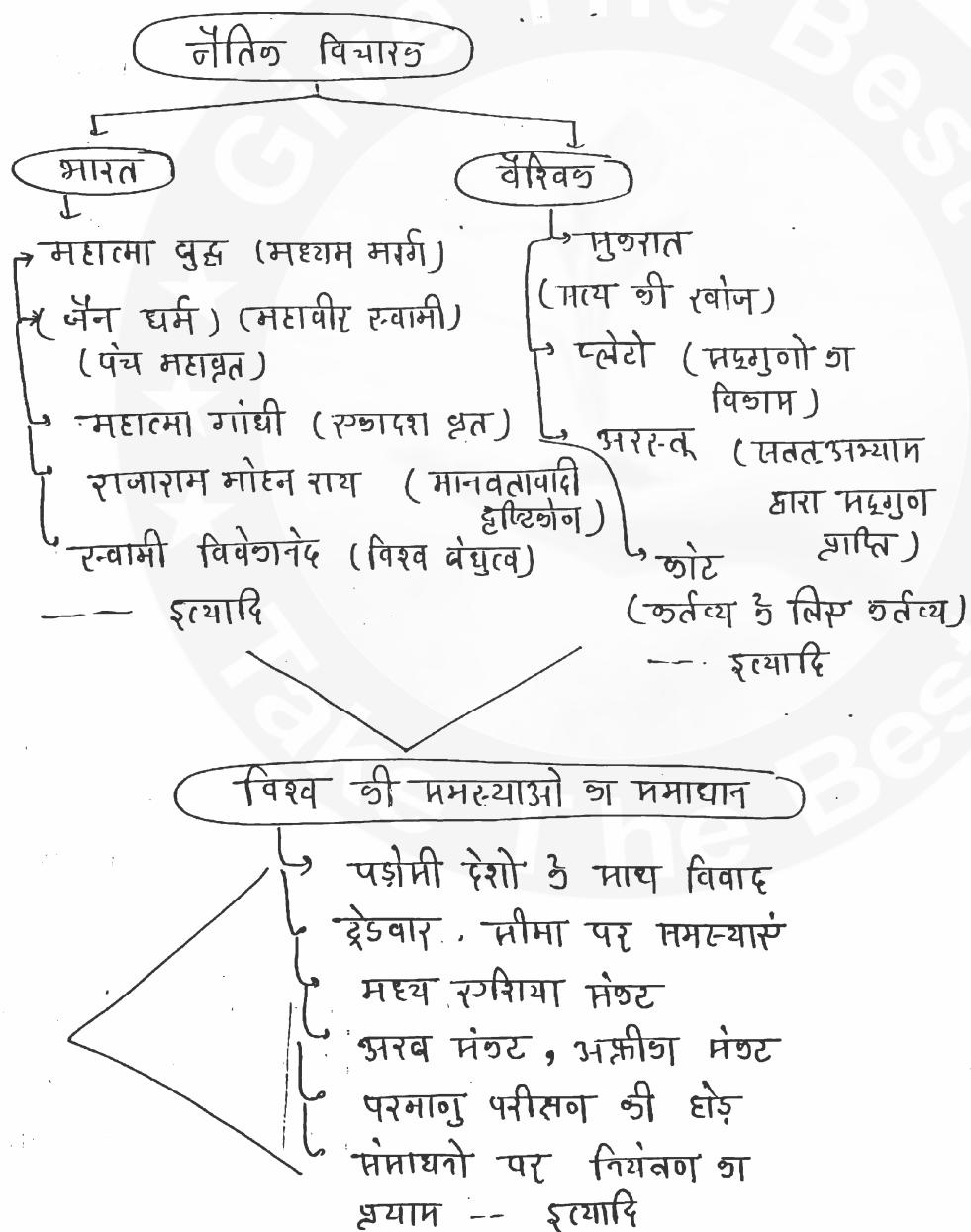
अतः आवश्यकता है कि विविधिविविध उपायों जो लागू किया जाए जैसे -

- 1) व्यक्ति स्वतं, परिवार रखे ममाज में व्याप्त नेतृत्व प्रबल्यों (त्रैम, साहस, -याय, प्रोपशर, द्यौर्य इत्यादि) को धारण करे तथा माध्यन रखे साध्य की पवित्रता वा पालन करे।
- 2) छठीय वृशामनिति मुद्यान जायोग ने व्यवस्था के बेहतर माध्यम हेतु अनेक प्रुसाव व्यक्तिगत किये, जिन्हें लागू किये जाने की आवश्यकता है -

→ संवेद्यानिति उद्देशियका के लिये निष्ठा भाव
 { उद्देश्यवृत्ति वर्धी भिष्यादन, विच्छिन्नता रखें
 ईमानदारी के साथ
 जवाबदेहीवृत्ति वर्धी
 लोभी व्यवस्थित वा त्याग -- इत्यादि।

- 3) गांधी जी के जात मामानित पाप रखें रुग्णाद्वाष्टुत वा अनुपालन जो व्यक्ति को उनके अधिकार रखें दायित्व के सम्बन्ध में तुलना वा बोध कराते हैं।
- 4) संचानमा समिति काना नेतृत्व उत्तमाद्वाष्टुत को हस्तित करने वाले प्रुसाव को लागू करा (जैसे - राजनीति में परे रुक्षर दृष्टि, लोगों की उन्नति व्यापक रूप इत्यादि)

70
Q अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, भारतीय राजदो के बीच द्विपक्षीय संबंध अन्य राजदो के द्वितीय का सम्मान किया जिसे बिना इन्हें के राष्ट्रीय द्वितीय की घोषित करने की नीति के छारा नियंत्रित होते हैं। इसमें राष्ट्रो के बीच हुंदे और तनाव उत्पन्न होते हैं। ऐसे तनावो के समाधान में नेतृत्व विचार किस पृष्ठार सहायता हो पड़ते हैं? विशिष्ट उदाहरणो के साथ चर्चा कीजिए। (2015)



(१) उपर्युक्त विंदुओं जो निम्नलिखित पृष्ठाएँ से ममस्तुते हैं-

१) भारत और अपने पड़ोसी देशों के साथ विवाद नीतिका विचारणों के मिश्नांते के माध्यम से मुलस्तासं जा सकते हैं, जैसे;

→ भारत - चीन सीमा विवाद - गांधी के मूल्यों का सम्बन्ध
(आपनी बातचीत, भवित्वा,

भारत - पाकिस्तान विवाद - दुश्मन के बंधुत्व आदि)

(

मुझरण छर

२) राजावाम मोहन राय 'मानवतावादी दृष्टिकोण' के दिमायती
थे इसी पृष्ठाने विवेगानंद 'विश्व बंधुत्व' जी स्वापना जा
जादर्शी प्रस्तुत करते हैं, ये मूल्य वर्तमान द्वेषवार ममाचामो
सीमा पर मंडट संबंधी विवादों जो मुलस्ता जा सकते हैं।

३) सुश्राव 'सत्य जी रखोने' पर्याप्त जीवन जोन जगत् जो मत्यस्मिन्
अधिक से अधिक जानते जी बात उत्तरते हैं तथा मन्त्री बुराईयों
जा लारण प्रज्ञान जो मानते हैं, उनके ये मूल्य मानव उल्याव
पर आधारित हैं जो अरब मंडट, मध्य एशिया मंडट, अफ़्रीका
मंडट के निशान में प्रहारयत ही सकते हैं।

४) अरस्तू (तेयम, प्राणम्, -याय) लक्ष्मणों के विभाग पर बल
देते हैं ये मूल्य वर्तमान में मानवता के ममस्तुत उत्पल मवमें
बड़े मंडट जैसे आतंकवाद, पर्यावरणीय ममाचामा, शरणार्थी ममाचामा
आदि जो निशान छरते में प्रकाशम् हैं।

५) इसी पृष्ठाएँ बैंधन का उपयोगितावादी मिश्नांत (अधिकतम ल्याकितयों
जा अधिकतम मुरब्बा) जोट जो कृतिका के लिये कृतिका रूपे स्वतंसाध्य

Q. महात्मा गांधी की सात-पापों की संकल्पना की विवेचना कीजिए ?
(2016)

(72)

सात - पापों की संकल्पना	प्रयोग	महत्व
1) 'सिद्धांत रहित राजनीति'	→ जनता के हित के विरोध रहित नो प्राथमिकता	→ भूष्टाचार (भूष्टाचार बोध धर्मांशु) चुनाव अभियानों में अनुचित धन औ उपयोग → राजनीति औ उपराष्ट्रीयता → आई - मतीजावाद प्रावर्जनिक धन औ अपत्यय --- इत्यादि
2) 'परिज्ञम रहित धनोपर्जन'	→ विना छिनी इशाम के → वरन्तुओं और नेवाओं की प्राप्ति	→ वस्तुओं की जमारबोरी कालाबाजारी साइबर हमलों के द्वारा फ़िरोती की मांग (इंसामबंदू तरक्की, भवेद्य व्यापार इत्यादि।
3) 'विना अंतःकरण के जारी'	→ विना छिनी उत्तरदायित्व → के सुरक्षा की चेष्टा करना जबकि वार्तविं सुरक्षा कुछ पाने के प्राय-साध्य कुह हैं में हैं।	→ सुरक्षा के लिये अपने कान औ पुलपयोग भरते हैं जैसे- घोंगों का व्यापार भूष्ण परीक्षण, इत्यादि
4) 'विना चरित के लान'	→ लान औ अयोग्य व्यक्ति के पास पहुंचना, जो उसका स्वयोग निजी स्वाधि के लिये उरेगा न छिमतवता उल्लंघन के लिये।	→ कर्मसे जाकर जो अपने साथ के लिये अपने कान औ पुलपयोग भरते हैं जैसे- घोंगों का व्यापार भूष्ण परीक्षण, इत्यादि → भूष्ट महंतो द्वारा जनता को गुमराह करना।

५) ‘विना नेतिकृता के व्यापार’

→ नेतिकृ मूल्यों (माध्य-साध्य की पवित्रता, बुम, उमित, वांछनीय औ बोध इत्यादि) को व्यापार करना जिससे नेतिकृता विहीन समाज का निर्माण होगा।

- संरक्षणवाद, मुद्रा-चालबाजी, ड्रेच-वार अंतर्राष्ट्रीय मानवों का भ्रष्टाकरन न करना
- व्यापार में पर्यावरणीय नुश्चान शो प्रभावित न करना
- कॉरपोरेट सोसाइटी रिसॉर्सिबिलिटी (CSR) में यह आगीदरी
- ज्ञावेद्य तरीकों से व्यापार परिमिट रखने संमाधन प्राप्त करना

६) ‘मानवता रहित पिज्जान’

→ ऐसे विज्ञान का निर्माण → जो मानवता को लाभ पहुंचाने में प्रणित मानव रखने सूक्ष्मति के लिए दानिशारद हो।

- परमाणु व रासायनिक अस्त्रों / परीक्षणों की दोष
- जीन रेडिटिंग / (जीव-जन-तुग्गों पर किये जाने वाले परीक्षण जो जैव-विविधता को नुश्चान पहुंचाते हैं।
- ऐसी बायोटिक का वक्ता स्थान जो सुपर बग जैसी प्रस्तुत्याओं को उत्पन्न कर रहा।

७) ‘वेनाम्य ना रहित नपासना’,
(विना विश्वास के बजाए)

→ विना भाव के भ्रकृत उन्हें जैसा वस्तुतः ल्याग और खलिदान का भाव न होना

- संगठन के द्वाते मत्यनिष्ठा का भ्राव परिनाम सूख्टाचार
- राज्य द्वाते द्वाते ल्याग का भाव न होना परिनाम सांस्कृतिकता, कहरता etc.

79

ज्ञातः ज्ञावश्यक है कि गांधी जी के सात-पापों की मंत्रलयना
जो धारण उरते हुए देश के (प्रतत विभाग) स्वें मंदेहारणीय विभाग
हेतु तृत्येत्र व्यक्ति जपने शर्तव्य रुपं द्वायित्वे के मध्य सम्बन्ध
रसापित उरने वा लुप्याम उरे तथा माधन रुपं साध्य की पवित्रता
के नेतिकृत मूल्य वा अनुपालन हैं। इस मंदर्भ में गांधी जी वा उस
उथन अत्यधिक द्वापांगिक हैं -

“ जो परिवर्तन आप विश्व में देखना चाहते हो वह
 पहले स्वयं में देखवो । ”

(ii) “बड़ी महत्वांकांशा महान चरित का भावावेश (जुनन) है। जो इसमें संपन्न है वे या तो बहुत अच्छे अथवा बहुत बुरे ग्राह्य कर मालूम हैं। ये तभी कुछ उन मिळांतों पर आधारित हैं जिनसे वे निर्देशित होते हैं।” नेपोलियन बोनापार्ट।

उदाहरण हैं इस उन शास्त्रों जो उल्केव शीर्षिका जिन्होंने

(i) समाज व देश जो भूमिका दिया है,

(ii) समाज व देश के विभाग के लिए ग्राह्य दिया है।



Ques. दुनिया के महान व सेवकों वर्षीय कठी महत्वांकोंसा जा के परिणाम हैं। इतिहास के लई उदास्त्रण इमें साझी हैं-

a) समाज व देश जा अधिक चिया हो :-

जब बड़ी महत्वांकोंसा निष्टुल्प निष्ठांतो (नेतिन मूल्यों विधीन) पर आधारित होती है तो वह समाज व देश के लिए विनाशकी रीझ होती है। इससे समाज व देश उन्नेत्र महत्वांग्रों में घिर जाता है।

उदास्त्रण :- हिटलर और मुसोलिनी ने क्रमशः नाजीवाद व पासीवाद निष्ठांतों के द्वारा दुनिया को हितीय विश्वयुद्ध की ओर धारें दिया, जिसके द्वारा विश्व को अध्वर्णीय हाते उठानी पड़ी। इसी प्रभार सद्व्याप्ति, हुमें, जिम जोंग उन तानाशाहों ने अपने देश की जनता की अंगेव्यक्ति की स्वतंत्रता दीन ली।

b) समाज व देश के विभास के लिए वर्धी चिया हो -

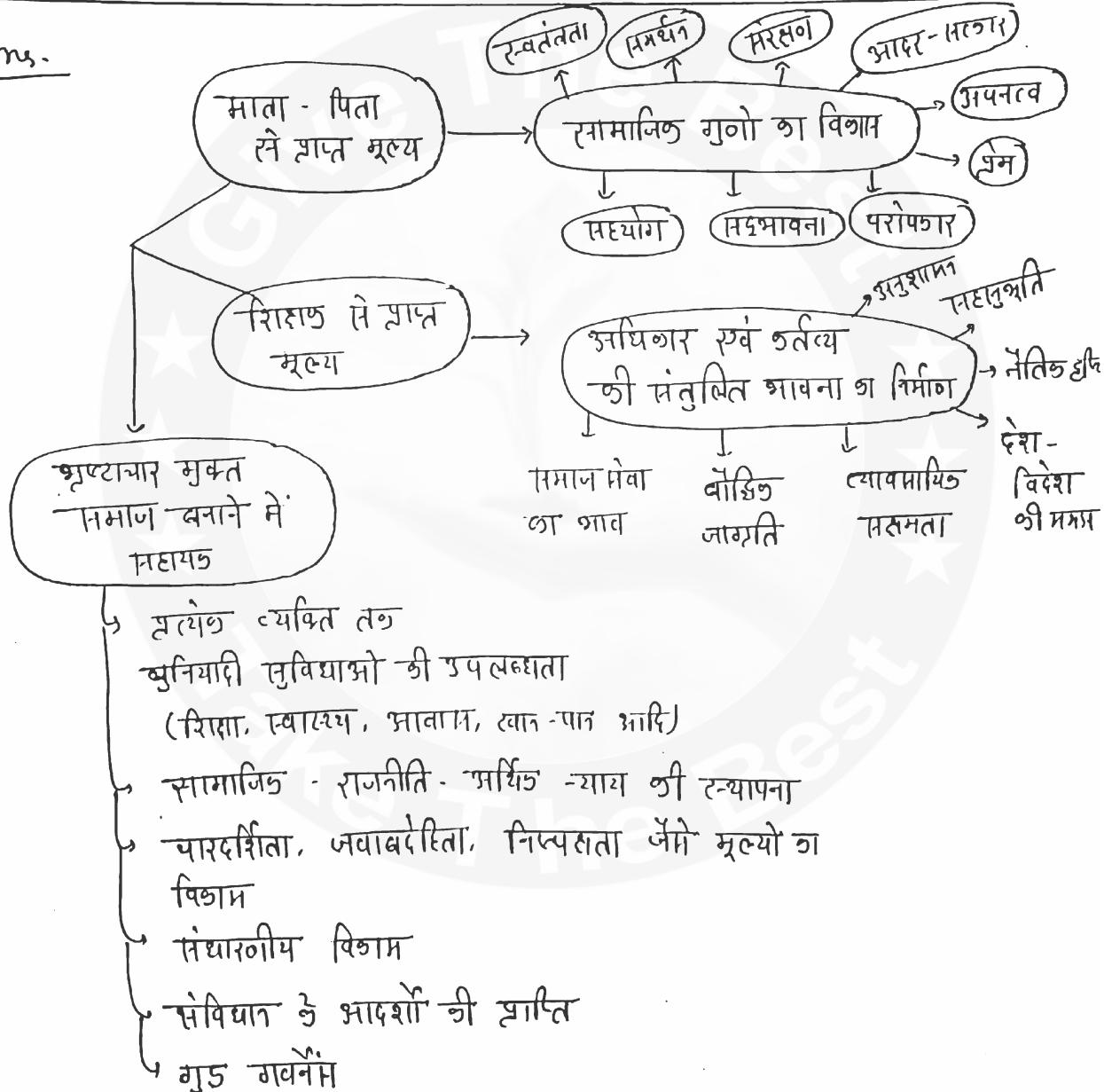
बड़ी महत्वांकोंसा रखने वाले निष्ठांतों का पालन-पोषण समाज चरित समाज व देश के विभास को नयी दिशा देना लगता है।

उदास्त्रण :- जर्शोन महान जिसने 'घम्म मिष्ठांत', 'जा पालन लर' दुनिया के समस्त जो उदास्त्रण पेश किया उनका पालन आज भी देश व विदेश द्वारा जगह देखा जा रहा है। इसी प्रभार अब वर्ता 'मुलह-शुल', महात्मा गांधी व 'कर्णातक व्रत', जवाहरलाल नेहरू व 'समाजवादी दृष्टि', नेहरून मण्डेला वा (नस्लभेदी मन्दियान) आदि ने समाज व देश जो नयी गति देना ली।

अतः बड़ी महत्वांकोंसा तभी समाज व देश और विश्व के विभास में महायन होती है जब नेतिन मूल्यों, साधा-साध्य वी पवित्रता तथा मानव उत्त्यान के उद्देश्य से संयोगिता होती है।

(Q) “मैंना हुड़ विश्वाम हूँ जि यदि छिपी राष्ट्र को अप्ट्याचार मुक्त
जौर सुन्दर मनो वाला बनाना हूँ, तो उसमें समाज के तीन
प्रमुख लोगों जंतर ला सज्जे हूँ। वे हैं पिता, माता र वै
विकास।” रण पी. जे. अल्दुल उलाम। विश्वेषण थीविस।

(71)

Ans.

रातो के अनुमारः - 'माता रण सत्यी परिचारिका है और पिता रण मर्यादा प्रदायापन् ।'

व्यक्ति माता-पिता के छाना विभिन्न मूल्यों को धारण करता है, जैसे -

- सामाजिक गुणों का विलास (सहयोग, सद्भावना, परोपकार इत्यादि)
 - मनोवैज्ञानिक-ज्ञावश्यकताओं की मंत्रिका (व्यार, हनेह, मुरसा, रूपतेकता आदि)
 - ज्ञानरण की बुनियाद, जैसे मैलिनी के अनुमार-
- 'रण बालक नागरिकता का पूर्थम पाठ' माता के चुंबनों तथा पिता के अंहिनों से तीखता है।'
- वरमाधि की शिक्षा (जमहायों की प्रहायता, होटे व बड़े का सम्मान आदि)
 - सांस्कृतिक विभास (परम्परा, रीति-रिवाज, भक्ता एवं मंत्रज्ञान का सद्विद्यादि)

इसी ध्वनि (रूपरेखा) रण कुशल व्यक्तित्व के निर्माण में
सहायता होते हैं, जैसे -

- उद्योगार व लृतियों के मध्य मंत्रिका आवना का निर्माण
- नेतृत्व का विभास (सही-गलत, वांछनीय-मवांछनीय, उचित-मनुचित)
- समाज मेवा हेतु रूपयों को तैयार करना (की समझ)
- सामाजिक मूल्यों का अनुकूलतम विकास
- बौद्धिक विभास तथा तर्कपूर्ण दृष्टिकोण का निर्माण

उपर्युक्त सभी मूल्य रण स्पैसे व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं जो उपरे नेतृत्व मूल्यों (उचित-मनुचित, साधन-साध्य की परिप्रेक्षा, मात्रव अल्पान व सार्वज्ञ) के प्रति सजग होता है तथा जिसमें निविल मेवा के लिये साधारणत ममझे जैसे वाले मूल्य (प्रत्यगिष्ठा, पारदर्शिता, इमानदारी आदि)

का प्रमाणेश्वर होता है। ऐसा व्यक्तित्व राष्ट्र की भूष्याचार मुक्ति⁽⁷⁹⁾
बनाने में सहम होगा क्योंकि वह अपने राष्ट्र के उत्तिप्रेरण संवं
त्याग के बावजूद परिवर्ण होगा, संवेद्याति जादर्शों के उत्ति निष्ठा
भाव रखने वाला होगा तथा अपने अधिकारों के साथ-साथ दायित्वों
के उत्ति भी सजाग होगा।

Q. भारत के संघर्ष में सामाजिक न्याय की जॉन रॉल्स की
संकल्पना का विश्लेषण कीजिए। (2016)

पर्याप्त- जॉन रॉल्स का सामाजिक-याय इस सिद्धांत पर आधारित है
कि हम रवृद्ध को ऐसी परिस्थिति में होने की कल्यना करे
जहां हमें यह निर्णय लेना है कि समाज को कौसे संगठित
किया जाए। अर्थात् हम नहीं जानते कि हम किस किस
के परिवार में जन्म लेंगे (उच्च जाति या निम्न जाति, सुविधासम्म
या मुविधाविहीन)। जॉन रॉल्स तर्क है कि यदि हमें
नहीं मालूम हो कि कम हम कौन होंगे तब हम समाज
के उन नियमों और संगठन के बारे में सोचेंगे जिनमें अधिकृतम
लोगों की उल्लंघन हो।

जॉन रॉल्स का सामाजिक-याय
सिद्धांत

‘अज्ञानता का जावरण’

जिसमें व्यक्ति को अपनी
सामाजिक विद्यति का बोध
नहीं होता

जिसमें अधिकृतम
व्यक्तियों का उल्लंघन
सुनिश्चित हो

↑
तब वह समाज के लिये
ऐसे गिरावट का निर्माण
करता है

(80) वर्तमान सांस्कृतिकता :-

- 1) जॉन राल्स के अनुसार सेपा व्यक्ति द्वारा के संभाइयों पर अपनी नज़र नहीं डालेगा परिणामतः वर्तमान में व्याप्त भार्यु भास्मानता (प्राक्षमफैम रिपोर्ट) जैसी समस्याओं ने प्रभावान् मुनिशित होगा।
- 2) वह व्यक्ति जातिगत भेदभाव से रहित होगा। वर्तमान समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता ((मॉब लिंग), कहरता, नवातवाद, होवेद जैसी इसामद पूर्वतियों ने रोशन जा पाया है।
- 3) सेपा व्यक्ति सूत्येजु लक्षित समृद्धि तक बुनियादी प्रविधानों (शिला, रन्धार्य, भावाना, रवान-पान आदि) को उपलब्ध कराने में प्रहार होगा। जिसमें गरीबी, छुपोषण, बेरोजगारी जैसी समस्याओं ने निश्चियत होगा।
- 4) वाँचित वर्गी (अनुप्रयित जाति, जनजाति, विलासी, महिलाएँ, बच्चे आदि) उनके अधिकार रूप सुरक्षा की प्राप्ति होगी।
- 5) वह व्यक्ति अपने अधिकार रूप से उत्त्वों के मध्य सम-वय इच्छापूर्ण करने में प्रहार होगा जिसमें सत्यनिष्ठा, जवाबदेहिता, निष्पक्षता जैसी बुनियादी मूल्यों को धारण करता होगा।
- 6) सूत्येजु व्यक्ति तक तामाजिक - राजनीतिक - चाय शुनिश्चित होगा।

उत्तम जॉन - राल्स ने तामाजिक - चाय समावेशी विशद तथा मध्य सतत विभाग लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अत्यंत प्रामंगिक है।



निर्मान IAS

स्थानीय आदर्शता

QIP - Advance CONCEPT

Unit-6

By:

Sunil 'Abhivyakti' Sir

ENQUIRY OFFICE

631 Ground Floor, Main Road, Mukherjee Nagar, Delhi-09

HEAD OFFICE/CLASS ROOM

996 1st Floor, Mukherjee Nagar (Near Gandhi Vihar Bandh) Delhi-09

PH.: 011-47058219, 9540676789, 9717767797

Website : www.nirmanias.com | E-mail : nirmanias07@gmail.com

You can also visit our digital platform-



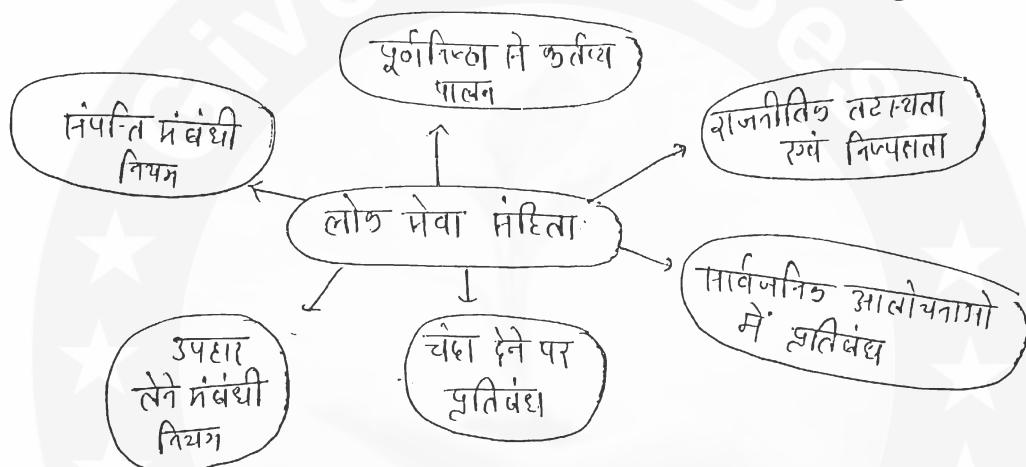
यूनिटः 6

- लोक प्रशासनों में लोग/सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्रः स्थिति तथा समस्याएं;
- सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएं तथा दुविधाएं; नैतिक मार्गदर्शन के स्रोतों
- के रूप में विधि, नियम, विनियम तथा अंतरात्मा; शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक
- मूल्यों का सुदृढ़ीकरण; अंतरराष्ट्रीय संबंधों तथा निधि व्यवस्था (फंडिंग) में नैतिक मुद्दे;
- कारपोरेट शासन व्यवस्था।

(43)

द्वितीय त्रिशासनिक मुद्धार आयोग द्वारा निकारिशाकृत (अनुशासित) लोक सेवा संस्थित की विवेचना की गई ? (2016)

वेद्यतर शासन व्यवस्था के निर्माण हेतु जिसमें लोक सेवक अपने दायित्वों का पालन पूर्ण जवाबदेहिता के साथ करे, उनका माध्यार - व्यवहार अनुशासित हो, के संदर्भ में द्वितीय त्रिशासनिक मुद्धार आयोग द्वारा लोक सेवा संस्थित की निकारिशा की गयी है, जिसमें निम्नलिखित प्रावधान शामिल हैं -



- 1) आयोग संस्थिता के नियमों के मुद्धार लोक सेवकों द्वारा अपने कृतिव्यों का पालन पूर्ण विष्ठा, इमानदारी के साथ करने का सुझाव चाहिए।
उदाहरण -
→ भूष्टानार जैसी गतिविधियों में प्रभावित न हो
→ सरकारी उल्याग़नारी मोजनाओं का समय पर शियावयन इत्यादि।
- 2) राजनीतिक तटस्थिता रखने विषयता के साथ ऊम ऊरा।
उदाहरण -
→ शार्ड - शतीजावाद को रखना
→ राजनीतिक लाभ की दृष्टि से कृत्यों का मंचालन न ऊरा
निर्णय निर्माण में शिरी राजनीतिक दल से व्युत्थापित न होना। -- इत्यादि।

(११)

- 3) लोक मेवडो को सरकारी जारीकर्त्ता द्वारे योजनाओं की मार्गदर्शिका
रपत में जालोचना नहीं करता चाहिए। ऐसा करने के नागरिकों में
शासन के लक्ष्य गलत संदेश पहुंचता है।

उदाहरण - सरोबर मीडिया द्वारे छांकेंस जादि में
उमर्यादित टिप्पणियों में घचना।

4)

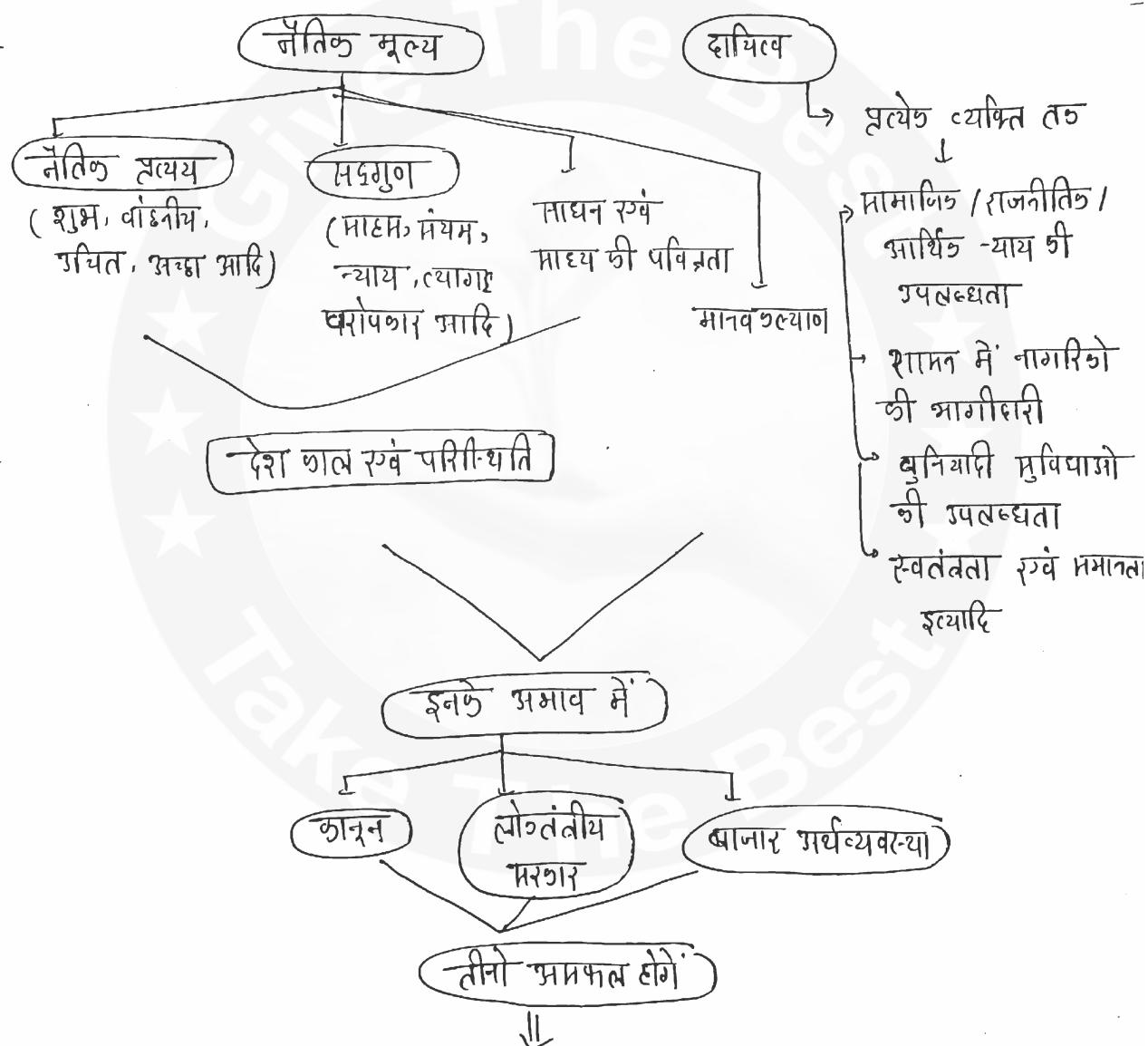
- लोक मेवडो छिंगी श्री राजनीतिक दल को छिंगी श्री
पृथिवी का चंदा नहीं है सज्जते न ही छिंगी दल के पूर्वार-पूर्वार
में दान द्यय कर पाते हैं। जिसमें गौर-भेदभाव दर्शित शासन का
संचालन हो।

5)

- पृथिवी सरकारी उमियारी को सरकारी मेवा में जाने में द्वर्वा
अपनी चाल-माल संपत्ति का विवरण सरकार को देना
चाहिए तत्पश्चात् पृथिवी वर्षि मर्जित संपत्ति का व्योहा
दिया जाना आवश्यक है। जिसमें शासन में पारदर्शिता
मुनिरिचत की जा पाए

उपर्युक्त निकारिशों में स्पष्ट है कि लोक
मेवडो में यह अपेक्षा की जाती है कि वह मुशायन की दृश्यापना
हेतु इर्द्दी निधि, गिर्जाता, ईमानदारी, दृश्यता, उत्तराधिकारी
इत्यादि ग्रूपों को द्यारण कर अपने दायित्वों को पूर्ण करे।
जिसमें मन्दानीय विकास द्वारे प्रतत विभाग सही की प्राप्ति मुनिरिचत
हो।

(Q) रामानुजः साजा किए गए तथा व्यापक रूप से मोर्चावाले नेतिक १५
 मूल्यों में दायित्वों के बिना न हो शक्ति, न हो लोकतंत्रीय
 सत्त्वार, न ही बाजार गर्थवत्स्या भी ऐसे क्षमता पायेंगे। इन
 ज्यवान में भाव क्या समझते हैं? अमरशील ज्यवान के उदाहरण छाता
 समझाइए। (2017)



उदाहरण :-

(५६)

कानून

- 1) भृष्टाचार निरोधण
कानून होने के बावजूद
नेतिकृष्ट रूप समिति
के अभाव में आरत
अच्छागार लोधी दूसरों
में इच्छा पायदान परहै।
- 2) महिला सुरक्षा मंचंधी
कानूनों की अप्रकल्पता
(क्लासिक रिकॉर्ड व्यवस्था
के बाके)
- 3) पर्यावरण मंरकाण
कानूनों का उचित
हियान्वयन मुनिवित
न हो पाना।
(क्लैंकीय बृहस्पति नियंत्रण
बोर्ड रिपोर्ट)

लोकतांत्रिक सरकार

- 1) वैरिक्षण स्तर पर विभिन्न
शब्दों नेतिकृष्ट मूल्यों रूप
समिति के अभाव में
मूल्यविभिन्नता देशों में तनाव
को बढ़ाने में प्रयोग होते
जैसे - अमेरिका हारा इंडिया
रूप समता में दखलोप
अफ़ग़ानिस्तान मंडल
सीरिया मंडल इत्यादि।
- 2) राजकीय राजनीति रूप
क्षेत्रों में शाई - भौतिकावाद
उपराय का राजनीतिकरण,
स्वार्थनीति राशि का सम्बन्ध
इत्यादि।

बाजार मर्यादित्यवरस्था

- नेतिकृष्ट मूल्यों रूप
समिति से विदीन
व्यापार व्यवस्था का
परिणाम - मंरकाणवाद
{ द्रेडवार
मुद्रा चातवाजी
- WTO नेते प्रतराष्ट्रीय
मंचों का हारा उचित समाधान
क्षेत्र इन्होंने में अप्रकल्पता
- राजकीय स्तर पर
कालावाजानी, इनसामर
देशीय, जमारवारी, भवेध
व्यापार भादि।

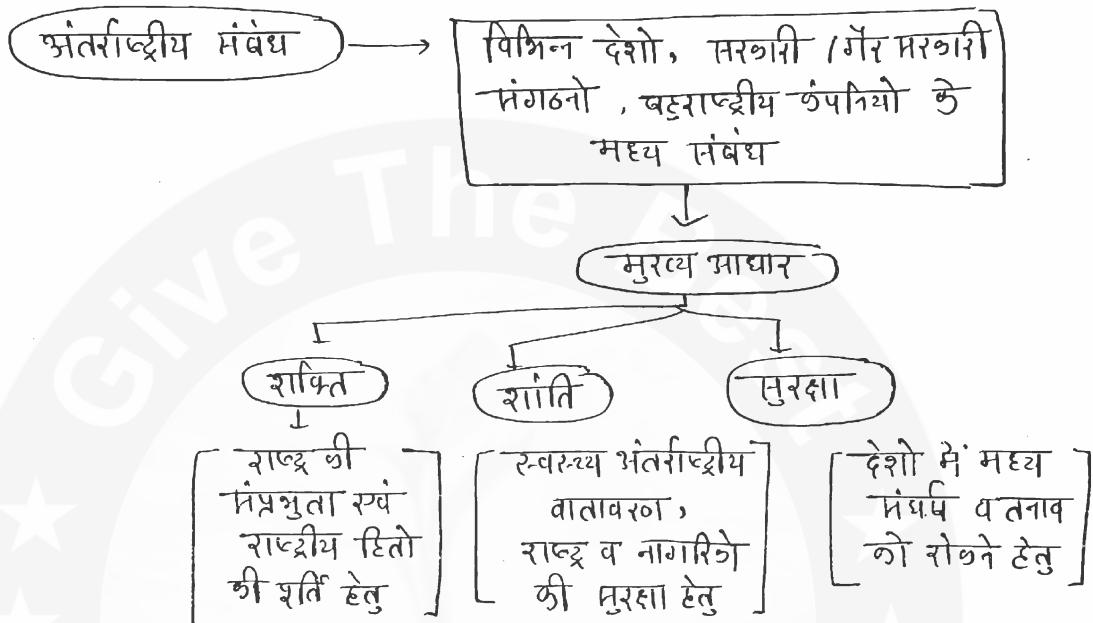
प्रारंभिक रूप से बाजार मर्यादित्यवरस्था

तीनों की अप्रकल्पता के लिये आवश्यक है कि नेतिकृष्ट मूल्यों रूप समिति को
जा अनिवार्य रूप में समावेश हो। जिन्हें विभाग में परिवार, लक्ष्य
रूप समाज प्रह्लाद अभियान निभाते हैं। इन मूल्यों को धारण करने के
लिये निम्नलिखित उपाय लिये जाते चाहिए -

- मानवतावादी दृष्टि जो का विश्वास
- पाठ्यक्रमों रूप से विद्यालयों के माध्यम से नेतिकृष्ट मूल्यों का
विभाग
- माध्यम रूप साध्य की पवित्रता में विश्वास
- अधिकार रूप समिति के मध्य सम्बन्ध
- 'अधिकृतम् तोनो के अधिकृतम् वृत्त्यान्' जैसे मूल्यों की धारण करता।
- नेतिकृष्ट भावार मंदिरा का अनुधातन।

(97)

शक्ति, शांति, तथा सुरक्षा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के माध्यम से जाते हैं। स्पष्ट कीजिए ? (2017)



शक्ति → अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिये यह जरूरी है कि स्वत्येज राष्ट्र ने संप्रभुता का प्रमाण दो इन्हिं स्वत्येज देश जपनी संप्रभुता व राष्ट्रीय द्वितों की इर्ति के लिये जपनी शक्ति की सेव्य साधनों के माध्यम से अपित्तम छुटे की ओरिशा उत्ता है, जैसे -

उत्तराधिकार → विभिन्न देशों का लिये जा रहे नाभिकीय परीक्षण, भ्रंतिका भिसानों के माध्यम से सीमा-पार निगरानी, आधुनिक तकनीकि ते लैंप रक्षा धरियार जैसे- बैलेर वैकल्पिक मिलाइल, शुद्धि विमान, टैंक, पनडुखी इत्यादि। आधुनिक- तकनीकि विभास के माध्यम से झंय देशों में जपना स्वत्व इयापित छुटे जा स्वयास, जैसे; विभिन्न देशी भ्रंतिका, रास, झांस छारा अपेक्षित देशों दृष्टीकृत, अरब देशो पर स्वत्व स्थापित जाने जा स्वयास।

१४

शांति

→ शांति, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को गति पूर्दान उरने में महत्वपूर्ण भूमिका पूर्दान उरती है। शांति बहु शक्ति है जो राष्ट्र व नागरिकों को सुरक्षा पूर्दान उरने के माध्य-माध्य स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय वातावरण वा निर्माण कर विश्व को विश्व के मार्ग पर आगमन उरती है।

उदाहरण-

→ तंत्रिकत राष्ट्र मंध, शांति स्थापना हेतु निरंतर पूर्यतावील रहता है।
 → विश्व व्यापार मंगठन (WTO) देशों में मध्य व्यापार मंत्रित के माध्यम में व्यवस्था को शांतिप्रिय बनाने में पूर्यापूर्त है।

सुरक्षा

→ शांति के मआव में देशों के मध्य संघर्ष व तनाव की दिशा उत्पन्न हो जाती है, जिसमें देश रखे विश्व की सुरक्षा खतने में पड़ जाती है। इन्हिये सुरक्षा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की दृष्टि में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

उदाहरण-

→ तंत्रिकत राष्ट्र 'सुरक्षा परिषद' के माध्यम में देशों में होने वाले संघर्षों (जैसे- इमरानी मंटप, जरब मंटप, दीरिया मंकट भादि) को रोकने का पूर्यापूर्त उरता है।
 → सुरक्षा की तलाश में ही इतिहास ने ही अभावह युद्ध (पूर्यम विश्व युद्ध रखे द्वितीय विश्व युद्ध) का सामना किया।

(40)

Q. कॉर्पोरेट समाजिक समिति कृपनियों को जिन्हें लाभदायक तथा चिरस्थायी बनाता है। प्रश्नेषण कीजिए? (2017)

Ans. ग्रनिडो (UNIDO) के अनुसार “सीरिसआर रक्षणात्मक सम्बन्धन की अवधारणा है, जहां निगम या कृपनियों समाजिक और पर्यावरणीय विषयों पर अपने व्यवसाय में ध्यान रखती हैं और अपने विद्यारकों से अंतर्संबंध रखती है।”

वर्तमान में CSR (सीरिसआर) कार्यक्रम समुदायिक विभास — के विशिल होते, जैसे; शिक्षा पर्यावरण, स्वास्थ्य सेवा इत्यादि — से जुड़े हुए हैं। भारत पेट्रोलियम लिमिटेड, भारतीय सुनुकी कैपनी, दिल्ली यूनिलीवर लिमिटेड जैसी कैपनी ने बहुआयामी हाउटिंग में सीरिसआर को अपनाया है —

- i) चिठ्ठिया और लकड़ा सुविधा उपलब्ध भराना
- ii) रक्षण और पर बनाना
- iii) ग्रामीणों का विगम रखने सशक्तिकरण — इत्यादि।

इसी प्रभाव कुछ अन्य उदाहरण भी हैं —

→ तौप इंडिया तथा रननीओं होप काउंट्रीजन करा मिलकर आपदा प्रभावित लोकों में आपदा प्रबंधन का जर्य।

→ मिलिंग ग्रेट्स काउंट्रीजन, इंफोर्मेशन, मार्क नुकनेगी करा समाजिक नल्यान के लिये दिया जाने वाला योगदान।

अनीम फ्लैम जी का ‘अस्यपात्र काउंट्रीजन’, जो कि ग्रामीण होलो में बेहतर शिक्षा उपलब्ध भराने के होल में योगदान है।

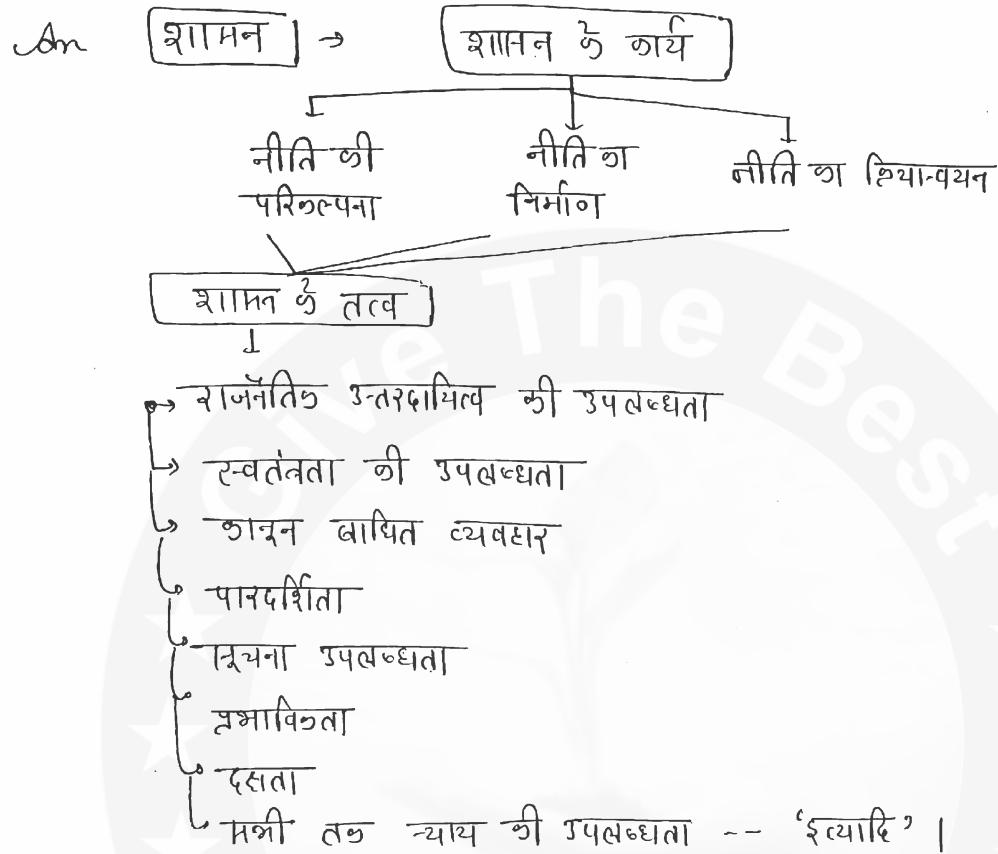
‘रेल सहयोग योजना’ जिसके तहत कृपनिया सीरिसआर के माध्यम से देश के मरी होटे-बड़े रेलवे स्टेशनों को आधुनिक तरीके से तौप सुविधाएँ मुहैया भरायेंगे।

(50)

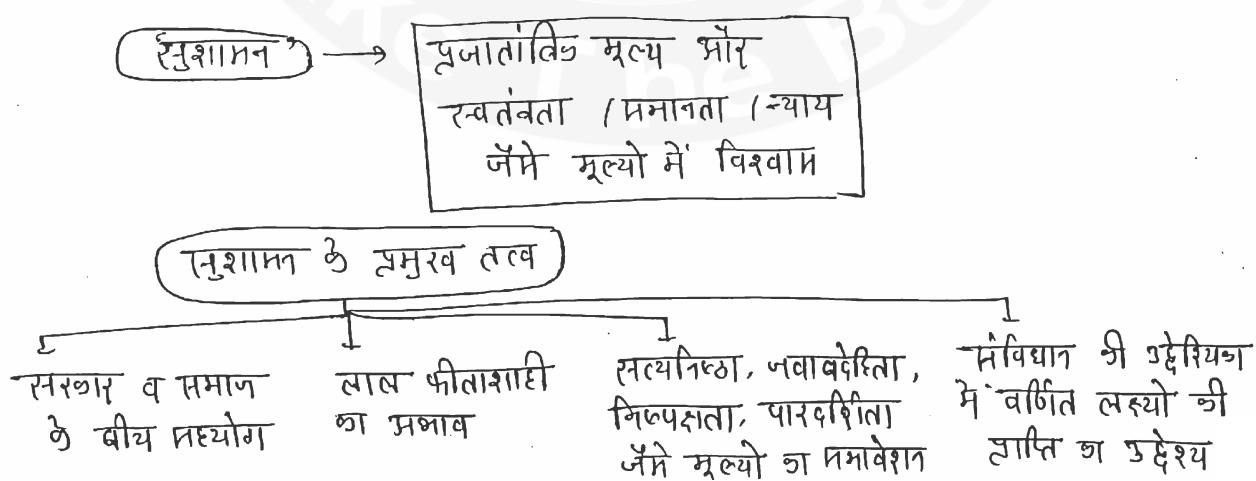
यदि इस प्रश्न के लिये कंपनियों से जिये जाएँगे तो उनकी विश्वासनीयता समाज में अधिक कल्पीत होगी। साथ ही कंपनी जो लाभ प्राप्त होगा और वह चिरखायी रूप में समावेशी विभाग लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रदायक होगी।



(Q) शासन, 'नुशासन' में से नीति शासन का शब्दों में आप क्या समझते हैं? (5)



'समाज को सुबंधित करने वाली सभी गतिविधियों के समूह को 'शासन' कहते हैं। शासन में सरकारी के प्राष्ठ-प्राप्त गैर सरकारी संस्थाओं को भी शामिल किया जाता है।'



(52)

उपर्युक्त राष्ट्र मानव अधिगत भावों के उल्लेख -

“सुशासन की विशेषताओं में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, जवाबदीही, महाभागिता और लोगों की आवश्यकताओं के दृष्टि दायित्व शामिल होते हैं। अतः सुशासन रुचि से वातावरण को लाने से जुड़ा होता है, जो मानव अधिगतों वा प्रथों के लिए और मानव विज्ञान को बनारे रखने में प्रेरणा हो।”

नैतिक शासन

→ रेसा शासन जो नैतिक निष्ठानों के लिए मूल्यों पर आधारित हो

नैतिक पूर्वय
(शुभ, वाहनीय, उचित
आदि)

सद्गुणों वा
समावेशन
(मातृत्व, धैर्य, चाय,
त्याग, धैर्यमादि)

साधन रुचि
साध्य की परिवर्तन

देश शत्रुप्ति
परिवर्तन
के मुद्दाएं

उत्तिम सद्ध्य
‘मानव उल्लयान’

उपर्युक्त मूल्यों के साथ लुट्ठ उन्हें विद्युओं जो भी शामिल किया जा सकता है।

- सेविधान की दृष्टिकोण वा आदर्शी
- भारतीय नैतिक दर्शनिक मूल्य (जाम, क्षेत्र, मोट, लोक में समन्वय)
- भारतीय रुचि वैशिख विचारणों के मूल्य
- जैसे गांधी जी के सात सामाजिक पाप के निष्ठान
- विवेशनेद वा ‘विश्व-बंधुत्व, निष्ठान
- पश्चिम वा ‘सत्य की रक्षा’ इत्यादि।

Q “कुवल भावन का अनुपालन ही जाफी नहीं है, लेकिन मेंको मेरे अपने लकड़ी के प्रभावी पालन करने के लिए, नेतृत्व मुद्दों पर इन उपलब्धिमत संवेदन-शक्ति का होना भी आवश्यक है।” क्या आप सहमत हैं? उदाहरणों की सहायता से इनकट जीजिया, जहाँ (i) कृत्य नेतृत्वात् सही है, परंतु वैध रूप से सही नहीं है तथा (ii) कृत्य वैध रूप से सही है, परंतु नेतृत्वात् सही नहीं है। (2015)

Ans- हाँ सहमत हैं। उदाहरण के माध्यम से पुष्ट किया जा सकता है-

Case:- ‘X’ कृपनी के मुख्य अर्थात् अधिकारी है (CEO), जो एक सरली विभाग के हासा प्रयुक्ति विशेषीकृत इकाइयां उपलब्ध कराती हैं। कृपनी ने विभाग को उपर्युक्त छात्रों के लिये अपनी बोली पेश कर दी है। कृपनी की अँकर की गुणता और लागत होने परने अपने अंतिपर्दियों में बेकार है। इस पर भी मंबंधित अधिकारी टेक पात्र भरने के लिये मोटी रिक्विट भी मांग कर रहा है। अर्डिक छात्र ‘X’ के परिवार और कृपनी दोनों के लिये महत्वपूर्ण हैं, ऐसे में ‘X’ हासा किया कुम्हा दो विषय हैं →

① पहला विषय → रिक्विट देने वाले अर्डिक छात्र भरने के विषय
जा चयन

a. ① कृत्य नेतृत्वात् सही है, परंतु वैध रूप से सही नहीं

- i) कृपनी जा C.E.O. होने के कारण कृपनी की उत्पादन रेता बास्तव रखने का दायित्व
- ii) कृपनी पर निर्भर प्रशासनिक, अधिकारी रूप कृपनी की वर्ग जा अविष्य
- iii) नेतृत्व के गुण की परत जो प्राप्त करने के लिये आदि

→ रिक्विट देने वाले अर्डिक छात्र भरना वैधानिक रूप से गलत है क्योंकि यह नियमों के विरोध है। गलत अधिकारी जा निर्माण। परिणामतः अव्याप्त जैसे अनेतृत्व जार्ये को बनावा भिरेगा।

(54)

विकल्प - 2

रिश्वत देने में इंडिया रखें आई दायर में निष्ठा
जाना।

कृत्य बेंध रूप में नहीं

परंतु नैतिकता नहीं नहीं हो

रिश्वत न देइ वह
जानन तो पातन छुरेगा

→ आई दायर में निष्ठने पर केवली जो
नुष्ठान द्वारा प्रश्ना है तथा उस

निम्नमें कुछ गलत परंपरा
जो विभाग द्वारे में रोशन
जा सकता है

पर किंवद्दन नियारियों जो आर्थिक
प्रश्नों द्वारा प्राप्तना उत्तरा पड़ प्रश्ना
हैं जो तात्त्वातिक रूप में सही
नहीं होते हैं।

वैधानिक दृष्टि में अनियत

अतः नैतिक द्रुविधा की स्थिति में बाहर निष्ठने के लिये
आवश्यक है कि लोक लोक अपने उत्तर्यों जो निर्वहन
इस पूछार के जो देश जल रखें परिचयति की दृष्टि में
सम्बोधन हों। निम्नमें नाधन रखें प्राप्त जीवनवाता
समादृत हों तथा उन्तम लक्ष्य मंधारीय विभाग प्राप्त जरना हो।
ऐसे निर्णय लेते समय रक्षल, समाज, परिवार में प्राप्त मूल्य
(आदम, न्याय, संघर्ष आदि) तथा मंधारीय भावशों जो आत्मतात्
किये जाते जी आवश्यकता है।

(55)

प्रिविले नेवा के संर्ब में निम्नलिखित की स्थानंगिता का परीक्षण
कीजिए -

(2017)

- (a) पारदर्शिता
- (b) जवाबदेहिता
- (c) विष्पवता तथा व्याय
- (d) दृष्टि विश्वास का नाश
- (e) नेवा भाव

प्रिविले नेवा मूल्य	स्थानंगिता
पारदर्शिता →	<ul style="list-style-type: none"> • प्रशासन की पारदर्शी व्यवस्था सरकार के निर्जय में जनता के प्रदर्शनों को देखता छरती है। जैसे → सभी मंत्रालयों का छाये जा रहे छाये की घटति का मॉनिटरिंग उपलब्ध होना। • विभिन्न स्तरों के <u>घोटाको</u> (2G-घोटाका, जादि) पर नियंत्रण, अप्पाचार जैसे सामलों को रोकने में। • <u>विदेशी निवेश</u> को मार्गित छरने में प्रदायन • समय पर <u>सूचना रखने वालायत निपटान</u> व्यवस्था का विकास
जवाबदेहिता →	<ul style="list-style-type: none"> → सरकारी पद पर आपने लोग जपने विरोधी और जौर लायकी के बिंदु जनता को जवाबदेही के बिंदु जिम्मेदार होने। परिणामतः 'सूचना के अधिकार' का सफल क्रिया-वयन सुनिश्चित होगा। → <u>कल्याणी योजनाओं</u> जैसे भायुष्मान योजना, PM-आशा, सूधानमंडी जिता तमाम निधि भादि पर <u>खर्च की जाने वाली राशि</u> के सफल उपयोग की जानकारी उपलब्ध होगी।

(35) 3) निष्पक्षता तथा
न्याय →

राजनीति पर पर बैठे लोगों द्वारा जन द्वित में निर्णय लेना न कि राज्य के या उपरोक्त परिवार या भिन्न के द्वित में निर्णय लेना। परिणामतः

- राजनीति में भाई - भतीजापाद जो रोड जा सकता है
- पूर्वोत्तर व्यक्ति तक तामाजिक - राजनीतिक - याय की उपलब्धता
- चुनावी प्रक्रिया में निष्पक्ष मतदान रखने वाले उपचार -- इत्यादि।

4) हृद विश्वास एवं
साधा →

हृद विश्वास नमाज में व्याप्त गणेश भगवन्यामों का प्रमाणान् उरों में प्रसाद है, ऐसे-

- गरीबी, कुपोषण, भट्टवच्छता आदि चुनौतियों का प्रमाणान्
- शाष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय प्रवंशों में बेटर भागीदारी
- शोध रखने वालार के होके में नह नहीं उपलब्धियां (जैसे - इसरों का चेत्रयान-2 भिन्न)
- तामाजिक भेदभाव की प्रमापित

सेवा भाव →

→ नमाज के वंचित वर्गों (जनजाति, जनजाति, मटिला, घुस, विक्षणांग -- आदि) का उल्ल्यापन
सरलाई कल्याणकारी योजनाओं को उल्लिखित प्रशृण्ठ
तथा पहुंचाने के प्रयत्न में प्रधायन
शास्त्र में आम-वागरिक औ भागीदारी में बदलती-
समावेशी रखने वाले विभिन्न लक्ष्यों इत्यादि।
की प्राप्ति।

(57) |

Q लोक सेवको के समझ 'दित संघर्ष' के मुद्दो वा जा जाना संभव होता है। आप 'दित संघर्ष' पद से क्या समझते हैं और लोक सेवको के छारा निर्णयन में किस प्रकार भ्रष्टाचार घटता होता है? यदि आपके तामने दित संघर्ष की रिपोर्ट पेश हो जाए, तो आप उसका हल किस प्रकार निश्चियते के साथ स्पष्ट कर सकते हैं? उदाहरणों के साथ स्पष्ट करें। (2015)

(दित संघर्ष)

जब निम्नलिखित की रछ-इनमें के अपर प्राचीनतमा स्थापित हो जाए

प्राचीनतमा
नार्वनिक उत्तर
व्यक्तिगत उत्तर

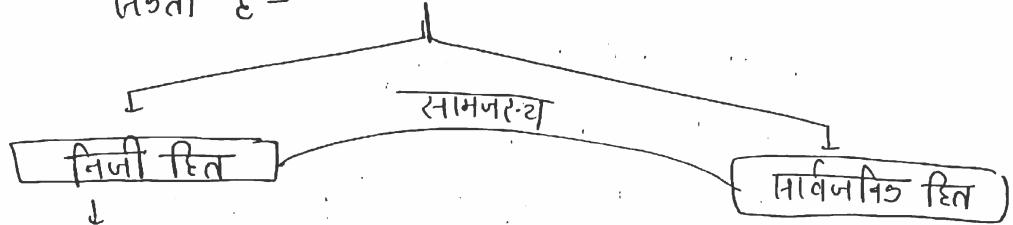
→ लोक सेवको के छारा निर्णयन में 'दित संघर्ष' निम्नलिखित प्रकार घटता होता है।

Case :- "X" राज्य सरकार ने मंत्रालय में वरिष्ठ अधिकारी हैं मंत्रालय के बड़ी सड़क निर्माण योजना की घोषणा करने वाला है जिसे लिये रखाए हुए हैं। योजनों ने इस बात का ध्यान दिया है कि निजी अमित वा उम से उम अधिगृहण करना चाहिए बड़ी सुन्दर वार्ता इस प्रकार दिया जाए जिसमें सड़क मंत्री के 20 रुपये के फार्म धारण के पास में निलें। मंत्री के अधिक बदले में 'X' को राज्य बड़ा अरक्ष उमके नाम करने को उदाहित किया जाएगा।" योजना के अनुसार इसका उदाहरण यह है कि अधिगृहण करना दोषी होगा।"

→ यही परिस्थिति लोक सेवक के समझ 'दित - संघर्ष', की रिपोर्ट स्पष्ट करती है।

(६४)

दित - मंधरि का समाधान निम्नलिखित घटार में छिया जा सकता है-



नीति परण साचार मंसिता

का पालन और

↓

जिनमें परिवार, अक्षल एवं समाज
ने स्पष्ट मूल्य (माधृत, तंयग, -याय,
परोपगर आदि) शामिल होते हैं

साधन एवं माध्य भी पवित्रता
का आदर्श

नैतिक-दर्शनिक विचारणों के मत
जैसे गांधी जी का राजकाश वृत्त,
सुश्राव और पत्य जी रबोज प्रादि
मंत्रिम लक्ष्य मानव उल्याग ही

॥

निजी मंपति, अपराध मंबंधी
विवरण, प्रत्येक वर्ष मरित मंपति
आदि का व्योगा देता।

द्वितीय धृशामनिक प्रुदार द्वेष
आचार मंसिता भायोग छारा मुसायी
गयी आचार मंपति का अनुपालन

→ राजनीतिक तटस्थता एवं निष्पलगा
योग देने पर प्रतिबंध
मंपति मंबंधी वियमो का पालन
द्वार्णविष्ठा से उत्त्वय पालन
— इत्यादि

→ नोलग ममति छारा
मुसाय गये नैतिक मूल्यों को ताग
छारा —

→ मंविधार के दृति निष्ग
उद्देश्यवर्णी छार्य
साविनिक घब के व्यय में
मित्त्वयिता — — इत्यादि

→ गांधी के 'मात-सामाजिक पाप' के
मिटात तथा राजाद्वारा वृत श अनुपालन

→ मिविल मेवा मूल्यों को धारण छारा
(सत्यविष्ठा, पारदर्शिता, जवाहरदीहिता
— इत्यादि)

प्राधान एवं प्राध्य भी पवित्रता का
अनुपालन



निर्मान IAS

स्थानीय आदर्शता

QIP - ADVANCE CONCEPT

Unit - VII

By:

Sunil 'Abhivyakti' Sir

ENQUIRY OFFICE

631 Ground Floor, Main Road, Mukherjee Nagar, Delhi-09

HEAD OFFICE/CLASS ROOM

996 1st Floor, Mukherjee Nagar (Near Gandhi Vihar Bandh) Delhi-09

PH.: 011-47058219, 9540676789, 9717767797

Website : www.nirmanias.com | E-mail : nirmanias07@gmail.com

You can also visit our digital platform-



Q. लोक सेवा के संर्थ में 'जवाबदेही' का क्या अर्थ है? लोकसेवकों की व्यक्तिगत और सामूहिक जवाबदेही को मुनिशियत के लिए क्या उपाय अपनाये जा सकते हैं? (2014)

लोक सेवा में जवाबदेही

→ नोक्सन समिति के मुत्रार

‘सरकारी पर्द पर आतीन लोग अपने निर्णयों और कार्रवाइ के लिए जनता लो जवाबदेही के लिए जिम्मेदार होंगे।’

लोक सेवकों की व्यक्तिगत और सामूहिक जवाबदेही मुनिशियत भरने हेतु उपाय

व्यक्तिगत जवाबदेही
मुनिशियत भरने हेतु

सामूहिक जवाबदेही मुनिशियत
भरने हेतु

- 1) निजी सूचनाओं (जैसे चल-गचल संपर्क ना रिकॉर्ड, यदि नोट्स आपराधिक रिकॉर्ड रख दें तो उसमें मंबोधित जाइडो / विवरण आदि) की घोषणा।
- 2) जन द्वित और व्यक्तिगत लाभ के बीच मंधि में बचने के लिये व्यक्तिगत रुक्षि को संविधान

1) हितीय सूचनाओं मुद्दार आयोग द्वारा निविल सेवकों के लिये तैयार की गयी नैतिक मंदिरा वा अनुपालन-

2) संविधान की उद्देश्यमें रचापित विविध जादशों के स्वति निष्ठा राजीति में परे रह जर

② 3) सद्गुणों (चेति, पर्यम, मातृता, याय चाहि) को धारण करना।

4) अपने परिवार के लिए सदृश्य जो लिए पूछार के रूप से बाबू देने की अनुमति नहीं देना जिससे सरकारी उत्तरव्यों के निष्पादन में उड़ान आए।

5) लोछ मेवकों को लोछ में आधारों वा पूर्योग इम पूछार उत्तर चाहिए जिसमें जनता की असर्वाई हो सके।

~~लोछ मेवकों को लिए जीवन में वैतित्वता~~

6) सदस्यों को लोछ मेवकों जो लिए त्यक्ति वा प्रांत्यानों वा रेसा और प्रमाण-पत्र देने से बचना चाहिए, जिसकी उन्हें और अकितगत जानकारी न हो।

→ निर्णय निर्भाग में
पारदर्शिता
उद्देश्यप्रणीति और
निष्पक्षता से भाव
करने वा उत्तरव्य -- इत्यादि

2) गांधी जी के 'आत-
सामाजिक पाप' मिळांत
वा अनुपालन -

→ विना भाव के घन
→ विना चरित्र के बाह
→ विना बलिदान के बना
-- -- इत्यादि

3) रन्पेन की उत्तम शास्त्र
मिठिता छारा मुश्खार गरु
मूल मिळांतो वा अनुपालन

→ विषयनिष्ठा, उत्तरव्यता,
उत्तराधित्व, निष्पक्षता,
गोपनीयता इत्यादि

4) द्रव्यनां उत्तराधित्व (प्राप्त)
वा प्रमुचित विद्यालय।

5) देलीज वा प्रविधान संबं
जायार मिठिता वा अनुपालन

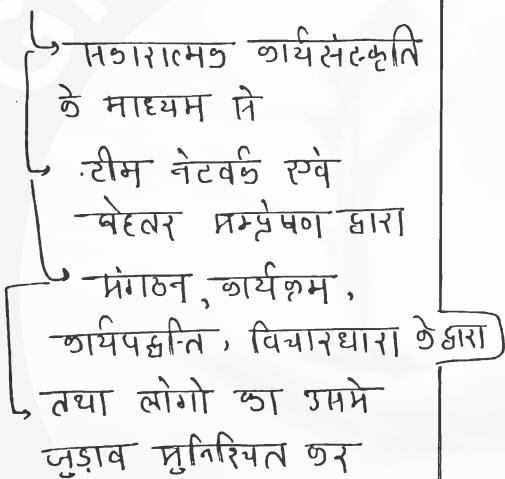
→ सरकारी उत्तराधित्व में
प्रश्नाद
पद वी प्रतिष्ठा
सार्वजनिक उत्तरव्यों वा
उत्तम निर्विद्यन -- इत्यादि।

6) साधग रुप साध्य की परिवर्ता
वा अनुपालन।

Q. प्रिव्यवसनीयता और सहनशक्ति के मध्यमा लोक-प्रेषण में किस प्रभाव पूर्दर्शित होते हैं? उदाहरणों के साथ उपष्ट बीजिस्। (2015)

विश्वसनीयता

‘राज नेतृत्व मूल्य है, जिसे लोक प्रेषण उहे सौंपी गयी जिम्मेदारियों को निन्न प्रभाव में ब्राह्मण रक्षापित छरते हैं—’



उदाहरण - मेंट्रो मैन ई-ग्रीष्मन
जा मेंट्रो मॉडल

किंवदं वेदी जा तिहाड़
जेल गुदार - मॉडल

नरीपे-५ मिजा जो प्रधानमंत्री
नु दृष्टिशोण वो वास्तविकता
में परिवर्तित छरते की दिशा
में प्रयागरत है।

प्रदीप कुमार मिश्च जिन्होंने
उपर्युक्त बनाने में अमृतमिश्र निर्माणी।

सहनशक्ति

“राज नेतृत्व मूल्य है, जो लोक प्रेषण उद्देश्यों की स्थाप्ति में व्याधु भनेक युक्तियों के बावधान लोक प्रेषणों के ब्राह्मण उनके दायित्व विरहन से प्रकट होता है।”

इंद्रप्रसाद, राजनीतिक दबाव, द्वारा द्वारा दुर्गम होको में नियुक्ति आदि के बावधान उपरे वार्यों ना बेहतर ढंग में निष्पादन छरता

उर्भार की योजनाओं एवं नीतियों के विचारणा कृम में जाता के विरोध वो सहयोग में बदलना -- इत्यादि

उदाहरण - मरोड़ रवेमत्र जिनको अपने ऐसे वार्यकाल के दोरान ५० में अधिक बार 'इंद्रप्रसाद' का सामना छरता पड़ा

→

(4)

विंतु कर्जी-कर्जार एवं माधवों का दुरापयोग

उत्तिराय प्रचना की
जानकारी

उदाहरण - संवेदनशीलता रूपं
महत्वपूर्ण राष्ट्रीय रहन्यों को
उद्घाटित करने वाली प्रचना
में-ये कार्य व जड़ी भाँजग
देश के महत्वपूर्ण वैज्ञानिक,
आर्थिक द्वितीय, विदेशी में संबंध
त्रिवृत्ततः प्रभावित होने वाली
प्रचना -- इत्यादि।

मीडिया का दुरापयोग अतिन्यायिक प्रक्रियता
६) गरजार की नीतियों,
व्याख्यानों पर अमर्यादित
टिप्पणी
→ मांध त्रिचिंग जैसी
दिनांक प्रकाशों को
विद्वा देना
→ राजनीतिक टिप्पणियों
को बग-चार्जर समाज
के मामले स्फूर्तुत करना

उदाहरण -
दिल्ली एफ्सोर्ट के
नर्सरी के फ़र्मिशन
पर किया गया
दातव्योप
शक्तियों के खुफ्फान
घृणना मिहांत
का उल्लंघन

इन नकारात्मक अपार्श प्रभावों को नोडों के उपाय

प्रचना अधिकार अधिकारियों
में

मीडिया के तत्त्व
पर

-याचिक प्रक्रियता
के तत्त्व पर

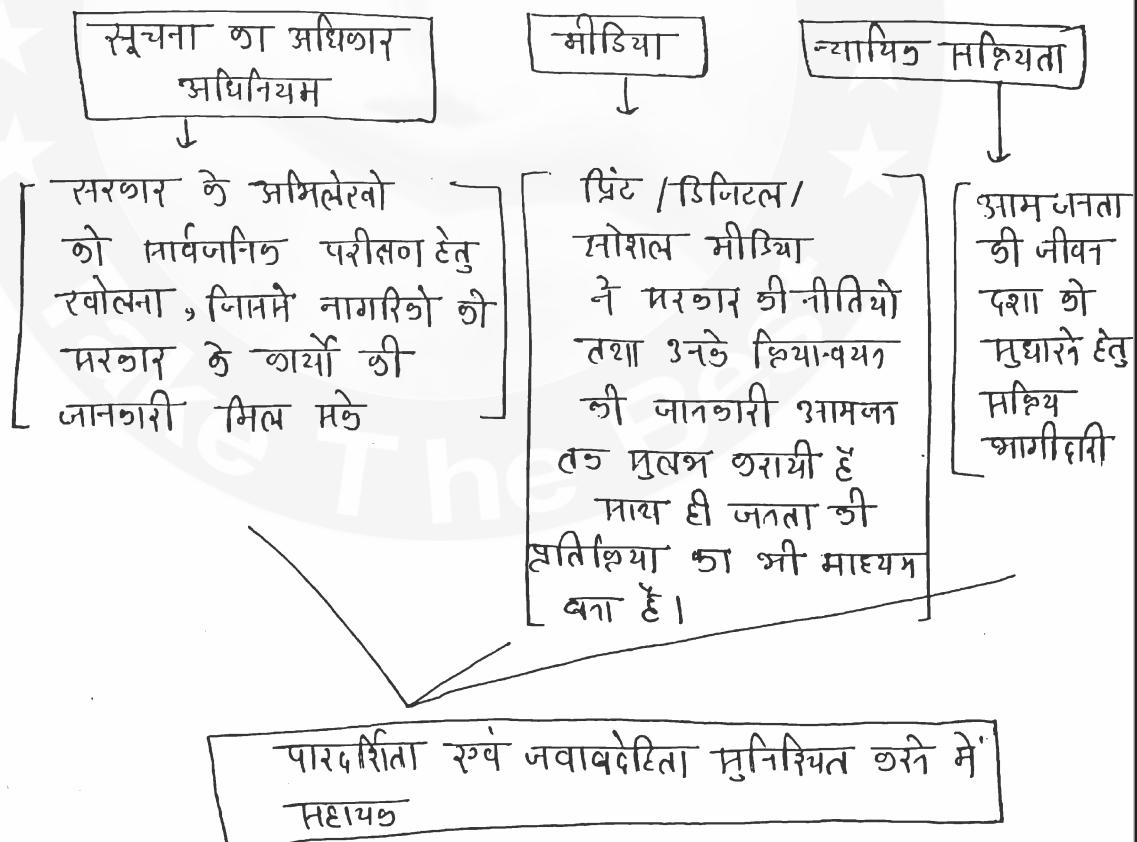
- 1) नागरिक घोषणा पक्षों
का बेहतर उपयोग
- 2) लखना के अधिकार लोकप्रस्तु
राप में मौलिक अधिकार, नीति-
निदेशक तथा मौलिक वर्तव्य में
शामिल किया जाना चाहिए।
- 3) लोक प्रचना अधिकारियों में पर्याप्त
प्रसंस्करण विकास करने की आवश्यकता
- 4) नागरिकों द्वारा निविल सेवकों द्वारा
मानार प्रस्तुत का अनुपालन

- मीडिया हेतु आनामन्दिला
- मीडिया में स्फूर्तुत
लिये जाने वाले 'डायर',
का दूर्व निरीक्षण रूपं
समाज के लिये नकारात्मक
सावित हो सकने वाली
प्रचनाओं को नियंत्रित
करना
- मीडिया की जवाबदेहिता
सुनिश्चित करना
- द्वितीय प्रशासनिक
मुदार मायोग करा
दुष्टार गये दिग्गजों
का पालन
प्रविधान
के मूल्यशून्य मिहांतों
(शक्ति का पृष्ठकान
का अनुपालन
- -याचिक प्रक्रियता
की जवाबदेहिता
सुनिश्चित करना।

५

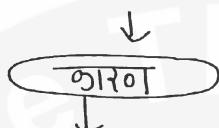
(२) सोशल में दुई कुछ प्रगतियाँ, जैसे कि सूचना का अधिकार (RTI) अधिनियम, भीड़िया और न्यायिक सक्षियता इत्यादि, सरकार के कार्यों में पहले से अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही लाने में सहायता सावित हो रही है। फिर भी, यह भी हेरवा जा रहा है कि उभी समाज इन साधनों का प्रयोग किया जाता है। राज न्याय नकारात्मक प्रभाव यह है कि अधिकारीगण जब शीघ्र निर्णय लेने से जरूरत है।

इस रिपोर्ट का विस्तारपूर्वक विश्लेषण कीजिए और सुझाइए कि इस विभाजन का क्षम नियम तृष्णा निश्चय जा सकता है। सुझाइए कि इन नकारात्मक प्रभावों को किस तृष्णा न्यूनतमीकृत किया जा सकता है ? (२०१५)

Ans.

६ नेतिकृत भावरण वाले तराण लोग सक्रिय राजनीति में शामिल होने के लिए उत्सुक नहीं होते हैं। उन्होंने सक्रिय राजनीति में अभिष्ठरित भरते हुए उपाय प्रस्तावित किए?

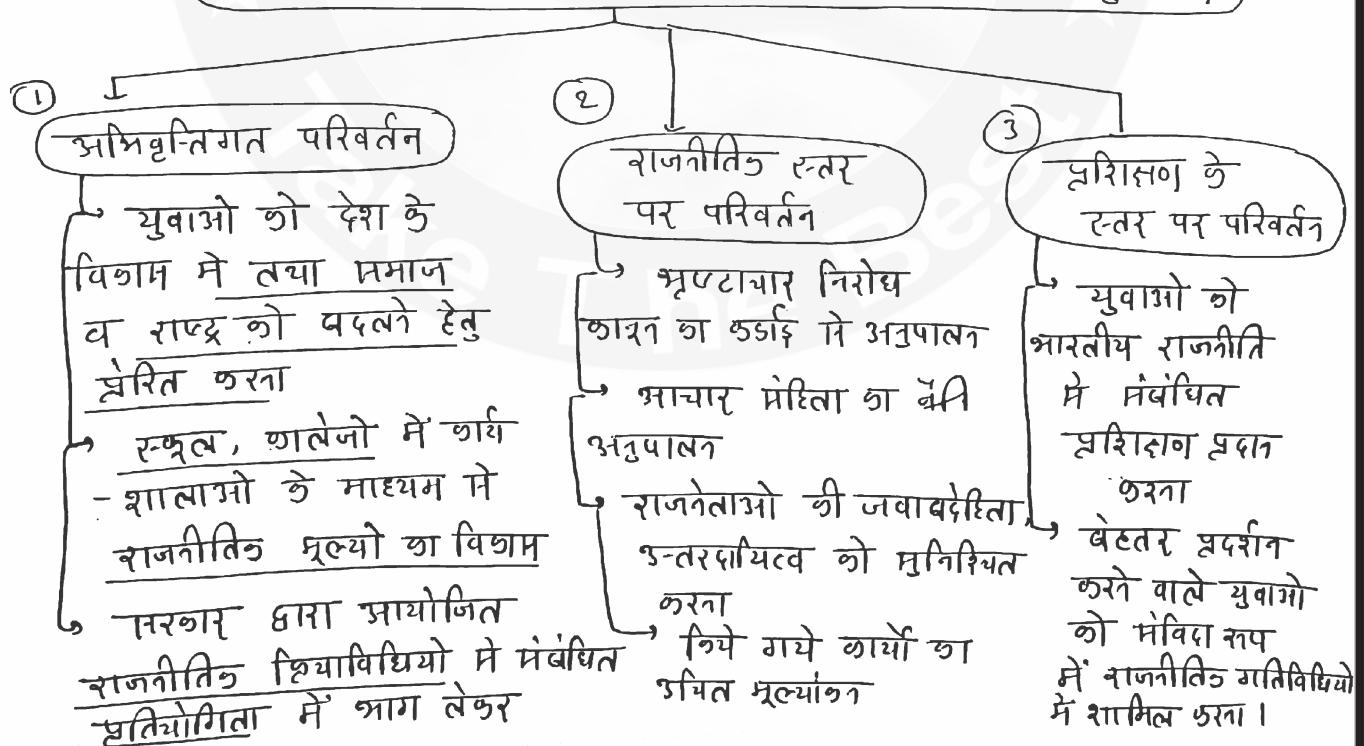
७ नेतिकृत भावरण वाले तराण लोग सक्रिय राजनीति में शामिल होने के लिए उत्सुक नहीं होते



८ “वर्तमान राजनीति अपने द्वार्थों के वरीभूत होते हुए अपने इतों का मंवर्धन करने का साधन बन गयी है। जिसमें जाति, धर्म, वंशवाद, परिवारवाद, आई-भतीजावाद आदि जो जाधिक महत्व दिया जा रहा है, परिवासता। नेतिकृत भावरण करने वाले युवा राजनीति से इरहोते गए।”



युवाओं जो प्रक्रिय राजनीति में अभिष्ठरित भरते हेतु उपाय



① १ राजनीतिक विचारको
कुशल्यों को धारणा
करना

जोटिल्य, गांधी जी, नेहरू मंडेला
जादि जा मानवा था कि
'सूखेके नागरिक जो अपने
देश के विभाग में बढ़-चढ़ाए
आगीकरी नियमाना चाहिए।'

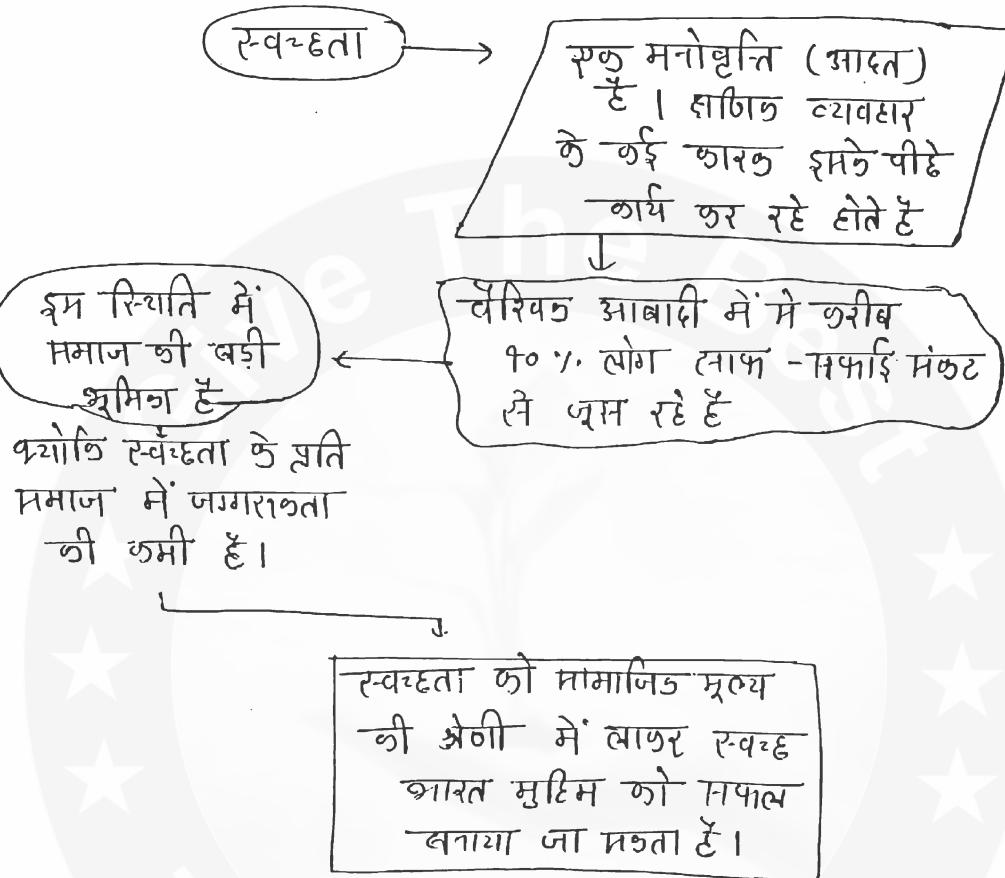
५ नेतिकृष्णो जा
विभाग

माधव रघुवंश
माधव श्री
पवित्रता जो
धारणा उत्तेहुक्ष
राजनीतिक नेतिकृता
उत्तेहुक्ष जो लक्ष्य

महात्मा (माधव,
-याय, व्याग,
धोर्ण जादि)
जो धारणा
करना

माधव लक्ष्याना
जो परम लक्ष्य

Q) सामाजिक पूर्भाव और समझाना - बुझाना एवं भारत जनियत की सफलता के लिये किस प्रभार योगदान कर सकते हैं?



अतः सामाजिक पूर्भाव और समझाना - बुझाना एवं भारत जनियत की सफलता में निम्नलिखित प्रभार में योगदान कर सकता है-

- i) समाजशास्त्री ईमाइल दुर्वीस के अनुमान -
रेसी चीजें जो समाज में स्थिरान्वयन और आदर्शी के तप में ट्यूफित हैं उनकी अवहेलता व्यक्ति वो द्वाव में डालती है, → अधी विधि ट्वरिता को लेकर लागू नी जानी चाहिए।
- ii) स-वृद्धता विरोधी राज्यों, परंपराओं को रखना वर्तम वर्तम जैसे - घर के भीतर शोगात्मक मरुभ माना।

- ① ② त्वच्छता के निर्धारित लक्ष्य को तभी पाया जा सकता है जब समाज के किसी भी लोग इस प्रवृत्ति को आत्मसत्ता ले। इसके लिये समाज को जागरूक रूप सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- ③ पंचायतों के माध्यम से समाज की में परफर्फेक्शन की निगरानी सुनिश्चित करा।
- ④ मनोवैज्ञानिक संतर पर ध्वनि द्वारा जाने के उपायों को लागू करा उदाहरणम् कि— त्वच्छ भावत अभियान के तहत नो इत या रत्न बनाए जिसमें जनता में लोकप्रिय व्यक्तित्वों को शामिल किया जाए।
- 5) अंतर्राष्ट्रीय निविल सोसायटी संघों द्वारा 'ट्रब्युल' में 'शॉच' की समस्या से निपटने हेतु 'ट्रॉयलेट संगठन' की स्थापना की गयी। ऐसी संघों के माध्यम से समाज को जागरूक करा। तथा अभिवृत्तिगत परिवर्तन लाना।
- 6) 'त्वच्छता' को 'सम्मान' के माध्यम से जोड़ना तथा वेटरन सर्विस करने वाले गांव / मोहल्ले / परिवारों को होत्याकृति करा।

पूर्धानमंत्री ने 15 अगस्त को लाल छिपे ते त्वच्छता का प्रदेश देते हुए कहा—

"जाज समाज में जन चेतना का निर्माण ही रहा है और यह रक्षा सामाजिक आंदोलन का रूप गृहण कर रही है जो विभिन्न समाज की ओर बढ़ते नदम का परिचायक है। अब जरारी यह है कि समाज के लोगों की मानसिकता में भी त्वच्छता आए।"

Q. विधि रखें जाचारनीति मानव भ्रातृत्व को नियंत्रित करने वाले द्वारा (10)
उपजनक माने जाते हैं ताकि जाचरण को सम्यक् सामाजिक उत्तराधिकार
के लिये प्रश्नापत्र बनाया जा सके।

- चर्चा की जिसके लिए इस उद्देश्य की विषय स्थिति करते हैं?
- उपजनक द्वारा हुए यह बताया जिसे दोनों भागों में विभाजन रखने से अलग है?

(9)

विधि

‘मनुष्य के जाचरण के लिये सामाजिक नियम जो राज्य द्वारा लक्षित तथा लागू किये जाते हैं तथा जिनका पालन जनिवायि है।’

उपचारिता

- राजीतिक उत्तराधिकार
- स्वतंत्रता की उपलब्धता
- लानन वाधित व्यवहार
- नोडरशाही उत्तराधिकार
- पारदर्शिता, दस्ता
- अन्या उपलब्धता
- नमाज व प्रश्नार में सहयोग

जाचारनीति

नेतृत्व शर्ते व व्यवहार जो सभ्यों का मनुष्यका करते हैं।

उपचारिता

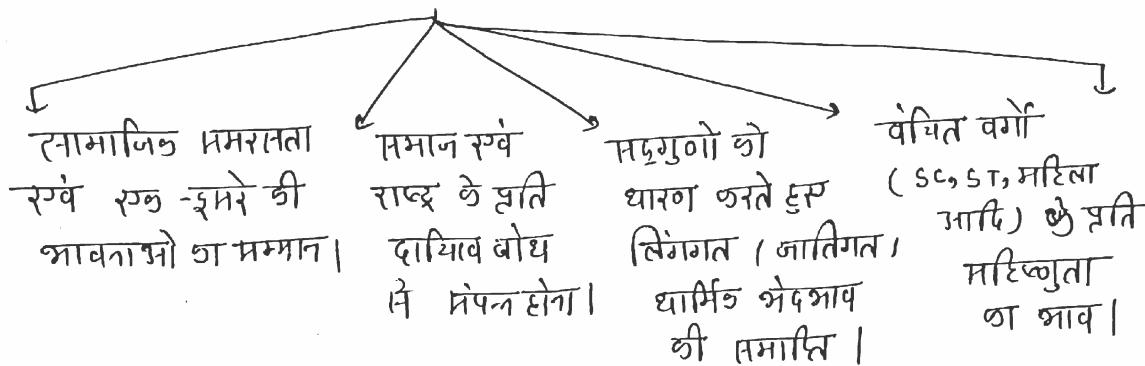
- नेतृत्व स्थिति (शुभ, उचित, वांछित, साधि) का ज्ञान
- सद्गुणों (प्राप्ति, संघर्ष, व्याय, व्यापा जादि) का विज्ञान

माध्यम रखें साध्य की परिवर्तन को धारण करना
सुन्तिम लक्ष्य मानव उत्तराधिकार

सम्यक् समाज के मीतत्व में
प्रश्नापत्र

- स्वत्येत व्यक्ति तक
दुनियादी नुविधाओं की उपलब्धता
- सामाजिक / राजीतिक / ब्राह्मण-धार्य जी स्थापना
- नेतृत्व स्थिति का विवरण

(11)



(b) विधि और आचार नीति के उपागमों में अनिता -

- | | |
|--|--|
| <p>1) विधि के अन्तर्गत कुछ निश्चित नियमों को निर्धारित कर दिया जाता है तथा उनके उल्लंघन करने पर उचित इन विधि की प्रावधान होता है।
 <u>उदाहरण</u> - भृष्टाचार विरोध निवारण
 भावन का उल्लंघन किये जाने पर आर्थिक जुर्माने के प्राय-साध जेत श्री जाता पड़ता है।</p> <p>2) विधि प्रबंधी नियमों को निर्धारित करने का कार्य राज्य या इस कार्य से सहाम संबंध छरती है। <u>उदाहरण</u> - संसद या विधानसभा का बहुमत के साधार पर विधि का निर्माण</p> <p>3) विधि के उल्लंघन किये जाने के विरोध <u>-यायालय</u> में श्री जाया जा पड़ता है।
 जैसे - पोतों का वाप का आदि के उल्लंघन पर अ-यायपालिङ् में अपील भरता।</p> | <p>1) आचार नीति के नियमों का न तो विधिवत उल्लंघन हो जाए न ही इसे राज्य या श्री जाति सहाम संबंध के बावा निर्धारित किया जाता है।
 जैसे - बड़ों का आदर, गरीबों के स्वति द्या आव जादि।</p> <p>2) यह विगत कई वर्षों से यही जा रही परम्पराओं, रीत-रिवाजों का परिणाम होती है इसके अन्तर्गत दृष्टि देने की तरीका अनिता होता है।
 <u>उदाहरण</u> - नामालिङ् बहिल्कार अर्थात् नियमों का उल्लंघन करने पर गांव या समाज में बहिल्कृत करता।</p> <p>3) आचार नीति के उल्लंघन के विरोध <u>-यायालय</u> का प्रशासन नहीं लिया जा पड़ता।</p> |
|--|--|

- (12)
- (a) लोक सेवको की अपने गांधी के प्रति पूर्वानुष्ठान दो मतवग - मतवग पृष्ठारों की अभिवृत्तियों की पहचान अधिकारीतंत्रीय अभिवृत्ति और लोकतांत्रिक अभिवृत्ति के रूप में की गई है।
- (b) इन दो पक्षों के बीच विभेदन कीजिए और उनके गुणों - उनका
- (c) अपने देश का रेजी में विभास की हड्डी में बोहतर प्रशासन के निर्गांग के लिये क्या होने में तुलन त्यापित करना - मंभव है ?
- (2015)

अधिकारीतंत्रीय अभिवृत्ति

↓
लक्षित लक्ष्य जो ध्यान
में रखकर नीतियों, योजनाओं
को लागू करना। जिसमें शामिल
मानवियों में लक्षीलापन नहीं होता
क्षणी - क्षणी लालफीताशाई, स्पेक्टरराज
रखने वालों द्वारा के चलते यह लोकतंत्र
की भावना को हानि पहुंचा सकता है।

लोकतांत्रिक अभिवृत्ति

कुनूर रेजी में अभिवृत्ति जो
सभी के माय मान
ट्यूप्टर करे, जिसमें
निर्णय निर्माण की
प्रक्रिया में जाता की
समुचित आगीकरी हो।

गुण

- सभी लोकों द्वारा नीतियों
का दृष्टा में पालन
आपवाहिक
- को-दीकृत अत्यधिक
- आनुशासनात्मक विनियामितीय
- पदलोपानिक मंत्रना
- तटस्थता व अनाभत्ता

उत्तरगुण

- क्रेब्ल अत्यर्थ पर
- केन्द्रित संसाधनीयतारी
- विशेषीकरण का अभाव
- मरणार रखने जाता के
- बीच प्रश्नोग छी जमी
- वह प्रतिमान
- अधिक मशीनीजूत चरित्र

गुण

- नेटवर्क माधारित
मंत्रना
- कार्यों व विक्षेपों
की दिशा सखाहृष्ट
- प्रचना छारा
- राजनीति से इत्री
प्रतिबहुता व
पारदर्शिता
- मूल्यांकन
तिष्पादन उभयरूप

(13)

जनवर्ग
भूम्बलाचार

लोकतांत्रिक जनरिवर्ति

जनवर्ग

जनता रखने पूर्णामत के
बीच अद्योग न स्वापित
हो पाता निम्नमें ज्ञान
चुनौतियों विद्यमान हैं

i) मुशामत की साक्षि
में लाधा

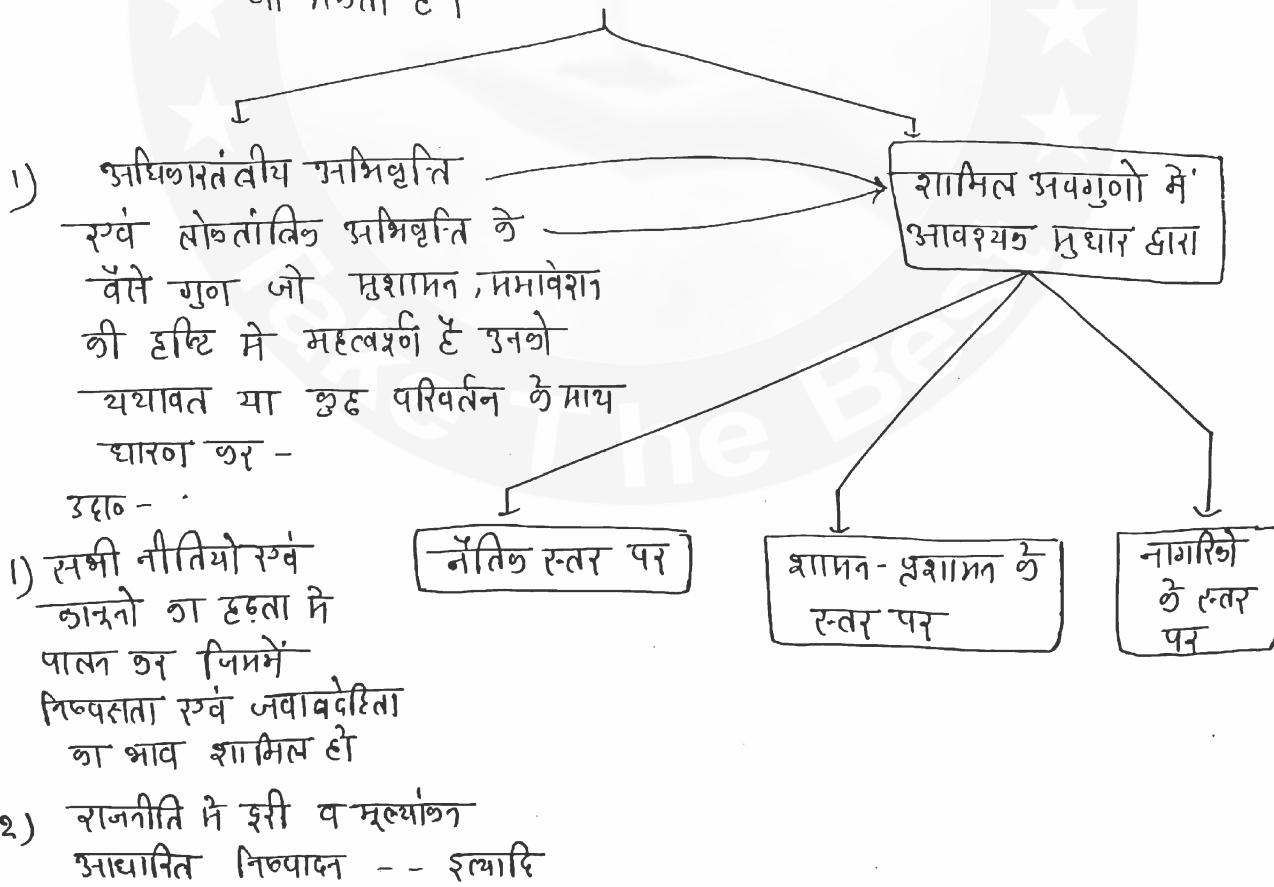
ii) स्वत्येक व्यक्ति तक
बुनियादी प्रविधानों की
अनुपसंधता

iii) विभेदशीलता
जा भाव

(iv) भूम्बलाचार
जाई - जनीनावाद

(v) जनविदेशिता
में लभी

b) हो तर्भव है, जिसे निम्नलिखित ब्लार में स्वापित किया
जा गया है।



नेतिकृतर पर

- नेतिकृत्यय (शुग, वांडीम उचित भादि) को धारण उठा
- सद्गुणों (माद्दम, -याय, त्याग का विषय मंथम, घेंय आदि)
- नाथा रखे दाद्य जी पवित्रता
- नेतिकृत्यभागार मंहिता का अनुपालन
- मण्डलमें अभिवृति में परिवार, स्थल इवं नमाज जी अभिना

शासन-प्रशासन के न्तर पर

→ निवेदानिक माद्दशों
(समानता, व्यतीकरण, -याय)
का अनुपालन

→ द्वितीय प्रशासनिक पुष्टार
भायोग इसा पुष्टामी गयी
लोड भागार मंहिता जा
अनुपालन

→ निविल देवा बुग्यादि
मूर्खों (सत्यनिष्ठा,
पारदर्शिता, जवाबदेहिता आदि)
का विषय
→ गांधी जी के प्रातः-प्रामाणिक
वाप जा मिछांत तथा रुणाद्दा
वृत जा अनुपालन

→ प्रशिक्षण रखे जायशालाओं
के माध्यम दे अभिवृति
परिवर्तन

नागरिकों के न्तर पर

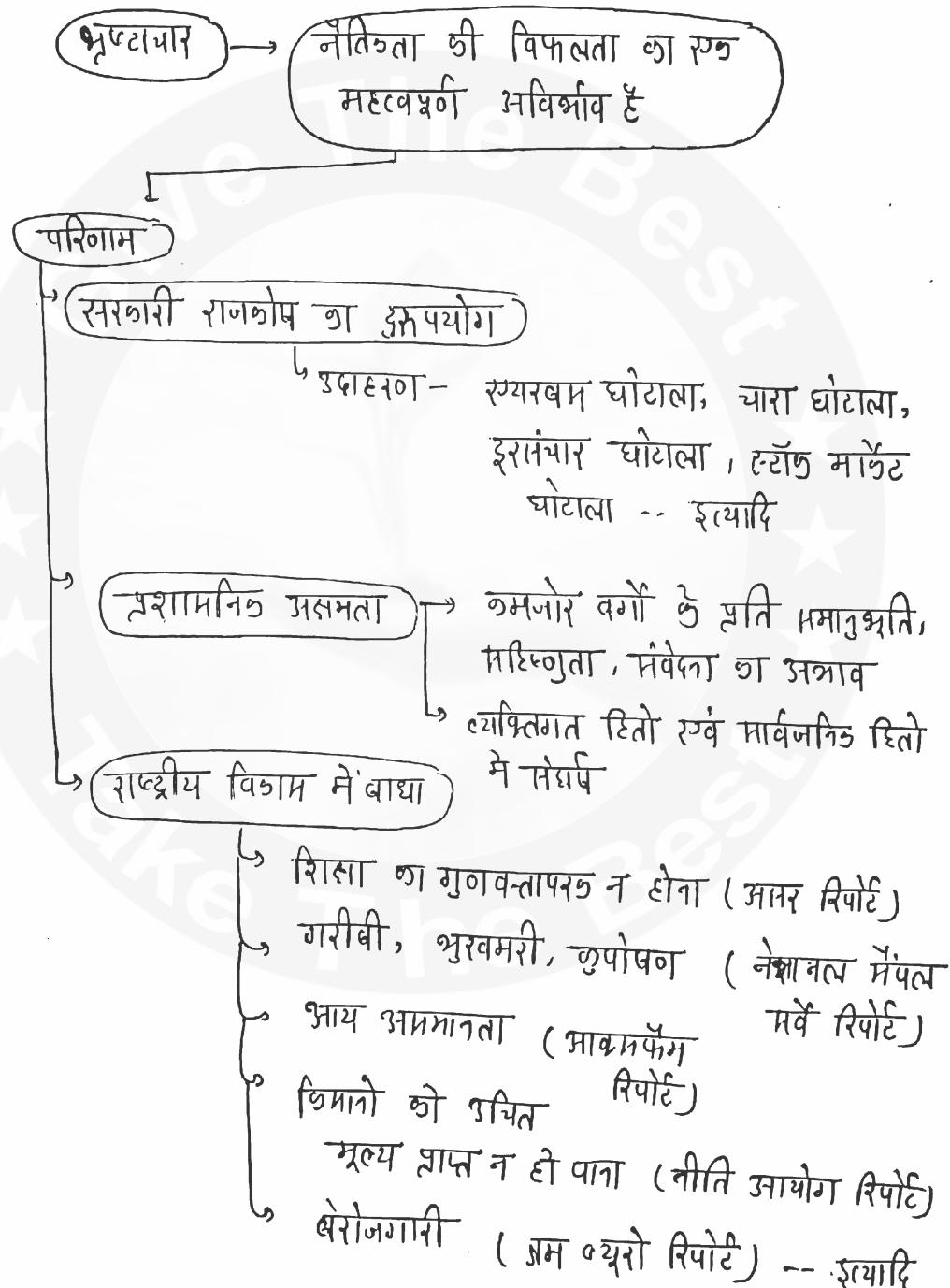
→ नागरिकों में
अधिकार रखे दायित्व
का धोध
→ राज्य विषय
के तृतीय
जागरूकता

→ प्रशासन में
आगीदमी देनु
नीतियों रखे
प्रोजेक्टों के
हिचाब्यन्द्र में
आग लेना

→ प्रशासनिक
कमियों छो
उजागर करना

(14)

Q. a) “भूष्टाचार मरणी राजकोष वा दुरुपयोग, प्रशासनिक अवस्था रखने वाली विभाग के मार्ग में बाधा उत्पन्न होता है।” जॉटिल्य के विचारों की विवेचना कीजिए। (2016) (15)



(16)

राजमाधान रणनीति

① द्वितीय स्प्रेशान्तरिक्ष
मुद्घार आयोग सामा
सुझारां गाये रियमो
जो अनुपालन

→ विकेन्द्रीकरण को बढ़ावा
राजनीतिक गिर्जा, महासता,
जनरित जो उच्चान सोचने वाले
पुराख व महिलाओं जो धूतादित
हरा।

→ भूष्टाचार के विरोध कड़ी
निवारण सजा।
भूष्ट लोक देवतों की
बेनामी (गौर- छान्ती संपत्तियों
को जहत हरा।
→ घोटाले सौर भूष्टाचार की
दृश्या देने वाले को वृत्तिशोध
में बचाए जा सकता।

③ विधि के दृष्टर पर मुद्घार

भूष्टाचार निवारण जाधिकारम्
(1988) में 'भूष्टाचार' को
परिभ्रान्ति हरा।

क्षमिं वैरिविष्ट दृष्टर पर
किये गये दृष्टान्तों को लागू
हरा।

ADB - OECD की इंटराक्ट्रीय
भूष्टाचार निरोध छार्यवादी प्रोजेक्ट
विश्व बैंक दृष्टे IMF द्वारा
तेगार की गायी भूष्टाचार
निवारण रापरेक्षा
में युक्त राष्ट्र सामा भूष्टाचार
के विरोध मानिसगत

④

उच्चतम् - यायत्य द्वारा दिये
गये निर्णयों का अनुपालन

→ दृष्टना जा भाधिकार
उच्चिनियम् जो प्रकल्प शियावय
→ दृ-गवर्भ को बढ़ावा
→ लोकपाल की कार्यविधियों
को अनिवार्यत हरा
→ मती लॉकरिंग एक्ट जा
प्रकल्प शियावय

(11) **Q.** जान इस देखते हैं कि भारत संविताओं के निर्धारण मरक्कता सेलो / भायोगों की व्यापना, आर.टी.आई.सी.सी.सी.मीडिया और विषय चांचित्वों के प्रबलन जैसे विभिन्न उपायों के बावजूद शृंखलाएँ अधीन नहीं आ रहे हैं।

- इन उपायों की प्रभावशीलता का आंचित्य बताते हुए मूल्यांकन कीजिए।
- इस रवतरे का मुख्यालय उत्तरे के लिए और ग्रामीण राजनीतियाँ सुझाएँ? (As per previous question) (2015)

